20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इलाहाबाद का साहित्यिक योगदान

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
की डी फिल उपाधि के लिए
प्रस्तुत शोध प्रबध
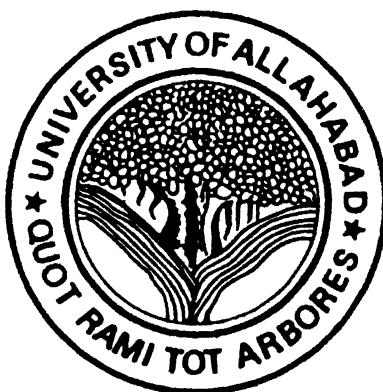
शोधार्थी
देवेन्द्र कुमार शर्मा

शोध निर्देशक
प्रोफेसर सी० पी० झा

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

विषय-सूची

20वी शताब्दी का पूर्वार्द्ध सम्पूर्ण भारतीय इतिहास मे महत्त्वपूर्ण है। इस समय भारत के राजनीतिक रगमच पर विप्लवकारी परिवर्तन हुए और अग्रेजी राज्य के सुखो के पर्दे के पीछे शासको की दमन नीति का नग्न नृत्य स्पष्ट हुआ। 20वी शताब्दी के प्रारम्भ से ही शासन ने शोषण, दमन और आतक की जिस नीति का अनुसरण किया उसका स्पष्ट उल्लेख युगीन साहित्य मे मिलता है।

इस समय इलाहाबाद न केवल राजनीतिक आन्दोलनो का केन्द्र था बल्कि यहा एक प्रकार का साहित्यिक आन्दोलन उठ खडा हुआ और इलाहाबाद को देश की साहित्यिक राजधानी माना जाने लगा। इस समय इलाहाबाद गगा, जमुना, एव सरस्वती की त्रिवेणी ही नही रहा बल्कि गद्य पद्य एव पत्रकारिता की त्रिवेणी, निराला पत एव महादेवी की त्रिवेणी, प बालकृष्ण भटट् प मदन मोहन मालवीय और पुरूषोत्तम दास टण्डन की त्रिवेणी भी इस समय प्रयाग मे प्रवाहित हुई।

राजनीतिक गतिविधयो के विस्तार हो जाने से साहित्य के वर्ण्य विषय का भी एक निश्चित सीमा तक विस्तार हुआ। 19वी शताब्दी मे वर्णित समस्त विषयो के साथ ही स्वतत्रता आन्दोलन की गतिविधिया भी साहित्य मे जुड गई। काग्रेस और क्रातिकारी, स्वतत्रता प्राप्त करने के लिए उनके प्रयास, आजाद हिन्द फौज, गाधी का असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, और इनकी प्रतिक्रिया स्वरूप नौकरशाही की दमन नीति आदि विषयो का साहित्य मे समावेश हुआ।

इस समय इलाहाबाद मे सरस्वती, चॉद, और मर्यादा जैसी अनेक साहित्यिक पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हुआ तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, साहित्यकार ससद, जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक सस्थाओ की स्थापना हुई जिन्होने न केवल भारतीय साहित्य मे बल्कि विश्व साहित्य के निर्माण मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निसदेह इतने दुरूह एव विस्तृत विषय पर शोध कार्य करना मेरे लिए कठिन ही नही असम्भव भी था किन्तु गुरु कृपा से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते है। अत इस कार्य मे मेरे पूजनीय गुरु प्रोफेसर चन्द्र प्रकाश झा तथा पूजनीय गुरु माता श्रीमती सविता झा ने जो भूमिका निभाई उसके लिए धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नही है और न ही मै उन्हे धन्यवाद ज्ञापित कर उनकी महत्ता कम करना चाहूगा।

प्रोफेसर (श्रीमती) रेखा जोशी विभागाध्यक्ष तथा इतिहास विभाग के अन्य गुरुजनो का ह्रदय से आभारी हू जिनका मार्गदर्शन समय–समय पर प्राप्त हुआ।

हिन्दी, अग्रेजी, भोजपुरी के यशस्वी कवि एव साहित्यकार प्रोफेसर सुरेश चन्द्र द्विवेदी, "अग्रेजी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय", प्रोफेसर अजब सिह "विभागाध यक्ष हिन्दी विभाग अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ", प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिह, श्री रमेश जैमिनी, का मै ह्रदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हू जिन्होने शोध सामग्री एकत्र करने मे उल्लेखनीय मदद की और साक्षात्कार के लिए अपना अमूल्य समय दिया।

इलाहाबाद के अन्य साहित्यकारो का भी ह्रदय से आभारी हू जिन्होने साक्षात्कार प्रदान कर मुझे अनुगृहीत किया।

डॉ यू एस तिवारी "निदेशक इलाहाबाद सग्रहालय इलाहाबाद" को मे ह्रदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हू जिन्होने सुमित्रा नदन पत तथा अन्य साहित्यकारो के अभिलेख दिखाए और उपयोगी सुझाव दिए। डॉ सुकुमार सरकार "महानिदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार", डॉ श्यामलेन्दु सेनगुप्ता "विशेषकार्य अधिकारी राष्ट्रीय अभिलेखागार", श्री श्याम कृष्ण पाण्डेय "साहित्य मत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद", श्री हरि मोहन मालवीय "अध्यक्ष हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद" को मै ह्रदय से धन्यवाद देता हू जिन्होने शोध विषय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण ग्रथ एव दस्तावेज उपलब्ध कराए।

श्री डी आर खत्री, श्री आर एस शर्मा का मै ह्रदय से आभार व्यक्त करता हू जिनके प्रोत्साहन एव प्रेरणा ने कार्य को सुगम बना दिया।

छोटी बहन मन्जीत टोकस, मित्र आलोक प्रसाद, कमलेश प्रसाद पटेल, डॉ अल्का सिह, अजय कुमार पाण्डेय और जितेन्द्र सिह को ह्रदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हू जिन्होने सामग्री एकत्र करने मे उल्लेखनीय मदद की।

अत मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, उ प्र राज्य अभिलेखागार लखनऊ, क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पुस्तकालय नई दिल्ली, सेन्ट्रल सेकेट्रियट पुस्तकालय, आई सी एच आर पुस्तकालय नई दिल्ली के उन समस्त पदाधिकारियो को धन्यवाद ज्ञापित करता हू जिन्होने सामग्री को एकत्र करने मे सहयोग किया।

स्थान

दिनाक

देवेन्द्र कुमार शर्मा

१. भूमिका

20वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे जो साहित्यिक क्राति हुई उसके लिए देश, काल एव परिस्थितिया बनना लगभग 50 वर्ष पूर्व अर्थात 19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे प्रारम्भ हो चुका था। 1857 का वर्ष भारतीय इतिहास के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। राजनीतिक उथल–पुथल साहित्य समाज एव सस्कृति को प्रभावित करती ह।

सन् 1857 की सशस्त्र क्राति मे भारत पराभूत हुआ। अतरात्मा मे आदर्श की पवित्रता भी सस्थित हो तो उच्चादर्श की प्राप्ति के लिए शस्त्र की अवतारणा होती है। पवित्र उद्देश्य शस्त्र से नही शास्त्र से पूरा होता है। सन् 1857 के पराभव के बाद लोकमानस स्तब्धता और ग्लानि से भर उठा पर तत्काल ही निराशा ने आशा को जन्म दिया। विप्लव के बाद का समय आशा की चेतना से दीप्त था और आस्था की भाषा से मुखर। यह युग वैज्ञानिक दृष्टि से भले ही समुन्नत न रहा हो लेकिन पुनरूत्थान के लिए प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र का व्यक्ति चाहे वह प्रगतिशील हो रूढिवादी अथवा समयोपयोगितावादी हो अपने ढग से लगा था। सबका ध्येय जनकल्याण और लोक मगल का अधिष्ठान तथा दैहिक, दैविक और भौतिक बधन से मुक्ति का था। गजब का समा सभी क्षेत्रो मे था। जनता की भाषा के शिल्पी भी रचना के क्षेत्र मे उतने ही आगे थे जितना किसी देश के साहित्यकारो को होना चाहिए।

समय बदलता है, अग्रेजी शिक्षा नये विचारो को उपस्थित करती है, नये भावो को जगाती है। देश मे एक नई जाग्रति होती है। पुरानी कृतियो की याद, जापान के आश्चर्य जनक विजयो की कथा, यूरोप के आतरिक कलह, हिन्दुस्तान के क्षितिज पर आशाओ के असीम दृश्यो की झलक से हमारे ह्रदयो को उमगो से परिपूर्ण कर देते हे। जाति की प्रतिष्ठा के, उसके अधिकारो के और उसके व्यक्तिव को स्थिर करने के विचार लोगो के मस्तिक मे घूमते है और स्वभावत लोगो के दिल भाषा और साहित्य की उन्नति की ओर आकर्षित होते है।

19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे साहित्यकार साहित्य सृजन की ओर अग्रसर हुए। विद्वानो ने हिन्दी साहित्य के लिए इसे पुनर्जागरण काल, भारतेन्तु काल आदि नामो से अभिहित किया। इस युग मे साहित्य मनुष्य के व्रहत्तर सुख दुख के साथ पहली बार जुडा क्योकि इस युग मे जो साहित्यकार हुए वे देश की दशा और समाज की स्थिति से पूर्णत परिचित थे। यह प्रक्रिया गद्य के माध्यम से शुरू हुई। आधुनिक जीवन चेतना की **चिन्गारियॉ** जैसी गद्य मे दिखाई पडी वैसी पद्य मे नही।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', अम्बिका दत्त व्यास, राधा कृष्ण दास, जगन्मोहन सिह, श्रीधर पाठक, बालमुकुन्द गुप्त, आदि कवि एव साहित्यकार उभरकर सामने आए। जिन्होने गद्य एव पद्य दोनो मे अपनी लेखनी चलाई। युगीन कवियो का काव्य फलक अत्यन्त विस्त्रत है। एक ओर तो वह रीतिकालीन एव भक्तिकालीन भावना से प्रेरित है तो दूसरी ओर उनमे समकालीन चेतना कूट–कूट कर भरी हुई है। राष्ट्रीयता और सामाजिक चेतना कवियो के प्रमुख **विषय** रहे है। अग्रेजो की शोषण नीति का प्रत्यक्ष उल्लेख इस भावना की चरम परिणिति है –

''भीतर-भीतर सब रस चूसै, हसि हसि के तन मन धन मूसै।

जाहर वातन मे अति तेज, क्यो सखि सज्जन नहीं अग्रेज ।।''

पत्र–पत्रिकाओ के उत्थान की दृष्टि से भी इस युग का अत्यधिक महत्त्व है। देश के कोने–कोने से साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हुआ। कवि वचन सुधा, जगत समाचार, साप्ताहिक आगरा, साप्ताहिक बनारस, हरिश्चन्द मैग्जीन, बाल वोधिनी, मासिक इलाहाबाद, साप्ताहिक कलकत्ता, विद्याविनोद आदि अनेक पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

साहित्य के सबर्धन और प्रवर्धन के लिए अनेक छोटी मोटी स्थानीय सस्थाए गठित हुई और काल के प्रवाह मे विलीन हो गई। इस क्षेत्र मे सबसे बडा प्रयत्न सन् 1894 मे हुआ और वह प्रयत्न काशी मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना का था।

देश के धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन मे जो महत्त्व आर्य समाज का है, राजनीतिक क्षेत्र मे जो महत्त्व काग्रेस का है वह महत्त्व हिन्दी जगत मे नागरी प्रचारिणी सभा का है।

सभी क्षेत्रो मे 19वी शताब्दी मे प्रगति की बात अगीकार कर ली गई थी। साहित्य चेतना का जो युग आरम्भ हुआ था उसे 20वी शताब्दी मे और प्रखर बनाया जाए इस बात के प्रयत्न आरम्भ हो गये। इस समय देश के साहित्यिक क्षितिज पर नाथूराम शर्मा 'शकर', श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध, राय देवी प्रसाद पूर्ण, राम चरित उपाध्याय, गया प्रसार शुक्ल 'सनेही', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, बालमुकुन्द गुप्त, अमीर अली मीर, कामता प्रसाद गुरु, गिरिधर शर्मा, गोपाल शरण सिह, मुकुटधर पाण्डेय जैसे कवियो का आविर्भाव हुआ।

यहा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि देश के इस साहित्यिक आन्दोलन का प्रतिनिधित्व किया उत्तर प्रदेश ने, और साहित्यकारो की गतिविधियो का केन्द्र बना इलाहाबाद। केन्द्र बनने का श्री गणेश हुआ प बाल कृष्ण भट्ट के हिन्दी प्रदीप से। 1877 मे उन्होने हिन्दी प्रदीप निकाला। उस समय भारतेन्दु एव उनके कुछ सहयोगी ही पत्र के लेखक थे किन्तु साहित्य सृजन की प्रक्रिया तो आरम्भ हो ही चुकी थी।

1900 ई मे सरस्वती का प्रकाशन आरम्भ हुआ। शीघ्र ही स्त्री दर्पणी (1903) मर्यादा, सम्मेलन पत्रिका, चॉद, आदि पत्रिकाओ का प्रकाशन होने लगा। इन पत्रिकाओ ने ऐसे वातावरण का सृजन किया जिसके चलते यहा कई साहित्यिक सस्थाए स्थापित हुई जिन्होने साहित्य के उन्नयन के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, भारतीय हिन्दी परिषद्, सुकवि समाज, आनन्द मण्डल, रसिक मण्डल, साहित्यकार ससद आदि।

इस साहित्यिक वातावरण ने अनेक साहित्यकारो को प्रयाग की ओर आकर्षित किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सुमित्रा नदन पत की रचनाओ को सरस्वती मे खूब छापा परिणाम यह हुआ कि वह आए तो थे म्योर कालेज मे पढने के लिए

प्रयाग के वासी हो गये। सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' महिषादल की नौकरी छोडकर प्रयाग आ गये और इसे अपनी कार्यस्थली बनाया। महादेवी जी की तो जन्म स्थली एव कर्म स्थली दोनो प्रयाग ही रही।

डॉ रामकुमार वर्मा अध्ययन के लिए प्रयाग आए और फिर यही के हो गये। हरिवश राय बच्चन का जन्म भी इलाहाबाद मे ही हुआ और कार्य क्षेत्र भी इलाहाबाद को बनाया।

साहित्य मे प्रगतिवादी आन्दोलन को प्रयाग ने देखा और जिसके विरोध मे परिमल जैसी साहित्यिक सस्थाओ का उदय हुआ। इसके माध्यम से विशन नारायण कपूर, गिरिधर गोपाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, केशव चन्द्र वर्मा, लक्ष्मीकात वर्मा, धर्मवीर भारती, रघुवश, जगदीश गुप्त आदि दो पीडियो के रचनाकार सामने आए।

1900 से 1950 की इस आधी शताब्दी मे इलाहाबाद ने सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। इस समय यहा जो साहित्य रचा गया उसे विश्व के किसी भी समय के श्रेष्ठ साहित्य के समकक्ष रखा जा सकता है।

अध्याय -1

निराला, पंत एवं महादेवी

अध्याय-1

निराला, पंत एवं महादेवी

20वी शताब्दी का पूर्वार्द्ध भारतीय इतिहास मे आधुनिक युग का द्योतक है और साहित्यिक दृष्टि से इस कालखण्ड को जागरण सुधार काल, छायावाद काल, प्रगतिकाल और प्रयोग काल के नाम से अभिहित किया जाता है। इस समय भारतीय राजनीति मे जिस प्रकार गाधी, नेहरू और सुभाष छाए रहे उसी प्रकार साहित्य के क्षितिज पर सूर्यकात त्रिपाठी निराला सुमित्रानदन पत और महादवी वर्मा चमके। उक्त त्रिमूर्ति ने भारद्वाज ऋषि की तपोभूमि प्रयाग मे साहित्य साधना की।

सूर्यकात त्रिपाठी निराला

हिन्दी के साहित्यकारो और कवियो मे निराला का श्रेष्ठतम स्थान है। उनके व्यक्ति मे पौरूष का हुकार था वाणी का ओज था जीवन की मस्ती थी विचारो की अक्खडता थी और सबसे बढकर उनका स्वाभिमान था। वे यथा नाम तथा गुण की उक्ति को चरितार्थ करने वाले पुरुष थे।[1] बहुत कम कवि और लेखक ऐसे होते है जिनकी कृतियो को पढकर उनका जो रूप सामने आता है वैसा ही या उससे भव्य सवल उनका वास्तविक जीवन हो। निराला जी इसी प्रकार के व्यक्ति थे। उनके हृदय व्यक्तित्व और कृतियो मे सदा ही जो रूप दिखलाई पडते थे और वे थे उनकी भव्यता, विशालता, ओज और स्वाभिमान। प्रयाग मे रहते हुए निराला जी अपने साहित्य मे स्वय तीर्थराज थे, क्योकि कविता की गगा, कथा साहित्य की जमुना और निबध की सरस्वती, तीनो का सगम उनकी कृतियो को त्रिवेणी का महत्त्व प्रदान करने वाला है।[2]

निराला का जीवन अनेक अभावो एव विपत्तियो से पीडित रहा, किन्तु इन्होने किसी विपत्ति के सामने झुकना नही सीखा। अभावो की तीव्र एव मर्मान्तक व्यथा को झेलते हुए भी साहित्य साधना मे तल्लीन रहे।[3]

निराला का जन्म राम सहाय तिवारी के घर 21 फरवरी 1899 को हुआ।[4] राम सहाय वैसवाडा क्षेत्र के गढकौला ग्राम के निवासी थे किन्तु इस समय वह महिषादल* मे आकर बस गये थे।[5] निराला का बचपन का नाम सुर्ज कुमार था किन्तु आगे चलकर 1920 मे जब उनका कवि जीवन आरम्भ हुआ उन्होने अपना नाम सूर्यकात त्रिपाठी रख लिया।[6] निराला का जीवन कष्टो एव अभावो मे बीता बचपन मे मॉ का देहान्त और जब 1919 मे देश मे अकाल पडा इसमे उनके अनेक स्वजनो का देहावसान हो गया। पिता, पत्नी, चाचा सभी उनको छोडकर चले गये किन्तु निराला का दार्शनिक हृदय इसे बर्दास्त कर गया।[7]

सन् 1920 मे वह महिषादल से घर चले आए किन्तु बगाल छोडकर हिन्दी प्रान्त मे आने पर उनका स्वागत नही हुआ बल्कि उन्हे यहा भी दुर्निवार सघर्ष से भिडना पडा।[8]

निराला की पहली कविता 1916 मे रची गई थी।[9] 1916 से 1920 का समय निराला के लिए काव्य मे भी सघर्ष का समय था। इस समय प्राय उनकी रचनाए पत्रिकाओ से वापस लौट आती थी। उनकी रगभूमि कविता कानपुर से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'प्रभा' मे छपी।[10] उनकी प्रथम और चर्चित कविता 'जुही की कली' आदर्श मासिक मे छपी।[11]

निराला की काव्य प्रतिभा को सबसे पहले कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले मतवाला के सम्पादक बाबू महादेव प्रसाद जी सेठ ने पहचाना। उन्होने निराला की न केवल रचनाओ को प्रकाशित किया बल्कि उन्हे मतवाला के सम्पादक मण्डल मे रखा।

---

* बगाल के मिदनापुर जिले मे महिषादल नाम का देशी राज्य था। यहा राजा रामनाथ राज्य करते थे। जब इनका देहान्त हुआ तब इनकी रानी सती हो गई। रानी ने सती होने से पूर्व लक्ष्मण प्रसाद नामक एक ब्राह्मण को सिहासन सौंप दिया। इस समय लक्ष्मण प्रसाद के पुत्र ईश्वर प्रसाद यहा शासन कर रहे थे।

निराला ने स्वय इस तथ्य को स्वीकार किया और अपनी कालजयी कृति अनामिका उन्हे समर्पित की। उन्होने लिखा है, "वे मेरी रचनाओ के पहले प्रशसक है तब मेरी कृतिया पत्र–पत्रिकाओ से प्राय वापस लौट आती थी।[12]

1923 से निराला की रचनाए कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले मतवाला, समन्वय, आदर्श, लखनऊ से प्रकाशित होने वाली माधुरी पत्रिका मे नियमित रूप से प्रकाशित होने लगी। माधुरी मे सबसे पहले उनकी कविता "अधिवास" प्रकाशित हुई।[13] अगस्त 1923 के मतवाला अक जिसमे निराला की रक्षाबधन कविता प्रकाशित हुई, इसके बाद तो निराला और 'मतवाला' एक दूसरे के पूरक बन गये। निराला उपनाम भी मतवाला के अनुप्रास पर आया। निराला स्वय इस तथ्य को स्वीकार करते है।[14]

काव्य

अनामिका प्रथम (1923) – अनामिका को नवजादिक लाल श्रीवास्तव ने 23 शकरघोष लेन कलकत्ता से प्रकाशित किया था। कृति पर प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नही है किन्तु इसमे प चन्द्रशेखर शास्त्री की जो सम्मति दी गई है उसके नीचे 23 जुलाई 1923 की तिथि दी हुई है जिससे यह स्पष्ट है यह जुलाई अगस्त 1923 मे छपी होगी।[15]

इस कृति मे निराला की नौ रचनाए सकलित है। अध्यात्म पुरुष, जुही की कली, माया, तुम और मै, पचवटी प्रसग, सच्चिता, जलद के प्रति श्रेष्ठ कविताए है। यह कविताए अनामिका मे सकलित होने से पूर्व आदर्श, समन्वय आदि पत्रो मे प्रकाशित हो चुकी थी। जुही की कली आदर्श के नवम्बर, दिसम्बर 1922 के अक मे प्रकाशित हो चुकी थी।[16] 'तुम और मै' शीर्षक कविता भी 'माधुरी पत्रिका' मे प्रकाशित हो चुकी थी।[17]

अनामिका पूरी तरह स्वच्छन्दता वादी रचना है। इसी मे तो पचवटी प्रसग है। कोमलागी सर्वांग सुन्दरी सीता और वीर पुरुष राम का सग, सीता और लक्ष्मण

अनामिका पूरी तरह स्वच्छन्दता वादी रचना है। इसी मे तो पचवटी प्रसग है। कोमलागी सर्वाग सुन्दरी सीता और वीर पुरुष राम का सग, सीता और लक्ष्मण की विनोद वार्ता, शूर्पणखा का प्रवेश एक रोमाटिक परिदृश्य लक्ष्मण का भावात्मक आदर्श, राम का दार्शनिक दृष्टिकोण ये सब मिलाकर गीतिनाट्य की परिपूर्णता के तत्त्व हैं। कहीं भी स्वच्छन्दतावाद मे विक्षेप नही आया। हिन्दी साहित्य मे स्वच्छन्दतावाद की प्रतिनिधि रचना अनामिका को माना जा सकता है।[18]

परिमल (1929-30) – निराला की यह कृति गगा पुस्तक माला लखनऊ से प्रकाशित हुई। इसके प्रथम सस्करण मे प्रकाशन वर्ष सवत 1986 विक्रम दिया हुआ है।[19] अक्टूबर 1929 की सुधा मे भी इसका प्रकाशन काल सितम्बर 1929 बतलाया गया है।

परिमल मे निराला ने अपनी प्रथम कृति अनामिका की नौ रचनाओ मे से सात को इसमे सम्मिलित कर लिया। 'अध्यात्म पुरुष', जुही की कली, माया, तुम और मै, आदि शीर्षक कविताए इसमे सम्मिलित की गई।[20] अन्य कविताओ मे 'नमन' जो कि सकलित होने से पूर्व मतवाला मे प्रकाशित हो चुकी थी–

मदभरे ये नलिन-नयन मलीन है ,

अल्प जल मे या विकल लघु मीन है ?

या प्रतीक्षा मे किसी की शर्वरी ,

बीत जाने पर हुए ये दीन है ?[21]

नमन 'उसकी स्मृति मे', पहिचाना उस पर, 'भिक्षुक' सध्या सुन्दरी, शखपूर्णिमा की विदाई, अजलि, आवाहन् आदि कविताए, उल्लेखनीय है।

वास्तव मे परिमल निराला की नई काव्य भूमि का प्रतिनिधित्व करता है। अनामिका की प्रशात और प्रसन्न भाव धारा मे 'परिमल' ने ओज प्रवेग और प्रखरता का समायोजन कर दिया है। इस दृष्टि से परिमल मे नूतन दिशा सकेत है। जागो फिर एक बार, 'महाराज शिवाजी का पत्र' बादल राग, ये एक नयी दिशा तथा मोड़

दी है। छायावाद और स्वच्छन्दतावाद की नई भूमियो पर परिमल का काव्य अपनी समृद्धि की अभिव्यक्ति कर रहा है। इन समस्त रचनाओ मे प्रयत्न का प्रयास कही दिखाई नही देता। इनमे निराला का यौवन और यौवन की आस्थाओ का परिवेश प्रतिबिम्बित है।[22]

गीतिका (1936) – निराला की यह रचना सवत् 1993 वि अर्थात 1936 मे भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुई।[23] निराला ने अपनी इरा कृति को अपनी पत्नी मनोहरा देवी को समर्पित किया है।[24]

गीतिका के गीतो की तीन आधार भूमिया है स्वछन्द भावभूमि, ऋतुचित्र और नारी सौन्दर्य। सौन्दर्य की अनाविल भूमि पर श्रृगार की प्रतिष्ठा इस कृति की विशेषता है। प रामचन्द्र शुक्ल इसके गीतो मे वास्तविक स्वच्छन्दतावाद देखते है।[24] गीतिका मे सघर्षमय अनुभूतिया भी यत्र–तत्र दिखाई देती है –

मै बहुत दूर का थका हुआ

चल दु ख कर श्रम पथ, रूका हुआ

आश्रय दो आश्रम वासिनी,

मेरी हो तुम्ही सहारा

वह खुला न द्वार दिवस बीता,

हो गई निरर्थ सकल गीता।[26]

अनामिका द्वितीय (1937) – निराला की यह कालजयी कृति भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इस अनामिका का प्रथम अनामिका से कोई सम्बन्ध नही है। निराला ने बाबू महादेव प्रसाद को समर्पित करने के उद्देश्य से इसका नाम अनामिका रखा। उन्होने लिखा है "अनामिका नाम की पुस्तिका मेरी रचनाओ का पहला सग्रह है। आदरणीय मित्र स्व बाबू महादेव प्रसाद जी सेठ ने प्रकाशित की थी

अस्तु उस अनामिका की कृतिया परिमल नाम के सग्रह मे आ गई थी, अधूरी

निकाल दी गई थी, इस अनामिका मे उसका कोई चिन्ह अवशिष्ट नही। यह नामकरण मैने इसलिए किया कि उन्ही की स्मृति मे समर्पित करू।"[27]

निराला की इस कृति मे एक से बढकर एक रचनाए सकलित है– प्रेयसी, मित्र के प्रति, दान, प्रलाप, खडहर के प्रति, प्रेम के प्रति, वीणा वादिनी, प्रगल्भ प्रेम प्रिया से, सच है, चुम्बन, अनुताप, तट पर, ज्येष्ठ, रेखा, विनय, उत्साह, वनवेला, नाचे उस पार श्यामा, सरोज स्मृति, मरण दृश्य, खुला आसमान, अपराजिता, राम की शक्ति पूजा, नर्गिश आदि श्रेष्ठ कविताए इसमे सकलित है।

इस कृति मे निराला ने सामाजिक विद्रोह को बडी तीव्रता से उभारा है। अधिकाश रचनाए जीवन आस्था से सबधित है जिनमे अवरोधो के पराजय के प्रति एक प्रगल्भता फूट निकली है। निराला का स्वच्छन्दतावाद सशक्तता से आविर्भूत हुआ है। एक ओर सरोज स्मृति जैसी वेदना गाथा है जिसमे निराला का समाज के प्रति आक्रोश और आत्मग्लानि की अभिव्यक्ति है। वनवेला भी इसी मे है जिसमे सामाजिक विषमता पर केवल आक्रोश ही नहीं अन्तर्व्याप्त करूणा का प्रस्फुटन भी है। राजनीतिक प्रवचनाओ और विकृतियो के सकेत स्वर भी इसमे बडे मुखर है।[28]

निराला का जीवन सघर्ष का जीवन है और अनामिका की कविताए उसकी अभिव्यक्ति। सरोज स्मृति के अत मे लिखा है– दु ख ही जीवन की कथा रही। जिस तरह उत्तर राम चरित मे राम ने स्वय स्वीकार किया है कि दु ख का अनुभव करने के लिए ही उन्हे चेतना मिली है – दु ख सवेदनामैव रामे चैतन्यामाहितम, उसी तरह निराला ने भी मानो स्वीकार किया है कि केवल दु ख भोगने के लिए उन्हे जीवन मिला था। किन्तु जीवन सघर्ष की इस चोट को उन्होने हिन्दी का स्नेहोपहार समझकर सगर्व स्वीकार किया है –

सोचा है नत तो बार बार,

यह हिन्दी का स्नेहोपहार,

यह नहीं हार मेरी, यास्वर

यह रत्नहार - लोकोत्तर वर![29]

तुलसीदास (1938) – निराला की यह कृति सन् 1938 मे भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। निराला ने इसको अपने परम स्नेही श्री नारायण चतुर्वेदी को समर्पित किया है।[30]

तुलसीदास का जब प्रकाशन हुआ उस समय छायावाद अपने शिखर पर पहुच चुका था। इसलिए प्रबधात्मक शिल्प विधान मे रचित रहने पर भी तुलसीदास का भावबोध दर्शन बोध और सौन्दर्य विधान छायावादी काव्यशैली के नितात अनुकूल है –

प्रेयसी के अलक नील व्योम,

दृगपल कलक मुख मजु सोम,

नि सृत प्रकाश जो तरूण क्षोभ प्रियतन पर

पुलिकित प्रतिपल मानस चकोर

देखता भूल दिक उसी ओर,

कुल इच्छाओ का वहीं छोर जीवन भर।[31]

तुलसीदास का प्रारम्भ भारतीय सस्कृति की सध्या से होता है –

भारत के नभ का प्रभापूर्ण

शीतलच्छाय सास्कृतिक सूर्य

अस्तमित आजरे-तमस्तूर्य दिङमगल।[32]

और इसका अत भारतीय सस्कृति के पुनर्जागरण की आकाक्षा के नवीन अरूणोदय से होता है इसलिए इस काव्य कृति मे तुलसीदास का चित्रण भारतीय सास्कृतिक पुनर्जागरण के सारस्वत नेता के रूप मे किया गया है।

कुकुरमुत्ता (1942) – कुकुरमुत्ता का प्रथम सस्करण युग मन्दिर उन्नाव से प्रकाशित हुआ। पुस्तक मे प्रकाशन का वर्ष नही है, भूमिका के नीचे 4 जून 1942 अकित है।[33]

निराला जी ने अपनी इस कृति को कुवर सुरेश सिह को समर्पित किया है। इस सग्रह मे कुकुरमुत्ता के अलावा सात और कविताए है– गर्म पकौडी, प्रेम सगीत रानी और कानी, खजोहरा, मास्को डायलाग्ज, स्फटिक शिला, और खेल।

कुकुरमुत्ता निराला की श्रेष्ठ कृतियो मे से एक है। इसमे कुछ गूड और अपरिचित सदर्भ भी है –

मै कुकुरमुत्ता हू

पर वेन जोइन वैसे,

वने दर्शन शस्त्र जैसे

ओमफलस और वृह्मवर्त

वैसे ही दुनिया के गोले और पर्त।[34]

अणिमा (1943) – निराला की यह कृति भी युग मन्दिर उन्नाव से प्रकाशित हुई। निराला ने अपनी इस कृति को रामविलास शर्मा को समर्पित किया है। इसमे अधिकाश गीत है जो आल इण्डिया रेडियो दिल्ली और लखनऊ से गाए गये है।[35]

अणिमा मे 1939 से 1943 के बीच की रचनाए सकलित है। इन रचनाओ को पढने के बाद ऐसा लगता है कि निराला 1940–42 के आस पास अपने जीवन मे पराजय बोध अधिक महसूस करने लगे थे। अणिमा मे सग्रहीत 1940 की कविता मे तीव्र पराजय बोध दिखाई देता है–

मै अकेला,

देखता हू आ रही

मेरे दिवस की साध्य वेला।

पके आधे बाल मेरे

हुए निष्प्रभ गाल मेरे

चाल मेरी मद होती आ रही

हट रहा मेला

जानता हू नदी झरने

जो मुझे थे पार करने

कर चुका हू हँस रहा यह देख

कोई नहीं मेला।[36]

किन्तु इस आवर्तक पराजय के बावजूद 'राम की शक्ति पूजा' के राम की तरह कवि का 'एक ओर मन रहा',[37] जो इतने सघर्षो के बीच न थका, न दीन बना। सघर्ष और पराजय के हलाहल को शकर की तरह पीकर कवि ने अत मे यह घोषणा कर दी–

मरण को जिसने वरा है

उसी ने जीवन भरा है

परा भी उसकी उसी के

अक सत्य यशोधरा है।[38]

वेला (1943) – निराला की यह कृति हिन्दुस्तानी पब्लिकेशस शाहगज इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इसकी भूमिका के नीचे निराला ने जून 1943 लिखा हुआ है।[39] इस कृति को निराला ने कविवर जानकी वल्लभ को समर्पित किया है।

इस कृति मे सभी तरह के गीत है तथा कुछ गजल शैली की रचनाए भी है जो निराला के हिन्दी मे उर्दू शैली लाने के प्रयत्न को द्योतिक करती है–

निगाह तुम्हारी थी,

दिल जिससे बेकरार हुआ

मगर मै गैर से मिलकर

निगाह के पार हुआ।[40]

निराला ने इस कृति के गीतो मे नये प्रयोग किये है किन्तु कुछ गीत श्रेष्ठ है जिनमे निराला की सहज अनुभूति दिखाई देती है–

रूप की धारा के उस पार

कभी धसने भी दोगे मुझे ?

विश्व की श्यामल स्नेह सॅवार

हॅसी हॅसने भी दोगे मुझे ? [41]

नये पत्ते (1946) – निराला की यह कृति लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद से 1946 मे प्रकाशित हुई। इस सग्रह मे सभी तरह के पद्य है और इन पद्यो मे हास्य के तत्त्व विद्यमान है। भूमिका मे निराला ने स्वय लिखा है "नये पत्ते इधर के पद्यो का सग्रह है। सभी तरह के आधुनिक पद्य है छन्द कई, मात्रिक सम और असम। हास्य की भी प्रचुरता, भाषा अधिकोश मे बोलचाल वाली पढने पर काव्य की कुञ्जो के अलावा ऊचेनीचे फारस के जैसे टीले भी। अधिक मनोरजन और वौधन की निगाह रखी गई है कि पाठको का श्रम सार्थक हो और ज्ञान बढे।"[42]

राजे ने अपनी रखवाली की, यह कैसी हवा चली, दगा की, चर्खा चला, तारे गिनते रहे, कुत्ता भौकने लगा, झीगुर डटकर बोला, देवी सरस्वती, युगावतार परमहस श्री राम कृष्ण देव, छलाग मारता चला गया, डिप्टी साहब आए, वर्षा, महगू महगा रहा, खून की होली जो खेली आदि इस सग्रह की उल्लेखनीय कविताए है।

निराला के इस सग्रह मे यथार्थवाद के दर्शन होते है। इस सग्रह की कुत्ता भौकने लगा, झीगुर डटकर बोला, छलाग मारता चला गया, डिप्टी साहब आए, और महगू महगा रहा जैसी कविताओ मे निराला का यर्थाथवाद बुलदी पर पहुचा है।[43]

अर्चना (1950), आराधना (1953) और गीत गुज (1958) निराला के अतिम काव्य सग्रह है। 'साध्यगीत' उनकी मृत्यु के बाद प्रकाश मे आया। इन रचनाओ मे कवि व्यग्य और गजल शैली से ऊपर उठ गया है और इनमे शैली क्रमश आत्मगत होती

गई है। वाह्य जगत से टूटता हुआ नाता प्रणति और समर्पण के स्वर मे विलीन होता गया है।[44]

निराला का काव्य ससार अत्यधिक विस्तृत है निराला स्वय अपने जीवन काल मे उसे समग्र रूप से पुस्तक रूप मे सामने नही ला सके उक्त काव्य सग्रहो के अतिरिक्त उन्होने अनेक कविताए लिखी जो मतवाला, समन्वय, आदर्श, सुधा सरस्वती आदि पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुई। नि सदेह निराला का काव्य ससार अद्‌भुत और निराला है।

गद्य साहित्य

अप्सरा (1931) – निराला कृत यह प्रथम उपन्यास सबसे पहले लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'सुधा' मे प्रकाशित हुआ। यह धारावाहिक रूप मे अगस्त 1930 से जनवरी 1931 तक निकला।[45] पुस्तक रूप मे इसका प्रकाशन सवत 1988 वि (1931) मे गगा पुस्तक माला कार्यालय लखनऊ से हुआ।

औपन्यासिक क्षेत्र मे निराला का यह प्रथम प्रयास था किन्तु निराला को पूर्ण विश्वास था कि इसे अपेक्षित सफलता मिलेगी "इन बडी–बडी तौंदवाले औपन्यासिक सेठो की महफिल मे मेरी दशिता धरा अप्सरा उतरते हुए बिल्कुल सकुचित नहीं हो रही, उसे विश्वास है वह एक दृष्टि से इन्हे अपना अनन्य भक्त कर लेगी।"[46]

प्रस्तुत उपन्यास मे इस तथ्य को प्रकट किया गया है कि वेश्या पुत्री के मन मे भी उच्च्व भावनाए हो सकती है और अवसर मिलने पर वह पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा को सहर्ष निभा सकती है।

अलका (1933) – निराला की यह कृति भी गगा पुस्तक माला लखनऊ से 1933 मे प्रकाशित हुई। निराला ने अपने इस उपन्यास को नद दुलारे वाजपेयी को समर्पित किया है।[47]

इसका नाम करण भी प्रथम उपन्यास की नायिका के आधार पर हुआ है। नायिका शोभा का ही परिवर्तित नाम अलका है जो उसके धर्मपिता स्नेह शकर ने

प्रस्तुत उपन्यास मे इस तथ्य को प्रकट किया गया है कि वेश्या पुत्री के मन मे भी उच्च भावनाए हो सकती है और अवसर मिलने पर वह पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा को सहर्ष निभा सकती है।

अलका (1933) – निराला की यह कृति भी गगा पुस्तक माला लखनऊ से 1933 मे प्रकाशित हुई। निराला ने अपने इस उपन्यास को नद दुलारे वाजपेयी को समर्पित किया है।[47]

इसका नाम करण भी प्रथम उपन्यास की नायिका के आधार पर हुआ है। नायिका शोभा का ही परिवर्तित नाम अलका है जो उसके धर्मपिता स्नेह शकर ने दिव्य सौन्दर्य और सघन केश राशि को लक्षित करके रखा था।[48] उपन्यास का कथानक रोचक और समस्या प्रधान है।

प्रभावती (1936) – निराला की यह कृति 1936 मे सरस्वती पुस्तक भण्डार लखनऊ से प्रकाशित हुई। इसको निराला ने अपनी पत्नी को समर्पित किया है।[49]

प्रभावती निराला का ऐतिहासिक उपन्यास है। यह पृथ्वीराज जयचद कालीन उत्तर भारत के राजाओ के आपसी सघर्ष को लेकर लिखा गया है जिसका कारण प्राय विवाह व कन्यादान हुआ करता था। उसमे एक पक्ष वीर नारियो का भी था यह दिखलाना निराला का उद्देश्य है। उन्होने इस उपन्यास मे यमुना, प्रभावती, विद्या, रत्नावली आदि ऐसी तरूणियो का वर्णन किया है जो नैतिकता के लिए जान पर खेलती रहीं। ये भारत की वीर नारिया है। ऐसे चरित्रो के निर्माण के पीछे भारतीय परम्परा का गहरा ज्ञान तो है ही आधुनिकता के नारी उत्थान के आन्दोलन की गहरी चेतना भी है।[50]

निरूपमा (1936) – निरूपमा का प्रकाशन वर्ष भी 1936 ही है। यह भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। निरूपमा के आरम्भिक दो परिच्छेद 16 जून 1934 की सुधा मे प्रकशित हुए थे।[51] निराला ने इसे 1933 से लिखना

प्रारम्भ कर दिया था और यह पूरा 1935 के आस–पास हुआ। प्रभावती उन्होने बाद मे लिखना प्रारम्भ किया किन्तु निरूपमा से पहले पूरा कर लिया इसलिए निरूपमा उनका चौथा उपन्यास ठहरता है। उन्होने निरूपमा की भूमिका मे लिखा भी है "हिन्दी के उपन्यास साहित्य को निरूपमा मेरी चौथी भेट है।"[52] निरूपमा उपन्यास मे कहानी नायिका निरूपमा उसके मामा योगेश, सुरेश और प्रेमी कुमार के आस–पास घूमती है। इसके माध्यम से निराला ने तत्कालीन परिस्थितियो को चित्रित करने का प्रयास किया है। इसके माध्यम से निराला जी दिखाते है कि कई बगाली युवको मे बहस होती है कि देश गिरा हुआ है, गुलामो की कोई जाति नही फिर भी जातीय उच्चता का अभिमान लोगो की नस–नस मे समाया हुआ है इससे मानसिक और चारित्रिक पतन होता है। एक दूसरे से न मिल पाने, शक्तिशाली न हो पाने का यही कारण है।[53]

निराला के प्रथम चरण के उपन्यासो (अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा) का कथानक घटना प्रधान है। उनमे लेखक का ध्यान परिवेश पर नही बल्कि एक रोचक कथा गढने पर है। पात्र यथार्थवाद से नही उठाए गये है, उन्हे कल्पना से अपने आदर्शो के रूप गढा गया है। भाषा जैसे जीवन सग्राम मे काम आने वाला अस्त्र न होकर अलकरण की वस्तु है। स्थान–स्थान पर निराला लम्बे–लम्बे वाक्यो वाली ऐसी चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते है कि थोडी देर के लिए कविता और गद्य का अतर दिखलाई नही पडता, लेकिन यह उनके इन उपन्यासो का एक पहलू है।

कुल्ली भाट (1939) – निराला का यह उपन्यास सवत् 1996 (वि) 1939 मे गगा पुस्तक माला लखनऊ से प्रकाशित हुआ। पुस्तक रूप मे प्रकाशित होने से पूर्व कुल्ली भाट के आरम्भिक तीन परिच्छेद माधुरी (मासिक लखनऊ) के मार्च 1938 के अक मे प्रकाशित हुए थे। इस पत्रिका के अक्टूबर 1938 के अक मे उसके बाद के भी दो परिच्छेद निकले।[54]

कुल्ली भाट एक सस्मरणात्मक उपन्यास है, जिसमे कुल्ली भी है और निराला भी। दोनो के प्रसग एक दूसरे से जुडे है। लेखक कही वहकता नही और वह बडे कौशल से अपने कथानायक के चरित्र को उद्घाटित करता हुआ आगे बढता है। चरित्र भी कैसा ? कुल्ली एक बिल्कुल मामूली चरित्र है जो आरम्भ मे एक इक्का चलवाता है और यौन विकृति का शिकार है। धीरे-धीरे वह स्वाधीनता आन्दोलन मे सम्मिलित होता है और काग्रेस का कार्यकर्ता बन जाता है। इस क्रम मे उसके चरित्र मे आवश्यक परिवर्तन होताहै, वह कुन्दन की तरह निखर उठता है। निराला ने बडी खूबी से इस उपन्यास मे यह दिखलाया है कि चरित्र का निर्माण जनान्दोलनो मे होता है। जनान्दोलन मनुष्य के चरित्र को उसकी कमजोरियो और विकृतियो से मुक्त कर उसे अत्यन्त उदार स्तर पर पहुचा देते है।

बिल्लेसुर बकरिहा (1942) निराला का यह उपन्यास 1942 मे युग मन्दिर उन्नाव से प्रकाशित हुआ। पुस्तक रूप मे प्रकाशित होने से पूर्व इसके दो अश रूपाभ (मासिक कालाकाकर) के क्रमश मार्च और अप्रैल 1939 के अको मे प्रकाशित हुए थे।[55]

बिल्लेसुर बकरिहा रेखाचित्रात्मक उपन्यास है। इसमे निराला ने अपने को अलग रखा है और बिल्लेसुर के माध्यम से एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है, जो जीवित रहने के लिए अथक सघर्ष करता है और अतत विजयी होता है। बिल्लेसुर एक मामूली किसान है। निराला ने ये दोनो चरित्र अवध के कस्बाई और ग्रामीण इलाको से लिए है और उनके परिवेश के साथ उनके चरित्र चित्रण मे वैसी कलात्मकता का प्रदर्शन किया है, जैसी कलात्मकता ससार के महान यथार्थवादी कथाकारो की कृतियो मे ही देखने को मिलती है।

चोटी की पकड (1946) – इस उपन्यास को निराला ने 1943 तक पूरा कर लिया था। किन्तु यह किताब महल इलाहाबाद से मार्च 1946 मे जाकर ही प्रकाशित हो सका।[56]

इस उपन्यास का विषय वह स्वदेशी आन्दोलन को बनाना चाहते थे किन्तु

नवीन कृति अधकार मे ही विलुप्त न हो जाए हम इसे इसी रूप मे पाठको के समझ रख देना अपना एक पुनीत कर्तव्य समझते है।[58]

काले कारनामे मे गाव के तिकडम जमीदारो के आपसी झगडे पुलिस थाना आदि का चित्रण है।

उक्त उपन्यासो के अतरिक्त निराला ने दो और उपन्यास लिखे 'चमेली' जो रूपाभ के फरवरी 1939 के अक मे प्रकाशित हुआ।[59] 'इन्दुलेखा' अन्तिम उपन्यास था जो ज्योत्स्ना (मासिक पटना) मे दीपावली अक 1960 मे प्रकाशित हुआ। निराला इन दोनो उपन्यासो को पूरा न कर सके यदि वह इन्हे पूरा कर पाते तो नि सन्देह यह उनके श्रेष्ठ उपन्यास होते।

कहानी सग्रह

लिली (1943) – निराला का यह कहानी सग्रह गगा पुस्तक माला लखनऊ से प्रकाशित हुआ। यह कहानी के क्षेत्र मे निराला का प्रथम प्रयास था। भूमिका मे निराला ने लिखा है "यह कथानक साहित्य मे मेरा पहला प्रयास है। मुझसे पहले वाले हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी लेखक इस कला को किस दूर उत्कर्ष तक पहुचा चुके है अब मेरा विश्वास केवल 'लिली' पर है जो यथा स्वभाव अधखिली रहकर अधिक सुगध देती है।[60]

पद्मा और लिली, ज्योतिर्मयी, कमला, श्यामा, प्रेमिका परिचय, हिरनी, परिवर्तन और अर्थ इस सग्रह की श्रेष्ठ कहानिया है। सग्रह के रूप मे प्रकाशित होने से पूर्व उक्त कहानिया 'सुधा, सरस्वती आदि पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुकी थी।

सखी (1935) – निराला का यह कहानी सग्रह सरस्वती पुस्तक भण्डार लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इस सग्रह मे निराला की छोटी–छोटी कहानिया है तथा कुछ कहानिया उनके व्यक्तिगत जीवन से सबधित है। निराला ने भूमिका मे लिखा है "सखी मेरी छोटी–छोटी कहानियो का दूसरा सग्रह है। ग्रह दोष से बरी कोई जीवन

नही यह विचार कहानियो के लिए मुझे शकित करता है, पर जीवन का जैसा साहस भी इसमे है   कुछ कथाए ऐसी है जो मेरे जीवन की घटनाओ मे से है।"[61]

न्याय, स्वामी शारदानद महाराज और मै, सखी, देवी, चतुरी चमार, राजा साहब को ठेगा दिखाया, सफलता, भक्त और भगवान, इस सग्रह की श्रेष्ठ कहानिया है।

सुकुल की बीबी (1941) – सुकुल की बीबी 1941 मे भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। यह निराला की कहानियो का तीसरा सग्रह है किन्तु इसमे सकलित कहानी 'क्या देखा' को निराला पहली कहानी मानते है"। सुकुल की बीबी मेरी कहानियो का तीसरा सग्रह है। इसमे तीन कहानिया इधर की और अतिम 'क्या देखा' मेरी पहली कहानी है जैसा इसकी पादटीका मे सूचित है। यह कहानी मतवाला मे 1923 मे निकली थी।[62]

'कला की रूपरेखा' सुकुल की बीबी, श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी, इस सग्रह की श्रेष्ठ कहानिया है।

निराला ने कुल 24 कहानिया लिखी है। उक्त कहानी सग्रहो के अलावा चतुरी चमार सग्रह 1945 मे किताब महल इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इसमे नया कुछ नही बल्कि सखी का ही नाम बदलकर 'चतुरी चमार शीर्षक से प्रकाशित किया गया। 'देवी भी उनका अन्य सग्रह है इसमे भी सुकुल की बीबी सग्रह की कहानियो को सकलित किया गया है।

निराला का साहित्यिक धरातल इतना विशाल है कि उसे किसी निश्चित सीमा मे समेटना सम्भव नही। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। श्रेष्ठ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबध लेखक तथा उत्कृष्ठ समीक्षक थे। साहित्य की ऐसी कोई विधा नही जिस पर आपने लेखनी न चलाई हो। उनकी साहित्य साधना का काल खण्ड 1923 से 1961 तक फैला हुआ है।

उनकी पहली कविता जन्मभूमि 1920 मे 'प्रभा' मे प्रकाशित हुई तथा प्रथम निबध सरस्वती के अक्टू 1920 के अक मे 'बग भाषा का उच्चारण' छपा और पुस्तक के रूप मे पहली कृति 'अनामिका' प्रकाशित हुई। अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका द्वितीय, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुज, सान्ध्य काकली, अपना, उनकी श्रेष्ठ काव्य कृतिया है। अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, श्रेष्ठ उपन्यास है। लिली, चतुरी चमार श्रेष्ठ कहानी सग्रह है। रवीन्द्र कविता कानन प्रबध पद्म है। निबध के क्षेत्र मे भी आपने अपनी लेखनी चलाई और प्रबध प्रतिमा, चाबुक, चमन और सग्रह नामक श्रेष्ठ निबध सग्रहो की रचना की। महाभारत शीर्षक से पुरा कथा को वर्णित किया है।

उक्त कृतियो के अतिरिक्त तत्कालीन समय मे प्रकाशित होने वाली ऐसी कोई साहित्यिक पत्रिका नही जो निराला की रचनाओ को छापकर अपने आप को धन्य न समझती हो।

मतवाला, समन्वय, ज्योत्स्ना, सुधा, नीलाभ, सरस्वती, माधुरी, आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओ मे निराला के निबध, कहानिया, कविताए, गीत, टिप्पणिया, धारावाहिक रूप मे उपन्यास आदि नियमित प्रकाशित होते रहते थे। नि सन्देह निराला सचमुच मे निराले थे और 'भूतो न भविश्यति' को चरितार्थ करने वाले युग पुरूष थे।

सुमित्रानंदन पंत

प सूर्यकात त्रिपाठी निराला के बाद हिन्दी साहित्य मे किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह है सुमित्रानदन पत का। कविवर पत का जन्म कौसानी मे 20 मई सन् 1900 ई को हुआ। कवि पत का जन्म और मॉ की मृत्यु साथ–साथ ही हुई।

'जन्म मरण आये थे सग-सग बन हम जोली,

मृत्यु अक मे जीवन ने जब आखे खोली।'[63]

मॉ के इस अभाव की पूर्ति प्रकृति ने की। वही उनकी माता–पिता, भाई, सखा, शिक्षक, प्रेयसी सभी कुछ बन गई।[64] बालक पत का पोषण मात्र प्रकृति ने ही किया। प्रकृति का इतना निकट साहचर्य उन्हे प्राप्त हुआ, इस तथ्य की पुष्टि, उनकी रचनाओ से होती है। कौसानी की गोद मुझे मॉ की गोद से भी प्यारी रही है।[65]

सुमित्रा नदन पत के बचपन का नाम गोसाई दत्त था जिसे बचपन मे ही पत ने सुमित्रा नदन कर लिया। पत के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव उनके पिता तथा भाई हरिदत्त पत का पडा। पत की प्रारम्भिक शिक्षा कौसानी के वर्नाक्यूलर स्कूल मे प्रारम्भ हुई।[66]

1910 मे वह कौसानी से अल्मोडा आ गये। यहा उनका दृष्टिकोण व्यापक हुआ। इस समय पत का साहित्यिक अनुराग बढा। इन्ही दिनो मे सन् 1971 की जाडे की छुट्टियो मे 'हार' नामक लघु उपन्यास की रचना की। इसमे उनकी उस समय की मनोदशा का चित्रण हुआ है।

"उन दिनो अल्मोडे मे जो स्वामी सत्यदेव आदि बडे लोगो के भाषण होते थे उनमे लोकसेवा और देश सेवा का स्वर ही मुख्य रहता था। उन सब परिस्थितियो तथा बौद्धिक वातावरण का लाभ उठाकर मैने अपने विचारो तथा भावनाओ को व्यवस्थित वाणी देने के अभिप्राय से ही सम्भवत 'हार' नामक उपन्यास की रचना की होगी।[67] इसी समय सन् 1916 मे 'अलमोडा अखबार' मे उनकी पहली कविता छपी। सन् 1917 मे हस्तलिखित सुधाकर मासिक के मई अक मे उनकी एक लघु रचना 'शोकाग्नि' और 'अश्रुजल' नाम से छपी –

जो शोक अग्नि से अति ज्वाला कराल उठती,

वह अश्रुबिन्दु जल के क्यो रूप मे बदलती?

क्या वह नहीं बताती सम्बध जल अनल मे?

क्या? वह तुम्हे जलाता और मै तुम्हे डुबाता।

प्रारभिक रचनाओ पर अनेक ग्रथो व कवियो का प्रभाव होने पर भी उनकी कतिपय रचनाओ मे मौलिक प्रतिभा के प्रमाण मिलते है जिनमे तम्बाकू का धुआ, कागज के फूल, गिरजे का घण्टा, आदि उल्लेखनीय है। शब्द योजना सस्कार व अभिव्यक्ति की दृष्टि से अपरिपक्व होने पर भी भावना की दृष्टि से इनमे मौलिकता है।[68]

हाईस्कूल पत ने बनारस से किया, और हाईस्कूल पास कर पत इलाहाबाद आ गये। 1919 मे म्योर सैन्ट्रल कालेज मे इटर मे प्रवेश लिया। इलाहाबाद उनके लिए साहित्य उर्वर, शात व सस्कृत स्थान है। मुख्य रूप से यही उनका साधना स्थल रहा है जहा उनकी कविता कामिनी को तारूण्य का सौन्दर्य और प्रौढता की परिपक्वता प्राप्त हुई। यहा उन्हे आत्म परिष्कार का उचित अवसर व वातावरण प्राप्त हुआ। इलाहाबाद उनका प्रिय स्थान रहा है और इसे उन्होने अपना स्थायी निवास स्थान बनाया।

प्रयाग मे ही पत को सर्वप्रथम कवि सम्मेलनो मे सम्मिलित होने का अवसर मिला। पत का साहित्यिक जीवन 1920 से लगभग 1970 तक फैला हुआ है। इस अवधि मे वह कभी कालाकाकर, बम्बई और इलाहाबाद रहे। उन्होने जीवन का अधिकाश समय इलाहाबाद मे बिताया और निरन्तर साहित्य साधना करते रहे।

काव्य

पल्लव (1926) – कविवर पत की प्रथम प्रकाशित होने वाली काव्यकृति का श्रेय पल्लव को प्राप्त हुआ। कवि ने अपने श्रेष्ठ काव्य सग्रह का नाम पल्लव रखा–

"जीर्ण जग के पतझड मे प्रात,

सजाती हो मधुऋतु की डाल

उसी का स्नेह स्पर्श अज्ञात

खिलाए मेरे पल्लव वाल।"[69]

कवि ने साहित्य जगत की श्रेष्ठ रचनाओ का नाम पल्लव रखा यह प्रश्न विचारणीय है। पल्लव शीर्षक रखने का उद्देश्य साहित्य जगत मे सिर्फ विनम्रता प्रदर्शित करना है, इसलिए इन रचनाओ को वह पत्र पुष्पम भी नही कहते—

न पत्रो का मर्मर सगीत,

न पुष्पो का रस राग पराग।[70]

पल्ल्व मे 1919 से 1925 के मध्य लिखी गई 32 कविताए सग्रहीत है जो समय—समय पर 'सरस्वती' तथा श्री शारदा मे प्रकाशित हो चुकी है। पल्लव के प्रकाशन से पत को श्रेष्ठ कवियो मे स्थान प्राप्त हुआ। प्रारम्भिक अलोचनाओ के बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्वय पत को आशीर्वाद दिया "मै सरस्वती से प्रार्थना करता हू कि वे कमल वन मे विचरन करना छोडकर पत जी की जिव्हा पर विराजे।"[71]

वीणा (1927) — वीणा कवि की प्रारम्भिक रचना है किन्तु इसका प्रकाशन पल्लव के बाद हुआ। इस सग्रह मे 1918—20 की रचनाए सग्रहीत है।[72] कवि स्वय इसे अपना दुधमुहा प्रयास कहते है।[73]

इस सग्रह मे कवि जीवन के नव प्रभात के दर्शन होते हैं। कविताए प्रारम्भिक होते हुए भी कथ्य और शिल्प की दृष्टि से रूचिर और प्रशसनीय है। प्राय सभी गीत भावपरक है जिनकी चितन भूमि रहस्य (जिज्ञासा) सौन्दर्य (प्रकृति) तथा प्रकृति मे मॉ की छवि की आकाक्षा से सम्बधित है।

ग्रन्थि (1929) — ग्रन्थि का प्रकाशन 1929 मे हुआ किन्तु इसकी रचनाओ का काल भी 1919—20 ही है।[74] यह असफल प्रेम कथा कवि के इन्द्रजाल मय स्वप्न का काव्य मय रूपाकन है जिसमे वास्तविक श्रगारिक भावो एव अनुभूतियो को कल्पना के अवगुण्ठन से अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। रचना का मुख्य स्वर वियोगात्मक है —

"हाय मेरे सामने ही प्रणय का

ग्रन्थि बधन हो गया।"[75]

इस कृति पर मुख्य रूप से कालिदास के रघुवश का प्रभाव है तथा रवीन्द्र और सरोजनी नायडू के प्रेम गीतो का प्रभाप भी लक्षित होता है। यह छायावादी काव्य की अत्यन्त मनोरम कृति है, जिसने खडी बोली को सस्कृत एव बृज भाषा की रम्यता के समकक्ष ला खडा किया।

गुजन (1931) – कवि की यह कृति 1931 मे प्रकाशित हुई। इसमे 1926–30 की कविताओ को सग्रहीत किया गया है। गुजन मे कवि के नये उल्लास पूर्ण जीवन दृष्टिकोण के दर्शन होते है –

जग के उर्वर आगन मे

बरसो ज्योतिर्मय जीवन !

बरसो लघु-लघु तृण, तरू पर

हे चिर अत्यव ?, चिर नूतन। [76]

गुजन का विषय है मानव जीवन ।

यहा कवि के चितन केन्द्र मे मानव बैठा है। मानव जीवन के सु ख दु ख का विवेचन और उसके दर्द के उपचार का सधान कवि का उद्देश्य है।

युगवाणी (1939) – युगवाणी मे कवि ने युगीन परिस्थितियो का चित्रण काव्य रूप मे प्रस्तुत किया है। भारतीय इतिहास मे यह युग गाधी युग के नाम से जाना जाता है और कवि ने अपनी प्रथम रचना "बापू" को ही समर्पित की है –

"बापू ! तुमसे सुन आत्मा का तेज राशि आह्वान

हस उठते है रोम हर्ष से, पुलकित होते प्राण।" [77]

महाकवि निराला को समर्पित इस कृति मे प्रकृति सबधी कविताओ के अतरिक्त अन्य पाच प्रकार की रचनाओ को सम्मिलित किया गया है जो पाच विचार धाराए कही जा सकती है –

1 भूतवाद और आध्यात्मवाद का समन्चय, जिससे मनुष्य की चेतना का पथ प्रशस्त हो।

2 समाज मे प्रचलित जीवन मान्यताओ का पर्यालोचन एव नवीन सस्कृति के उपकरणो का सग्रह ।

3 पिछले युग के उन मृत आदर्शो और जीवो रूढि रीतियो की तीव्र भर्तस्ना, जो मानवता के विकास मे बाधक बन रही है।

4 मार्क्सवाद तथा फ्रायड के प्राणिशास्त्रीय मनोदर्शन का समाज पर प्रभाव।

5 वहिर्जीवन के साथ अन्तजीर्वन के सगठन की आवश्यकता, राग भावना का विकास तथा नारी जागरण ।[78]

ग्राम्या (1940) – ग्राम्या मे कवि की युगवाणी के बाद की रचनाओ को सग्रहीत किया गया है। ग्राम्या किसी ग्राम मे रहकर नही लिखी गई कवि ने भूमिका मे लिखा है "इनमे पाठको को ग्रामीणो के प्रति केवल वोद्धिक सहानुभूति ही मिल सकती है। ग्राम्य जीवन मे मिलकर, उसके भीतर से ये अवश्य नहीं लिखी गई है। ग्रामो की वर्तमान दशा मे वैसा करना केवल प्रतिक्रियात्मक साहिंत्य को जन्म देना होता।"[79]

यद्धपि ग्राम मे रहकर यह कृति नही लिखी गई तथापि इसमे ग्रामीण जन–जीवन की झाकी दिखाई देती है। ग्राम कवि, ग्राम, ग्राम दृष्टि, ग्रामचित्र, ग्राम युवती आदि ऐसी ही कविताए है।

स्वर्णकिरण (1947) – स्वर्णकिरण के माध्यम से कवि ने अपनी काव्य यात्रा के तृतीय चरण मे प्रवेश किया । परिवर्तित भावधारा के फलस्वरूप जिस नवीन चेतना का उदय हुआ उसकी पहली किरण स्वर्ण किरण है –

युगो का तमश हरण, करे यह स्वर्ण किरण।

धरा पर ज्योति भरण, हसी लो स्वर्ण किरण।[80]

स्वर्ण किरण की अधिकाश रचनाए आध्यात्मिक है जो मन चेतना से सबधित है। स्वर्ण शब्द को कवि ने चेतना के अर्थ म प्रयुक्त किया है। इस चेतना के द्वारा कवि ने मृत्यु मे अमरता, निराशा मे आशा और अपूर्णता मे पूर्णत के दर्शन किए है, जिसके द्वारा उसे आलौकिक सौन्दर्य की अनुभूति हुई।

इस सग्रह की कविताओ पर अरविद वादी दृष्टिकोण का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। अशोकवन और स्वर्णोदय इस सग्रह की उत्कृष्ट रचनाए है जिनमे अरविद दर्शन के तत्वो को मूर्त करने का प्रयास किया गया है। दर्शन की शुष्कता होने पर भी काव्य सौन्दर्य का समस्त विचार इन कविताओ मे मिलता है।

स्वर्णधूलि (1947) – कवि पत की यह कृति स्वर्णकिरण के समकालीन है। कवि पत ने डॉ एन सी पाण्डे को समर्पित इस कृति के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियो मे आशा का नवीन सचार करने का प्रयास किया है –

''आशा का प्लावन बन बरसो

नव सौन्दर्य प्रेम बन सरसो

प्राणो मे प्रतीत बन हरसो

अमर चेतना बन नूतन, बरसो हे घन।''[81]

इसकी कविताओ का आधार समाज है। कवि ने स्वर्णधूलि के विज्ञापन मे कहा है कि इसका धरातल सामाजिक है। आदर्श समाज की परिकल्पना मे यत्र तत्र अरविद दर्शन के सिद्धातो को मुखर किया गया है। अर्थात अरविद दर्शन के व्यवहारिक रूप को सामाजिक आधार दिया गया है।

मधुज्वाल (1947) – यह रचना भी 1947 मे प्रकाशित हुई। इसे पत की मौलिक रचना नही कहा जा सकता । इस सग्रह मे उमरखैय्याम की रूबाइयो का गीतान्तर है जिसे पत ने 1929 मे किया था।[82]

है। कवि पत ने डॉ एन सी पाण्डे को समर्पित इस कृति के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियो मे आशा का नवीन सचार करने का प्रयास किया है –

"आशा का प्लावन बन बरसो

नव सौन्दर्य प्रेम बन सरसो

प्राणो मे प्रतीत बन हरसो

अमर चेतना बन नूतन, बरसो हे घन।"[81]

इसकी कविताओ का आधार समाज है। कवि ने स्वर्णधूलि के विज्ञापन मे कहा है कि इसका धरातल सामाजिक है। आदर्श समाज की परिकल्पना मे यत्र तत्र अरविद दर्शन के सिद्धातो को मुखर किया गया है। अर्थात अरविद दर्शन के व्यवहारिक रूप को सामाजिक आधार दिया गया है।

मधुज्वाल (1947) – यह रचना भी 1947 मे प्रकाशित हुई। इसे पत की मौलिक रचना नही कहा जा सकता । इस सग्रह मे उमरखैय्याम की रूबाइयो का गीतान्तर है जिसे पत ने 1929 मे किया था।[82]

उत्तरा (1949) – कवि पत का यह सग्रह उस समय प्रकाशित हुआ जब भारत लम्बी गुलामी के बाद आजाद हवा मे सास ले रहा था। उत्तरा मे इस बदलाव की सुगध स्पष्ट दिखाई देती है –

बदल रहा अब स्थूल धरातल

परिणित होता सूक्ष्म मन स्थल

विस्तृत होता वहिर्णगत अब

विकसित अन्तर्जीवित अभिमत।[83]

उत्तरा पत की श्रेष्ठ कृति है। उत्तरा को सौन्दर्य बोध तथा भाव ऐश्वर्य की दृष्टि से मै अब तक की सर्वोत्कृष्ठ कृति मानता हू। उसके अनेक गीत जो चिदम्बरा मे सम्मिलित है आने पर पाठको का ध्यान आकर्षित करेगे। उत्तरा के पद से

किशोर अवस्था मे अपने मानोभावो को छन्द के रूप मे व्यक्त करना तब शायद पत जी के लिए सम्भव न रहा हो 'मैने अपने ऐसे ही किशोर स्वभाव तथा घर बाहर की परिस्थितियो के वातावरण से प्रेरणा लेकर अपना खिलौना उपन्यास 'हार' लिखा था जो मेरी सर्वप्रथम रचना कही जा सकती है।[89]

हार को पत जी ने उस समय लिखा था जब वह किशोरावस्था मे थे और उनके ह्रदय मे प्रेम का अकुर फूट रहा था उनके इन्ही मनोभावो का चित्रण हार मे दिखाई देता है। यह एक ऐसे भावुक युवक की कहानी है जो बिना प्रणय निवेदन किए एक युवती को अपनी भावनाओ मे बिठा लेता है। युवती भी आकृष्ट होती है किन्तु वह वस्तु स्थिति को समझ बिना बताए हुए ही युवक से दूर चली जाती है। युवक इस अप्रत्याशित मूक विछोह से क्षुब्ध विरक्त हो उठता है और उसे मानव जीवन का समस्त होकर व्यापार खोकला तथा आस्था शून्य लगने लगता है। वह प्रेम की मृग मरीचिका से निकलकर मानव जीवन के उचित ध्येय की खोज करता है। अपने अध्ययन तथा चितन से इस निष्कर्ष पर पहुचता है कि लोक सेवा करने से ही आत्मकल्याण की उपलब्धि सम्भव हो सकती है।[90]

औपन्यासिक कृति के रूप मे हार का कुछ भी महत्व नही है पर पत के काव्य व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से हार का बडा महत्व है। इस प्रारम्भिक कृति मे ही पत की परवर्ती कृतियो मे प्रकट होने वाली आदर्शवादी प्रवृत्तियो, विश्व प्रेम सूक्ष्म नैतिक दृष्टि आदि दिखाई पडती है। [91]

पाच कहानिया (कहानी सग्रह) 1936 – उपन्यास के क्षेत्र मे पत के एक मात्र प्रयास का स्वतत्र साहित्यिक मूल्य बहुत न्यून है, पर कहानियो मे पत अधिक सक्षम कथाकार के रूप मे उभरे है। इसका स्पष्ट कारण तो यह है कि हार की अपेक्षा कृत ये प्रौढ रचनाए है ये सभी 1935 के आस पास लिखी गई थी। दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि उस समय जब ये कहानिया लिखी जा रही थी पत धीरे–धीरे मार्क्सवाद प्रभावान्तर्गत जनजीवन के यथार्थ की ओर मुड चुके थे इसलिए

जिस बदलाव की सूचना हमे युगात मे मिलती है वह पाच कहानियो मे भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।[92]

पहली कहानी 'पानवाला' कहानी से अधिक शब्द चित्र है। यह एक ऐसे व्यक्ति पीताम्बर की कहानी है जो गरीबी मे पैदा होकर भी अपनी महत्वाकाक्षाओ रूचियो आदि मे धनी परिवारो के लडको की तरह ही है। जवानी मे उसने अपने स्वभाव कौशल और व्यक्तित्व के बल पर धनी लडको का साथ किया तथा उसके साथ साथ उन्ही की तरह जीवन बिताया। बाद मे जब उसके धनी साथी उससे छूट गये और लते और आदते उसमे छोड गये तब वह कही का नही रहा। अनेक प्रकार की ठोकरे खाकर वह पान वाला बन गया।[93]

दूसरी कहानी 'उसबार सतीश, सुबोध, नलिन, गिरीन्द, विजया, सरला आदि अनेक कथा पात्रो के इर्द गिर्द घूमती है। प्रेम के क्षोभ के विविध पक्षो को उद्‌घाटित करना ही लेखक का अभीष्ट जान पडता है।[94]

तीसरी कहानी 'दम्पति' निश्चय ही इस सग्रह की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। पार्वती एक ग्राम वाला है उसकी शादी छोटी वय मे ही हो जाती है। पार्वती के पति उससे अत्यन्त स्नेह रखते है उनके आकर्षण एव विनोद की एक मात्र केन्द्र पार्वती ही थी। पार्वती पति के इस व्यवहार से कृत्य कृत्य थी। पति के लिए पार्वती इतनी महत्वपर्णू इसलिए भी हो गई क्योकि उन्हे स्त्रीत्व का स्पर्ष ही काफी था सौन्दर्य की कोई खास परिकल्पना उनके दिमाक मे नही थी। अल्पवयसा पार्वती के लिए भी पति की कोई विशेष कल्पना नही थी। विवाह को लेकर उसके मन मे एक अनिवर्चनीय भाव और पति ससर्ग की एक लालसा हीन, अज्ञात गुप्त सुख की भावना ही वह महसूस कर पाती थी। एक सामान्य व्यक्ति की तरह पार्वती के पति के लिए भी स्त्री की सुन्दरता एव गुणो का ज्यादा मूल्य नही था कोई कन्या उनकी पत्नी है इस भाव से ही उन्हे परम सतोष था। पत ने इस फीलिग को कहानी मे उभारकर एक बहुत बडे मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रस्तुत किया है।[95]

सग्रह की चौथी कहानी 'बन्नो' कथ्य एव शिल्प की दृष्टि से सामान्य है। सग्रह की अतिम कहानी 'अवगुण्ठन' है इस कहानी मे लेखक ने जर्जर सामाजिक रूढियो पर कटु प्रहार किया है। रामकुमार एक सुशिक्षित नव युवक है। माँ के अनुरोध पर उसने विवाह करना तो स्वीकार कर लिया किन्तु जात–पात कुल वश का आडम्बर तथा रूढिगत मान्यताए उसे पसद नही है। पर्दा प्रथा से उसे सख्त नफरत थी। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि इन रूढिगत सस्कारो का विरोध किया जाए किन्तु ऐसा कुछ भी सम्भव न हो सका।[96]

ज्योत्स्ना (नाटक) 1934 – कवि पत बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उनकी यह प्रतिभा ज्योत्स्ना नाटक मे दिखाई देती है। ज्योत्स्ना कवि पत का पहला नाटक है जिसमे उनके कवि रूप के दर्शन होते है। ज्योत्स्ना की विज्ञापिका मे कवि निराला ने लिखा है "काव्य के चारू चरणो से हिन्दी के दारू पथ को पार कर प्राजल श्री सुमित्रा नदन काव्योपवन के साजलि खिले हुए प्रकाश दृष्टि सुन्दर गुलाब है। आज उन्ही की प्रतिभा के रूप रग मधु गध और भावोच्छवास की प्रशसा के मुख मुखर है। अब वे ज्योत्स्ना मे मनोहर नाट्यकार के शुचि रूप हिन्दी ससार के सामने आ रहे है। मै गुलाब को देखता हू उसके काटो को नही ज्योत्स्ना मे उनका पहला प्रिय, भावमय श्वेत वाणी का कोमल कविरूप ही दृष्टिगोचर होता है।"[97]

इस नाटय कृति मे पाच अक है। इस कृति का महत्व नाटय कला मे अभिनव प्रयोग की दृष्टि से न होकर नवीन जीवन मूल्यो की खोज एव मानव मात्र के सुखी एव स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की दृष्टि से है।[98] पत ने अपनी इस कृति मे तत्कालीन स्थिति और अपने मनोभावो को चित्रित करने का प्रयास किया है "ज्योत्स्ना मे मैने अपने विश्व जीवन के स्वप्न को अवतरित करने की चेष्टा की है। उस समय मेरे मन मे जो राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक तथा लोकजीवन सम्बधी धारणाए थी तथा जो मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक आदर्श मुझे आकृष्ट करते थे, उन्हे मैंने इस नाट्य रूपक के रूप मे उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। वह मेरी तब की सौन्दर्य साधना का भी निदर्शन है।[99]

पत का कृतित्व विशाल था, उन्होने 1920 से 1970 तक निरन्तर साहित्य साधना की ओर अनेक साहित्यिक कृतियो का सृजन किया यद्यपि कुछ कृतिया साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि की नही है किन्तु उन समस्त कृतियो मे युगीन परिस्थितियो का यथार्थ स्पष्ट रूप से दिखाई पडता है।

उन्होने काव्य, कहानी, नाटक, एकाकी तथा उपन्यास जैसी साहित्यिक विधाओ मे अपनी लेखनी चलाई। उक्त कृतियो के अतरिक्त उन्होने 'रजत शिखर (1952), शिल्पी (1952), सोवर्ण (1956), युगपुरूष (1948), छाया (1948), अतिमा (1955), किरण वीणा (1967) वाणी (1958), कला ओर बूढा चॉद (1959), पौ फटने से पहले (1967), पतझर (1967), गीत हस (1969), लोकायतन (1965), परी (1925), जिन्दगी का चौराहा (1936), अस्पृश्यता (1937), सृष्टा (1938), चौराहा (1948), शकुन्तला (1948), करमपुरी की रानी (1949), शिल्प और दर्शन (निबध, सग्रह) साठ वर्ष एक रेखाकन, छायावाद पुनर्मूल्याकन (1965) शखध्वनि (1971), शशि की तरी (1971), समाधिता (1973), आस्था (1973), सत्यकाम (1975), गीत अगीत (1977), सस्कृति (1977), जैसी उल्लेखनीय कृतियो का सृजन किया। उनके साहत्यिक योगदान को दृष्टिगत रखते हुए भारत के राष्ट्रपति ने उन्हे 1961 मे **''पद्म विभूषण''** की उपाधि दी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हे 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित किया। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, गोरखपुर, कानपुर, कलकत्ता तथा राजस्थान विश्वविद्यालय ने उन्हे डि लिट की मानद उपाधियो से सम्मानित किया।[100]

सुमित्रा नदन पत जैसे कवि एव साहित्यकार युगो एव शताब्दियो के बाद होते है उनका स्थान भारतीय साहित्य के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित है।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का (जन्मकाल 24 मार्च 1907) जन्म स्थान **फरूखाबा** है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज, प्रयाग मे हुई। इन्होने 1933 ई मे प्रयाग विश्व विद्यालय से सस्कृत मे एम ए की उपाधि ली।[101] छायावादी चतुष्टय मे अन्य किसी कवि ने इतनी उच्च विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। परीक्षाफल

की दृष्टि से महादेवी वर्मा का छात्र जीवन प्रथम कोटि का था पुरस्कारो और पदको से भरा हुआ। इनके नाना बृजभाषा मे अच्छी कविताए लिखते थे सभ्वत इसी कारण इन्होने प्रारम्भ मे वृजभाषा मे लिखना प्रारम्भ किया।[102]

महादेवी जी एक कुशल चित्रकार भी थी, इसलिए इनकी कविताओ मे चित्रो जैसी सरचना का आभास प्राय मिला करता है।[103] विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त करने के समय मे ही महादेवी जी गाधी जी के सम्पर्क मे आई। उनकी प्रेरणा से विदेश यात्रा स्थगित कर हिन्दी के माध्यम से नारी शिक्षा प्रसार हेतु 'प्रयाग महिला विद्यापीठ महाविद्यालय की स्थापना तथा चाद मासिक पत्रिका के सपादन का भार सम्भाला।[104] चाद पत्रिका और महादेवी एक दूसरे के पूरक हो गये। चाद पत्रिका मे महादेवी की अनेक रचनाए प्रकाशित हुई। सपादन का भार सम्भालने से पूर्व ही सरस्वती, चाद, मर्यादा मे निरन्तर रचनाए प्रकाशित हो रही थीं। चाद मे ही आपकी वरदान कविता प्रकाशित हुई –

तरल आसू की लडिया गूथ

इन्होने काटी काली रात

निराशा का सूना निर्माल्य

चढाकर देखा फीका प्रात.। [105]

महादेवी ने चाद पत्रिका के अतरिक्त 'महिला' और 'साहित्यकार' का सफल सपादन भी किया। महादेवी की साहित्यिक और रचनात्मक कार्यो मे गहरी रूचि रही है। 1944 मे इन्ही अन्तर्भावो से ओत प्रोत होकर 'साहित्यकार ससद' की स्थापना की और सहित्यकार ससद के तत्वाधान मे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन का आयोजन किया।[106]

महादेवी का पारिवारिक जीवन जितना कष्टपूर्ण रहा उतना ही उज्ज्वल साहित्यिक जीवन। साहित्यकार ससद भवन मे राष्टपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद द्वारा "वाणीमन्दिर" का शिलान्यास कराया। साहित्यकार ससद मे प्रसाद पर्व का आयोजन

किया। 1956 मे उनके साहित्यिक योगदान को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ने उन्हे पद्म विभूषण से सम्मानित किया।[107]

काव्य साधना

महादेवी की काव्य कृतिया सख्या या परिमाण की दृष्टि से प्रचुर नही है। प्रकाशित रचनाओ के आधार पर इनका प्रमुख रचना काल 'नीहार' और 'दीप शिखा' के बीच 1924 से 1942 तक फैला हुआ है। सन् 1942 के बाद इनकी बहुत कम रचनाए प्रकाश मे आई है। डॉ नगेन्द्र ने उचित ही लिखा है कि सन् 1950 के बाद महादेवी जी की प्रख्या ने एक प्रकार से विराम ले लिया।[108] नीहार से लेकर दीपशिखा तक मे प्रकाशित इनके गीतो की कुल सख्या लगभग 236 है। इतना कम लिखकर इतना महत्व अर्जित कर लेना इस बात का द्योतक है कि आज के अतिलेखन के युग मे भी गुण परिमाण से सर्वथा पराजित नही हुआ है।

नीहार (1930) – नीहार महादेवी जी की कालजयी कृति है जिसका प्रथम प्रकाशन सन् 1930 मे गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार इलाहाबाद से हुआ। विसर्जन, मिलन, अतिथि से, मिटने का खेल, ससार, अधिकार कौन, मेरा राज्य, चाह, सूनापन, सदेह, निर्वाण समाधि के दीप से, अभिमान, उस पार मेरी साध, स्वप्न आना, निश्चय, अनुरोध, तब, मुर्झाया फूल, कहा, उत्तर, फिर एक बार, उनका प्यार, आसू, मेरा एकान्त, उनसे, मेरा जीवन, सूना सदेश, प्रतीक्षा, विस्मृति, अनन्त की ओर, स्मारक, मोल, दीप, वरदान, स्मृति, याद, नीरव भाषण, अनोखी भूल, आसू की माला, फूल, खोज, जो तुम आ जाते एक बार, परिचय, शीर्षक कविताए है जो 1927 से 1929 के बीच मे लिखी गई।

सग्रह की भूमिका हरिऔध जी ने लिखी है वह इसे छायावाद की कृति मानते है "आजकल जिसे छायावाद कहते है, इस ग्रथ की अधिकाश कविताए उसी ढग की है। छायावाद किसे कहते हे ? उसे छायावाद रहना चाहिए अथवा रहस्यवाद

यह वादग्रस्त विषय है।'[109]

महादेवी जी की इस प्रथम रचना नीहार मे अध्यात्म की आकुल अभिव्यक्ति है, एक जिज्ञासा है, एक विस्मय है और एक विदग्ध ह्रदय की करूणा है। सृष्टि निर्माण के समय मे ही विश्व की पलको मे सु ख दु ख की भाति अनेक द्वन्द्वात्मक स्वप्न, भर दिए गए थे, प्रत्यक्ष दिन रात तो उसी के स्थूल रूपक मात्र है। उसी सृस्टा की भाति कवि अपनी अनुभूति भावना जन्य अश्रु ह्यासमयी सृष्टि की रचना करता है। जीवन मे दोनो की स्थिति भी स्पष्ट है।[110]

सुख दुख की इसी अनुभूति, अपनी वर्तमान वियोग अवस्था पर दु ख तथा भविष्य मिलन की साधना उसके निरन्तर प्रयत्न का प्राण है। महादेवी वर्मा के काव्य का यही प्रथम चरण है, इसमे उन्होने एक स्नेही की साधना, एक दार्शनिक की तन्यमता तथा एक विरागी की करूणा की मार्मिकता का सम्मोहन दिया है। इस रचना से हम उनके भावो मे दीपक की लौ की सजलता तथा सरिता के शाश्वत प्रवाह की शीतलता का सहज ही मे आभास पा लेते है।[111]

नीहार की रचनाओ से ऐसा प्रतीत होता है कि कवि की आत्मा का अपने प्रियतम से वियोग हुआ है। इस बिछुडन मे इतनी वेदना है और इस वेदना मे इतनी तीव्रता है कि उसका जीवन विरह मय हो गया है। वह अपने प्रियतम से मिलने के लिए विह्वल है। मिलन के मनुहारो की सीमा समाप्त हो चुकी है फिर भी मिलन की सम्भावना नही दीखती। निरन्तर इस प्रकार के कार्यकलाप को करते–करते कहना पडता है –

''गये तब से कितने युग बीत

हुए कितने दीपक निर्माण,

नहीं पर मैने पाया सीख

तुम्हारा सा मन मोहन गान ।''[112]

कवि को अपने प्रियतम से बिछुडे लम्बा अतराल हो गया, मिलन की

सम्भावनाए क्षीण हो गयी है फिर भी कवि को अपनी लगन पर, अपनी खोज पर और सबसे बढकर अपनी साधना पर विश्वास है। अत मे अपने को उसी आराध्य मे आत्मसात कर लेना है, यह उसका निश्चित निश्चय है। यह पक्तिया विश्वास की सासो मे ही जीवित है –

जब असीम से ही जाएगा

मेरी लघु सीमा का मेल।

देखोगे तुम देव ! अमरता

खेलेगी मिटने का खेल।।[113]

सुख और दु ख दोनो ही उस लोक तक पहुचने के साधन है। इसलिए तो वह परमात्मा दु खियो के दु ख से करूणामय है और सुखियो के सु ख से सच्चिदानद। एक का ही दो रूप हो गया है, साधना के कारण फिर भी इन रूपो मे भिन्नता नहीं है। देवी जी ससार को दु खमय देखती है। क्योकि उनके हृदय मे पीडा है और इसी वेदना के बल पर वह करूणामय को पाना चाहती है। उनकी टीस कसक, पीडा वेदना की मूक अभिव्यक्ति नीहार के रूप मे हुई है।

रश्मि (1932) – रश्मि महादेवी जी की काव्य यात्रा का दूसरा चरण है, 1932 मे यह साहित्य भवन लि प्रयाग से प्रकाशित हुई। रश्मि मे, रश्मि, सुधि, गीत, दु ख, अतृप्ति, जीवन दीप, कौन है? जीवन, आवाहन, वे दिन, आशा, मेरा पता, गीत पहिचान, अलि से, उपालम्ब, निमृत मिलन, दुविधा, मै और तू उनसे, रहस्य, स्मृति, उलझन, प्रश्न, विनिमय, देखो, पपीते से, अन्त मे, मृत्यु से, जब, क्रम, समाधि से, क्यो? कभी शीर्षक कविताए सग्रहीत है।

रश्मि मे महादेवी की कुछ प्रारम्भिक तथा कुछ बाद की रचनाए सकलित हैं इसलिए महादेवी जी को यह सग्रह अत्यन्त प्रिय है "रश्मि मे मेरी कुछ नई कुछ पुरानी रचनाए सग्रहीत हैं। इसके विषय मे मै क्या कहू? यह मेरे इतने निकट है उसका वास्तविक मूल्य आकना मेरे लिए सम्भव नही, आखो मे देखने की शक्ति होने पर भी

उनसे मिलाकर रखी वस्तु कही स्पष्ट दिखाई देती है ? हॉ इतना कहने मे मुझे सकोच न होगा मै स्वय अनित्य होकर भी जिन प्रिय वस्तुओ को नित्यता की कामना करने से नही हिचकती, यह उन्ही मे से एक है।"[114]

यही कारण है कि उन्हे अपनी इस कृति को किसी वाद में रखना पसद नहीं "छायावाद के अन्तर्गत न जाने कितने वाद है, मेरी रचना का कहा स्थान है, मै नहीं जानती जहा जिसका जी चाहे रखे। कविता लिखने का ध्येय उसे किसी वाद के अन्तर्गत रखना ही तो नही जो मै चिता करू।[115]

नीहार मे देवी जी की आध्यात्मिक भावनाए अपने शिशु रूप मे थी, उनकी अभिव्यक्ति मे प्रौढता की अपेक्षा अल्हडता ही अधिक थी। उनकी उस उत्सुकता मे साधना की अपेक्षा साधो का अधिक प्राधान्य था वही शिशु सुलभ हठ, निराशा, आशा, तथा वस्तुओ से सामयिक समझौता करने की बात एव कल्पना की अतिरजना भी उस समय की आधार भूमि थी। अब रश्मि नाम के अनुसार ही उस आध्यात्मिक लोक की वास्तव मे एक प्रकाश किरण है। इसकी सभी अभिव्यक्तिया अनुभूति मय है। इसमे जीवन की हर एक गति का एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो कवि की साधना से सयमित और सुसचालित है।[116]

रश्मि मे देवी जी ने चेतना तथा भावना का बहुत ही सुन्दर सम्मिश्रण किया है, चेतना से अपने काव्य पथ की विवेचना तथा भावना से उस ओर बढने की अटूटआकुलता उन्होने ली है। उनके दर्शन ने जग जीवन की नश्वरता को बहुत ही स्पष्ट रूप दिया है, सम्भवत इसमे देवी जी को अपने आध्यात्म के प्रति और ममता बढ गई हो। नीहार की आख मिचौनी 'रश्मि मे आकर एक सुन्दर दृष्टि बिन्दु बन जाती है।[117]

नीहार की भाति यह भी वेदना प्रधान काव्य है। इसमे भी जीवन की विकल अनुभूति प्रदर्शित होती है, उनका हृदय किसी अभाव का अनुभव करता है और उसी को पाने के लिए वह विह्वल सा बना हुआ है किन्तु अभी तक उसकी आराधना पूरी नहीं हुई है।

नीहार और रश्मि की कवियत्री मे कोई विशेष भिन्नता नही पाई जाती। दोनो मे ही दु ख एव निराशा की भावना की अधिकता है। यहा भी वही मूक मिलन और मूक प्रणय का चित्रण मिलता है। रश्मि मे भाषा एव भाव का क्रमश विकास पाया जाता है। नीहार और रश्मि मे एक विशेष भिन्नता है और वह यह है कि इसमे कवि के उपाष्य का दार्शनिक दर्शन प्राप्त होता है –

''रजत रश्मियो की छाया मे धूमिल घन सा वह आता,

इस निदाघ के मानस मे करूणा के स्रोत वहा जाता !

उसमे मर्म छिपा जीवन का,

एक तार अगणित कम्पन्न का

एक सूत्र सबके बन्धन का

ससृति के सूने पृष्ठो मे करूण काव्य वह लिख जाता।''[118]

नीरजा (1935) – नीरजा महादेवी जी का तीसरा काव्य सग्रह है। नीहार एव रश्मि की अपेक्षा नीरजा मे भावो की व्यापकता अधिक है। भावो का सौन्दर्य जो नीरजा मे है वह पिछली दोनो कृतियो मे नही।

मानव हृदय जब विरह वेदना से सतप्त हो जाता है, किन्तु यह अवस्था बहुत दिनो तक नही रहती। जब वेदना और निराशा की ज्वाला परिपूर्ण रूप से प्रज्वलित होती है तब वह एक प्रकार से पागल हो उठता है और इसी स्थिति मे गीत का निर्माण होता है। महादेवी जी की यह पुस्तक भी गीतो का सग्रह है। यह आपकी कविताओ का तीसरा सग्रह है और साहित्यकारो के मतानुसार आपकी सर्व सुन्दर कृति है। इस कथन की पुष्टि मे केवल इतना ही कहना यथेष्ट है कि इसी पुस्तक पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पारितोषिक प्रदान किया जा चुका है।[119]

नीरजा मे महादेवी जी की सम्पूर्ण भावनाए अपने प्रियतम की आराधना मे व्यस्त है। नीरजा की कविताए बडी ही मार्मिक हुई है, 'तुम सो जाओ मै गाऊ', लय

गीत मदिर लय ताल अमर', 'जग करूण करूण मै मधुर मधुर, 'लाये कौ। सदेश नये घन', जग ओ मुरली की मतवाली , प्राण पिक प्रिय नाम रे कह', कविताओ से उसी विह्वल आत्मानद का परिचय मिलता है।[120]

साध्यगीत (1936) – महादेवी का चौथा काव्य सग्रह साध्यगीत 1936 मे प्रकाशित हुआ, जिसमे 1934–36 ई की अवधि मे रचे गये पैतालीस गीत सग्रहीत है। इस सग्रह की भूमिका महादेवी के काव्य सिद्धात और कला चेतना के विकास को समझने की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। कवियत्री ने इसमे पहली बार गीति सिद्धान्त, प्रकृति बोध और चित्र कला सबधी स्थापनाओ को इतने विशिष्ट प्रखर तथा युक्ति युक्त ढग से प्रतिपादित किया है।[121]

तन्मयता की जिस अवस्था मे शब्दो और छन्दो की गतिविधि खो सी जाती है, उसी अवस्था मे गान प्रारम्भ होता है। साधना के स्वरो और भावना के पदो मे इसकी रचना हुई है। महादेवी जी का वेदना प्रधान दु ख वाद इसमे सरस सुखमय दिखाई देने लगता है। दु ख के सु खमय स्परूप का निरूपण किसी अन्य काव्य मे ऐसा नही है।[122]

महादेवी जी की इस गीत प्रधान रचना मे हृदय की आतुरता, दर्शन का असतोष, बुद्धि की विवेचना, तथा भावनाओ की आकुल आकाक्षा सभी का इस रचना मे एक स्वाभाविक सम्मिश्रण है। नीरजा मे जिन बातो की कमी रह गई थी उनकी सभी प्रकार से पूर्ति साध्यगीत मे हुई है।

यामा (1940) – यामा महादेवी जी की पाचवी कृति है इसमे इससे पूर्व प्रकाशित हुई रचनाओ नीहार, रश्मि, नीरजा, और साध्यगीत की कविताओ को सकलित किया गया है। इस प्रकार यामा मे सकलित कुल गीतो की सख्या एक सौ पचासी है जो 1924 से 1936 के बीच लिखे गये है। अत यामा कवियत्री की काव्य साधना का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती है।[123]

दीप शिखा (1942) – महादेवी जी की छठी काव्य कृति दीपशिखा है जिसका प्रकाशन 1942 मे किताबिस्तान इलाहाबाद से हुआ। इसमे 51 गीत सग्रहीत है जो 1936 से 1942 के बीच रचे गये है।[124]

1942 मे विश्व मे युद्ध के विषाक्त बादल छाए हुए थे। कविजनोचित मर्मस्पर्शता के साथ महादेवी जी का कर्तव्य था कि वे जीवन की व्यापकता तथा मार्मिक परिस्थिति का उद्घाटन करते हुए अपने काव्य मन्दिर का शिलान्यास करे। महादेवी जी ने इस तथ्य का यथा सम्भव ध्यान रखा है किन्तु वह तो करूणा की वाहक है –

मै गति विह्वल,

पाथेय रहे तेरा दृगजल

आवास मिले भू-का अञ्चल

मै करूणा की वाहक अभिनव।[125]

विश्व की पीडित मानवता के प्रति महादेवी की दीपशिखा उसी अमर सदेश का विधान करती है, जो प्रथम महायुद्ध के बाद कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतॉञ्जली ने किया था। अखिल मानवता एक दिन जीवन के कलह कोलाहल से थककर एक दिन इन गीतो की छाया मे शीतल विश्राम पायेगी यह निश्चित है। दीपशिखा मे एक विशेष मानसिक स्थिति स्पष्ट होती है 'दीप मेरे जल अकम्पित, पूछता क्यो शेष कितनी रात' तथा

'यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो' के माध्यम से यह स्पष्ट सदेश जाता है कि विश्व की इस अधकार मयी स्थिति मे कवि अपने साधना के दीपक को आगे आने वाले प्रात प्रकाश तक अडिग धैर्य एव अदम्य उत्साह के साथ जलाना चाहता है।

दीप मेरे जल अकम्पित,

घुल प्रचञ्चल

सिन्धु का उच्छवास घन है

तडित तम का विकल मन है

भीति क्या नभ है व्यथा का,

आसुओ के सिक्त अञ्चल ।[125]

गद्य साहित्य

छायावादी कवि चतुष्टय की विख्यात कवियत्री महादेवी वर्मा जिस प्रकार श्रेष्ठ कवियत्री है उसी प्रकार श्रेष्ठ गद्यकार है।[127] सस्कृत उक्ति कि गद्य कवियो की परख के लिए कसौटी जैसा है, अनायास महादेवी के लिए चरितार्थ होता है। सफल कवि की अगली परीक्षा गद्य रचना मे होती है।[128]

गद्य का सबध बोल चाल से है और किसी रूप मे वक्तृता से है । वक्तृता तो आज हासोन्मुख कला है। पिछले दिनो के अच्छे सार्वजनिक वक्ताओ मे जयप्रकाश नारायण, और राम मनोहर लोहिया के नाम लिए जा सकते है। साहित्यिक सदर्भ मे महादेवी वर्मा, अज्ञेय, और हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम लिया जा सकता है।[129]

अच्छे गद्य की पहचान यह हो सकती है कि सहसा वह किसी रूप मे वर्गीकृत न हो सके और स्वय मे प्रभुत्व सम्पन्न गद्य के रूप मे पहिचाना जाए। हिन्दी मे इस स्थिति पर महादेवी का गद्य आता है। बहुत बार उनकी एक रचना (उदाहरणार्थ चीनी फेरी वाला या 'घीसा') कही कहानी के रूप मे सकलित है। तो कहीं सस्मरण और रेखाचित्र के रूप मे। यह गद्य का जादू है जो कवियो के लिए निकस बताया गया है।[130]

भारत की किसी भी भाषा मे कोई ऐसा ललित गद्य लिखने वाला नहीं जैसी महादेवी। फिर महादेवी का गद्य किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नही है। सस्कृति, देश,

भाषा, साहित्य, समाज, नारी जीवन, राष्ट्रीयता इतिहास, सब कुछ तो नापा है महादेवी जी की लेखनी ने। ऐसा कोई भी विषय नही जिस पर महादेवी की दृष्टि न पडी हो, उस पर उनकी कलम न चली हो।[131]

अतीत के चलचित्र – अतीत के चलचित्र महादेवी जी की प्रथम गद्य पुस्तक है जो भारती भण्डार इलाहाबाद से स 2098 मे प्रकाशित हुई। रचना चाहे गद्य की हो पद्य की उसमे साहित्यकार के व्यक्तित्व का भाव अवश्य रहता है। साहित्यकार जो कुछ लिखता है, उस पर उनके अनुभवो विचारो तथा मनोभावो की छाप उसी प्रकार रहती है जिस प्रकार वस्तु की स्थिति के साथ उसकी छाया। यह छाया कभी स्पष्ट और कभी अस्पष्ट होती है, किन्तु उसका असित्तव अमिट रहता है।[132]

अतीत के चलचित्र मे महादेवी जी के जीवन एव अनुभवो की जीवन्त अभिव्यक्ति हुई है। महादेवी स्वय स्वीकार करती है "इन स्मृति चित्रो मे मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभाविक भी था अधेरे की वस्तुओ को हम अपने प्रकाश की धुधली या उजली परिधि मे लाकर ही देख पाते है।, उसके बाहर तो अनन्त अधकार के अश है। मेरे जीवन की परिधि के भीतर खडे होकर ये चरित्र जैसा परिचय दे पाते है, वह बाहर रूपान्तरित हो जाएगा।[133]

अतीत के चलचित्र मे महादेवी जी की ग्यारह सस्मरणात्मक कहानियो का सकलन है। इस चलचित्र की प्रष्ठभूमि महादेवी का बचपन और उनका बूढा नौकर रामा है 'कहानी एक युग पुरानी करूणा से भीगी है। मेरे एक परिचित पारिवार मे, स्वामिनी ने अपने एक बृद्ध सेवक को किसी तुच्छ से अपराध पर निर्वासन का दण्ड दे डाला और फिर उनका अहकार उस अकारण दण्ड के लिए असख्य बार मागी गई क्षमा का दान भी न दे सका।

ऐसी स्थिति मे वह दरिद्र पर स्नेह से समृद्ध बूढा कभी गेदे के मुरझाए हुए दो फूल, कभी मिट्‌टी का एक रगहीन खिलौना लेकर अपने नन्हे प्रभुओ की प्रतीक्षा मे पुल पर बैठा रहता था। नये नौकर के साथ घूमने जाते हुए बालको को जब वह अपने तुच्छ उपहार देकर लौटता तब उसकी आखे गीली हो जातीं थी।

सन् 30 मे उसी भृत्य को देखकर मुझे अपने बचपन और उसे अपनी ममता से घेरे हुए रामा इस तरह स्मरण आए कि अतीत की अधूरी कथा लिखने के लिए मन व्याकुल हो उठा।[134]

श्रखला की कडिया – श्रखला की कडिया महादेवी जी कि महत्वपूर्ण गद्य कृति है जो 1942 मे साधना सदन इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। श्रखला की कडिया कृति से ही महादेवी का गद्यकार का रूप पहचाना गया। जब श्रखला की कडिया प्रकाशित हुई उस समय भारत परतत्र था, भारत की नारी परतत्र थी, एक सामाजिक क्राति हो रही थी और इस सामाजिक चेतना को महादेवी जी ने अपने लेखो के माध्यम से जन–जन तक पहुचाया।[135]

श्रखला की कडिया मे नारी जीवन के उन अभिशापो का उद्घाटन किया गया है जिन्होने नारी जाति को युगो से मानवता का कलक बना रखा है। साथ ही उसकी मुक्ति के साधनो का भी सुझाव दिया है। भारतीय नारी की जटिल एव विषम परिस्थितियो को महादेवी ने एक विचारक की भाति अनेक दृष्टिकोणो से देखने की चेष्टा की है।[136]

विचारात्मक निबधो की इस शैली मे केवल निष्प्राण शब्दो की भरमार ही नहीं वरन् जीवन की अनुभूतियो की सच्चाई और साख है।युग चेतना की माग के रूप मे महादेवी जी ने इस विषय को नही अपनाया यह तो उनके जीवन के विकास पथ की प्रतिष्ठा है।

महादेवी के गद्य साहित्य की कडी मे एक और महत्वपूर्ण गद्य कृति 'क्षणदा' है जो भारती भण्डार इलाहाबाद से स 2013 मे प्रकाशित हुई। क्षणदा मे महादेवी का चितक का रूप उभर कर सामने आया, उन्होने स्वीकार किया कि इसमे मेरे कुछ चितन के क्षण एकत्र है।[137] करूणा का सदेश वाहक, सस्कृति का प्रश्न, कसौटी पर, स्वर्ग का एक कोना और हमारा चित्रमय साहित्य, कुछ विचार, सुई दो रानी, हमारा देश और राष्ट्र भाषा, 'साहित्य और साहित्यकार' कृति के श्रेष्ठ निबध है।

महादेवी जी ने अनेक साहित्यिक निबधो की रचना की। उनके साहित्यिक लेखो मे महाकरूणा के अवतार गौतम बुद्ध के बुद्धत्व, भारतीय सस्कृति कला, साहित्य, साहित्यकार सम्पादक, आधुनिक लेखक, अभिनय कला, राष्ट्रभाषा, विज्ञान विषयक मीमासाए पूर्ण रूपेण मुखरित हुई है। महादेवी ने इन विषयो पर रचे अपने गद्य मे एक ऐतिहासिक एकसूत्रता भी दी है और साहित्य को चितन सत्य के रूप मे भी स्वीकार किया जाता है। व्यक्ति मे समष्टि और समष्टि मे व्यक्ति की खोज अनेकात्मकता मे एकता, एकता मे अनेकात्मकता की भाति जीवन ओर साहित्य मे सामजस्य को प्रतिपादित करती जलती है।[138]

महादेवी का गद्य साहित्य मूलत समाज के वर्तमान रूप से जुडा हुआ है। उनका गद्य जन के पीडित जीवन का अर्तस्वर है, लेकिन वह किसी हारे हुए विद्रोही का स्वर नहीं, अगडाई लेकर उठने को बैचेन विद्रोही की हुकार है। यही कारण है कि डा राममनोहर लोहिया महादेवी को भारत का सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखक मानते हैं।[139]

महादेवी ने जितना श्रेष्ठ काव्य लिखा उतना ही श्रेष्ठ गद्य कहानी, निबध सस्मरण आदि सभी विधाओ मे आपने अपनी लेखनी चलाई। चितन के क्षण, पथ के साथी, स्मृति की रेखाए आदि अन्य उत्कृष्ठ रचनाए है।

महादेवी की साहित्य साधना अपने आप मे एक महान इतिहास और यथार्थ है।[140] इस बीसवी शताब्दी को महादेवी पर गर्व होगा। यद्यपि साहित्य के खोजियो के लिए यह सिरदर्द का विषय होगा कि महादेवी को इतनी गरिमा युग ने दी या महादेवी ने युग को गढा। महादेवी जी आजीवन भारतीय साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहीं, महादेवी जी के इस अथक प्रयास को कभी भूला जा सकेगा? महादेवी साहित्य के पाठक एव इतिहास एव साहित्य के विद्यार्थी उनके गद्य के अनन्तयुगो तक ऋणी रहेगे।

सदर्भ एव फुट नोट

1 मिश्र भगीरथ , स्वाभिमानी और ओजस्वी कवि निराला, सम्मेलन पत्रिका श्रद्धाजली विशेषाक (भाग 48) पृष्ठ 328

2 वही , पृष्ठ 328

3 डा नगेन्द , 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', मयूर पैपर बैक प्रकाशन, 1997, पृष्ठ 547

4 शर्मा राम विलास , निराला की साहित्य साधना, (खण्ड 1) राज कमल प्रकाशन, 1969, पृष्ठ 13

5 वही , पृष्ठ 14

6 वही , पृष्ठ 39

7 वही , पृष्ठ 14–15

8 दीक्षित सूर्यकात, 'निराला की आत्मकथा' , गगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1970, पृष्ठ 99

9 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड 9, नागरी प्रचा सभा काशी, स 2034, पृष्ठ 164

10 प्रभा , जून 1, 1920

11 आदर्श , नव–दिस 1922

12 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका (द्वितीय), भारती भण्डार इला 1937, पृष्ठ 1 (भूमिका)

13 माधुरी , अप्रैल 23, 1923

14 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका, भारती भण्डार इला 1937, पृष्ठ 1 (भूमिका)

1 मिश्र भगीरथ , स्वाभिमानी और ओजस्वी कवि निराला, सम्मेलन पत्रिका श्रद्धाजली विशेषाक (भाग 48) पृष्ठ 328

2 वही , पृष्ठ 328

3 डा नगेन्द्र , 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'', मयूर पैपर बैक प्रकाशन, 1997, पृष्ठ 547

4 शर्मा राम विलास , निराला की साहित्य साधना, (खण्ड 1) राज कमल प्रकाशन, 1969, पृष्ठ 13

5 वही , पृष्ठ 14

6 वही , पृष्ठ 39

7 वही , पृष्ठ 14–15

8 दीक्षित सूर्यकात, 'निराला की आत्मकथा' , गगा पुस्तक माला लखनऊ, 1970, पृष्ठ 99

9 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड 9 नागरी प्रचा सभा काशी, स 2034, पृष्ठ 164

10 प्रभा , जून 1, 1920

11 आदर्श , नव–दिस 1922

12 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका (द्वितीय), भारती भण्डार इला 1937, पृष्ठ 1 (भूमिका)

13 माधुरी , अप्रैल 23, 1923

14 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका, भारती भण्डार इला 1937, पृष्ठ 1 (भूमिका)

15 नवल नद किशोर , (सपा) निराला रचनावली, भाग 1, राजकमल प्रका 1983, पृष्ठ 14

16 आदर्श , नवम्बर–दिसम्बर 1922

17 माधुरी , जुलाई 29, 1923

18 शर्मा वेदव्रत , निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, 1977, पृष्ठ 91

19 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , परिमल, गगा पुस्तक माला लखनऊ सवत 1986 (वि) पृष्ठ 1

20 वही , पृष्ठ 3–6

21 मतवाला , सितम्बर 29, 1923

22 शर्मा वेदव्रत , 'निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन' 1977 पृष्ठ 92

23 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , गीतिका, भारती भण्डार इलाहाबाद 1936, पृष्ठ 5

24 वही , पृष्ठ 1

25 शुक्ल रामचन्द्र , हिन्दी साहित्य का इतिहास, दशम सस्करण पृष्ठ 716–17

26 गीतिका, गीत 58

27 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका, भारती भण्डार इलाहाबाद 1937, प्राक्कथन पृष्ठ 1

28 शर्मा वेदव्रत , 'निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, 1977 पृष्ठ 93

29 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका 1937, पृष्ठ 119 (सरोज स्मृति शीर्षक कविता)

30 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , तुलसीदास, भारती भण्डार इला 1938, पृष्ठ 1

31 वही, पृष्ठ 34

32 वही, पृष्ठ 3

33 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , कुकुरमुत्ता, युग मन्दिर, उन्नाव 1942 पृष्ठ 3

34 कुकुरमुत्ता, सस्करण 11, पृष्ठ 6–7

35 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अणिमा, युग मदिर उन्नाव, भूमिका, 1943, पृष्ठ 1–2

36 वही, पृष्ठ 20

37 वही, पृष्ठ 55

38 वही, पृष्ठ 58

39 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , बेला, हिन्दुस्तानी पब्लिकसेन्स, इला 1943, पृष्ठ 2

40 वही, पृष्ठ 29

41 वही, पृष्ठ 10

42 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , नये पत्ते, लोकभारती इलाहाबाद, 1946, पृष्ठ 1

43 नवल नद किशोर , (सपा) निराला रचनावली भाग–2, राजकमल प्रका नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ 13

44 शर्मा वेदव्रत , निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, आर्य बुक डिपो नई दिल्ली, 1977, पृष्ठ 97

45 'सुधा' मासिक, लखनऊ अगस्त 1930 पृष्ठ 328

46 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अप्सरा, गगा पुस्तक माला लखनऊ, 1931, पृष्ठ 1

47 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अलका, गगा पुस्तक माला लखनऊ, 1933, पृष्ठ 39

48 वही, पृष्ठ 39

49 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , प्रभावती सरस्वती पुस्तक माला लखनऊ, 1936, पृष्ठ 1

50 नवल नद किशोर , (सपा) निराला रचनावली भाग–3 राजकमल प्रका नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ 11

51 सुधा, जन 16, 1934, पृष्ठ 38–39

53 वही, पृष्ठ 29,

54 माधुरी, अक्टूबर 1938, पृष्ठ 18

55 रूपाभ, अप्रैल 1939, पृष्ठ 18

56 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , बिल्लेसुर बकरिहा, किताब महल इला 1946, पृष्ठ 5

57 वही, पृष्ठ 2–3

58 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , काले कारनामे, कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग 1950, पृष्ठ 4

59 रूपाभ, फरवरी, 1939, पृष्ठ 10

60 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , लिली, गगा पुस्तक माला लखनऊ, 1934, पृष्ठ 1

61 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अलका, सखी, सरस्वती पुस्तक माला लखनऊ, 1935, पृष्ठ 1

62 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , सुकुल की बीबी, भारती भण्डार इलाहाबाद, 1941, पृष्ठ 3

63 पत सुमित्रा नदन , अतिमा (द्वितीय सस्करण) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 70

64 पत सुमित्रा नदन , शिल्प और दर्शन, 1961, पृष्ठ 185

65 पत सुमित्रा नदन , साठ वर्ष, एक रेखाकन (प्रथम सस्करण) पृष्ठ 14

66 जोशी, शाति, सुमित्रा नदन पत जीवन और साहित्य, खण्ड 1 राजकमल प्रका नई दिल्ली 1976, पृष्ठ 44,

67 पत सुमित्रा नदन , शिल्प और दर्शन, 1961, पृष्ठ 222

68 सुल्ताना, किश्वर , पत काव्य मे कला शिल्प और सौन्दर्य (इ वि वि की डी फिल उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबध) प्रकाशित 1985 पृष्ठ 42

69 प, सुमित्रा नदन , पल्लव, 1926, पृष्ठ 1

70 वही, पृष्ठ 6

71 बच्चन हरि वश राय , कवियो मे सौम्य सत सुमित्रा नदन पत, पृष्ठ 178

72 जोशी शाति , (सपा) पत ग्रथावाली, भाग 1, 1993, पृष्ठ 76

73 पत सुमित्रा नदन , शिल्प और दर्शन, पृष्ठ 33

74 जोशी शाति , (सपा) सुमित्रा नदन पत ग्रथावली भाग 1, 1993, पृष्ठ 121

75 पत सुमित्रा नदन , ग्रन्थि, 1929, पृष्ठ 34

76 पत सुमित्रा नदन , गुजन, 1931, पृष्ठ 79

77 पत सुमित्रा नदन , युगवाणी, 1929, पृष्ठ 34

78 जोशी शाति , (सपा) पत ग्रथावली भाग 2, 1993, पृष्ठ 78–79

79 पत सुमित्रा नदन , ग्राम्या, 1940, पृष्ठ 1 (भूमिका)

80 पत सुमित्रा नदन , स्वर्णकिरण, 1947, पृष्ठ 66,

81 पत सुमित्रा नदन , स्वर्ण धूलि, 1947, पृष्ठ 66

82 पत सुमित्रा नदन , मधुज्वाल, 1947, पृष्ठ 1

83 पत सुमित्रा नदन , उत्तरा, 1949, पृष्ठ 1

84 पत सुमित्रा नदन , शिल्प और दर्शन, पृष्ठ 112

85 पत सुमित्रा नदन , उत्तरा, (भूमिका अश) पृष्ठ 3

86 जोशी शाति , पत ग्रथावली, भाग – 2 1993, पृष्ठ 3,

87 वही, पृष्ठ 3

88 जोशी शाति , (सपा) पत ग्रथावली भाग 1, 1993, पृष्ठ 3

89 वही, पृष्ठ 6

90 वही, पृष्ठ 5

91 पाण्डेय रामजी , सुमित्रा नदन पत व्यक्तित्व और कृतित्व, नेशनल पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ 203

92 वही, पृष्ठ 204

93 पत सुमित्रा नदन , पाच कहानिया, 1936, पृष्ठ 7–8

94 पाण्डेय रामजी , सुमित्रा नदन पत व्यक्तित्व और कृतित्व, नेशनल पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ 205

95 वही, पृष्ठ 206

96 वही, पृष्ठ 208

97 पत सुमित्रा नदन , ज्योत्स्ना, 1934, पृष्ठ 1

98 विष्ट शेरसिह , सुमित्रा नन्दन पत के साहित्य का ध्वनिवादी अध्ययन (कुमाऊ विश्वद्यालय की डी लिट उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबध) प्रकाशित 1990, पृष्ठ 290

99 साठ वर्ष एक रेखाकन, पत, ग्रथावली, भाग 6, पृष्ठ 160

100 जोशी, शाति , सुमित्रा नदन पत जीवन और साहित्य, पृष्ठ 357 – 365

101 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहत्य का वृहत इतिहास खण्ड 9, 1983, पृष्ठ 219

102 नगेन्द्र , हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पैपर बैक्स नई दिल्ली, 24वा सस्करण 1997, पृष्ठ 553

103 वही, पृष्ठ 553–554

104 शरद ओकार , महादेवी साहित्य, खण्ड 1, सेतु प्रकाशन झासी, 1969,

पृष्ठ 11

105 चाद, जनवरी 1929, पृष्ठ 1

106 शरद ओकार , महादेवी साहित्य, खण्ड 1 सेतु प्रकाशन झासी 1969, पृष्ठ 11

107 वही, पृष्ठ 12

108 पत सुमित्रा नदन , (सपा) महादेवी सस्मरण ग्रथ, प्रथम सस्करण, पृष्ठ 58

109 वर्मा महादेवी , नीहार, गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार इलाहाबाद, 1930, पृष्ठ 1

110 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969, पृष्ठ 245

111 वही, पृष्ठ 246

112 वर्मा महादेवी , नीहार, गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार इला 1930, पृष्ठ 2

113 वही, पृष्ठ 8

114 वर्मा, महादेवी , रश्मि (चतुर्थ सस्करण) साहित्य भवन, इला 1951, पृष्ठ 1

115 वही, पृष्ठ 3

116 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969, पृष्ठ 258

117 वही, पृष्ठ 258

118 वर्मा महादेवी , रश्मि (चतुर्थ सस्करण) साहित्य भवन, इला 1951, पृष्ठ 10

119 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969, पृष्ठ 279

120 वही, पृष्ठ 297

121 पाण्डेय सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड 9 पृष्ठ 225

122 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969, पृष्ठ 297

123 पाण्डेय, सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड 9 पृष्ठ 227

124 वही, पृष्ठ 228

126 वही, पृष्ठ 1

127 चतुर्वेदी रामस्वरूप , हिन्दी गद्य विन्यास और विकास लोकभारती इला 1996 पृष्ठ 246

128 वही, पृष्ठ 246

129 वही पृष्ठ 247

130 वही, पृष्ठ 247–248

131 शरद ओकार , महादेवी साहित्य (सपा) भाग 1 सेतु प्रका झासी 1969 पृष्ठ 6

132 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969 पृष्ठ 325

133 वर्मा महादेवी , अतीत के चलचित्र, प्रका भारती भण्डार इलाहाबाद, स 2098, पृष्ठ 2

134 वही, पृष्ठ 2

135 शरद ओकार , महादेवी साहित्य (सपा) भाग 1 सेतु प्रका झासी 1969 पृष्ठ 6

136 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969, पृष्ठ 332

137 वर्मा महादेवी , क्षणदा, प्रका भारती भण्डार इलाहाबाद, स 2013, पृष्ठ 1

138 शरद ओकार , महादेवी साहित्य (सपा) भाग 1 सेतु प्रका झासी 1969 पृष्ठ 8

139 पत सुमित्रा नदन , महादेवी अभिनदन ग्रथ (सपा) प्रका भारती परिषद प्रयाग, स 2021, पृष्ठ 2

140 वही, पृष्ठ 2–3

अध्याय -2

रामकुमार वर्मा और एकांकी

अध्याय-2

राम कुमा- वर्मा और बच्चन

निर्माण की जब प्रक्रिया आरम्भ होती है उससे कोई भी क्षेत्र अछूता नही रहता। 20वी शताब्दी के पूवार्द्ध मे इलाहाबाद मे जिस साहित्य निर्माण की प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ उससे कोई भी क्षेत्र अछूता नही रहा इस समय के साहित्यिक वातावरण को दो भागो मे आसानी से विभाजित किया जा सकता है। एक ओर तो नगर का साहित्यिक वातावरण जिसमे निराला, पत, महादेवी जैसे कवि साहित्य साधना कर रहे थे, दूसरी ओर इलाहाबाद विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण विश्वविद्यालय से जुडे साहित्यकारो की गतिविधियो का नगर के अन्य साहित्यकारो की गतिविधियो से पूरा साम्य था।

इस कालावधि मे विश्वविद्यालय से जुडे अनेक साहित्यकार हुए। इन साहित्यकारो मे दो मूर्धन्य साहित्यकार राम कुमार वर्मा और हरिवश राय बच्चन का नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

राम कुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितम्बर 1905 ई मे सागर के गोपालगज मोहल्ले मे हुआ। आपका शैशव मध्य प्रदेश मे ही बीता और शैशव मे ही अपनी माता जी से काव्य और सगीत के सस्कार पाए।[1]

सन् 1921 मे जब भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अपने पूरे जोर पर था उस समय रामकुमार वर्मा कक्षा 9वी के छात्र थे, आपने उस समय आन्दोलन मे बढकर हिस्सा लिया। वह काग्रेस का सदस्य बनाने के लिए गाव–गाव मे घूमने लगे। उन्ही दिनो अनेक राष्ट्रगीत स्वय लिखे।[2]

आन्दोलन समाप्त होने पर पढाई पुन प्रारम्भ की और 1925 मे जबलपुर के प्रसिद्ध राबर्टसन कालेज से इटर की परीक्षा पास की। इसके बाद अध्ययन के लिए वह इलाहाबाद आ गये। 1927 मे बीए और 1929 मे एमए की परीक्षा पास की।

एम ए की परीक्षा मे उनका विश्वविद्यालय मे स्थान प्रथम था छात्रावास के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी होने के कारण 'हालैण्ड स्वर्ण पदक' भी प्राप्त हुआ।[3]

1929 का वर्ष वर्माजी के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था इसी वर्ष आप विश्वविद्यालय मे प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। अब इलाहाबाद वर्मा जी का स्थायी निवास बन गया। काव्य साधना का अब क्षेत्र विस्तृत हो गया। निराला, पत, और महादेवी से सपर्क बढा। अध्ययन और अध्यापन की साधना से शीघ्र ही आपकी गणना विश्वविद्यालय के योग्यतम् शिक्षको मे होने लगी। 1937 मे वरिष्ठ प्रवक्ता और 1948 मे रीडर और 1959 प्रोफसेर, हुए तथा 1966 तक विभागाध्यक्ष रहे।

काव्य

राम कुमार वर्मा के काव्य को आसानी से तीन भागो मे रखा जा सकता है। प्रथम काल जिसमे उनकी 1919–29 की अवधि की रचनाओ को सम्मिलित किया जा सकता है। सर्वप्रथम 1922 मे वीर हम्मीर लिखा। यह 10 छोटे–छोटे सर्गो मे विभाजित है। इस खण्ड काव्य मे रणथम्बोर के इतिहास प्रसिद्ध वीर हम्मीर की शरणागत वत्सल्ता की गाथा है।

इसी अवधि मे 1927 मे 'चित्तौड की चिता' नामक खण्ड काव्य लिखा। इस समय वह प्रयाग आ चुके थे और बी ए के विद्यार्थी थे। स्वभावत यह श्रेष्ठ कृति है, जिसमे देशप्रेम के स्वर दिखाई देते है।

राम कुमार वर्मा की श्रेष्ठ काव्य कृतियो का रचना काल 1929 से प्रारम्भ होता है जिसे उनके साहित्य का विकास काल माना जाता है।

अजलि (1929) – अजलि का प्रकाशन साहित्य भवन प्रा लि इलाहाबाद से हुआ। अजलि का रचना काल 1929 रहा जबकि छायावाद अपने उत्कर्ष पर पहुच चुका था और छायावादी युग की चार विभूतियो ने युग को प्रभावति कर लिया था। इसलिए रचना पर छायावादी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है किन्तु डा वर्मा कृति को छायावाद की प्रथम सीढी प्रकृतिवाद मे रखना ही पसद करते है।[4]

हृदय की कौतूहल को शात करने वाली हृदय की भावनाओ को सुख देने वाली अनेक वस्तुओ और उनके काल्पनिक स्वरूपो की सृष्टि प्रकृति के गम्भीर विस्तार मे होती है।[5] हृदय की इन भावनाओ को प्रार्थना, ये गजरे तारो वाले, एकातगान, ओ समीर प्रात समीर, अतिम ससार, शिशिर सगीत, तिरस्कार, परिचय, विराट रूप, जीर्णग्रह, शीर्षक कविताओ ने साकार किया है।

अभिशाप (1930) – कवि की यह कृति 1930 मे ओझा बधु आश्रम प्रयाग से प्रकाशित हुई। इस कृति मे लेखक जीवन को नश्वर मानता है –

''नश्वर स्वर से कैसे गाऊ,

आज अनश्वर गीत?

जीवन की इस प्रथम हार मे

कैसे देखू जीत ?[6]

रूपराशि (1931) – वर्मा जी की यह महत्वपूर्ण कृति सरस्वती प्रेस काशी से प्रकाशित हुई। इस कृति मे छोटी–छोटी कविताए है। इसमे एक लम्बी कविता अपने मे ऐतिहासिक सत्य समेटे हुए है। कविता शाहजहा की मृत्यु के बाद दारा, शुजा, मुराद, और औरगजेब के बीच हुए सघर्ष को प्रतिबिम्बित करती है।[7]

निशीथ (1932) – यह कृति विश्व साहित्य प्रकाशन लाहौर से प्रकाशित हुई। यह बारह सर्गो का एक प्रबध काव्य है। कवि के सौन्दर्य और प्रेम विषयक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने मे बडी सहायक है। भावात्मक और कलात्मक उत्कृष्टता से भी यह कृति महत्वपूर्ण है।[8]

यह प्रतिकात्मक काव्य है जिसमे नायक सुकुमार और नायिका इदिरा मे परस्पर प्रेम है। इदिरा की सखी कमला भी सुकुमार से प्रेम करने लग जाती है। विफल मनोरथ होने पर वह एक कुचक्र रचती है। फलत इदिरा रमानिवास की झील मे कूदकर जान दे देती है और उसे बचाने के चक्कर मे सुकुमार भी वही डूब जाता है। कृति कल्पना पर आधारित है किन्तु यह कल्पना भी वेदना का परिचायक है –

मेरे मन के भाव बनेगे रग तूलिका रूप

उनसे ही खींचा जाएगा ऐसा चित्र अनूप

जिससे होगा जीवित मेरी करूणा का आख्यान

ओर वेदना का विलास नव विरहिणी सा ध्वनि गान। [9]

चित्ररेखा (1935) – चित्ररेखा का प्रकाशन 1935 मे चाद प्रेस इलाहाबाद से हुआ। यह वर्मा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृतियो मे से एक है। इस कृति मे वर्मा ने रहस्यवाद की उच्चतर भूमिका प्राप्त की है –

ओसो का हसता वालरूप, यह किसका है छविमय विलास

विहगो के कठो मे समोदयह कौन मर रहा है मिठास।[10]

कवि की इस सग्रह मे श्रेष्ठ भावपरक रचनाए है –

मै खोज रहा हू कोकिल स्वर।

बतला दो मेरे नील ब्योम मे इस ससृति से हू कातर।[11]

चन्द्र किरण (1937) – गगा ग्रथागार लखनऊ से 1937 मे इस कालजयी कृति का प्रकाशन हुआ। कवि का यह सकलन उसे रहस्यानुभूति की दिशा मे पहुचाने वाला है जहा उसकी रहस्यानुभूति और दार्शनिक चितन प्रतिफलन के एक बिन्दू पर सिमटते मिलते दीख पडते है।[12]

सग्रह की कविताओ की पक्तियो मे एक टीस , कसक, वेदना एव करूणा भरी है –

"मेरे जीवन मे एक बार तुम देखो तो अपना स्वरूप।

मै तुममें प्रतिबिम्बित होऊ तुम मुझमें होना ओ अनूप।।[13]

सकेत (1939) – सकेत का प्रकाशन मेहरचद लछमन दास नई दिल्ली द्वारा 1939 मे किया गया। कविवर वर्मा इस कृति मे निराशा के भवर से आशा के

ससार मे कदम रखते है –

सासो के चचल समीर मे,

जीवन द्वीप जलाऊ

वन प्रकाश की ज्योति

अधेरे मे छिपने को आऊ।[14]

दो क्षण (मिलन और विहर के क्षण) बीत जाने पर स्मृतियो का सार छोड जाते है। और स्मृतिया ? जो जलाती और जिलाती दोनो है। दाहक होते हुए भी ये स्मृतिया कितनी मधुर होती है। प्रिय के वियोग की पीडा मे प्रिय और भी अधिक भाता है। कवि वर्मा सोचते है कि कही उसकी बार–बार की पुकार से वह सोया हुआ प्रियतम जाग पडे तो कितना अच्छा हो। वह उसके मिलनानन्द का अवसर तो पा लेगा। इन्ही भावो को यह सकलन अपने आप मे समेटे हुए है।

आकाश गगा (1949) – कवि की इस कालजयी कृति का प्रकाशन रामनारायण लाल, इलाहाबाद द्वारा किया गया । इस सग्रह के गीतो मे जिस अनुभूति के दर्शन हुए है वह चितन की दृष्टि से रहस्यवाद की सीमाओ को स्पर्श करने मे प्रयत्नशील है।[15]

सग्रह के आलोक मण्डल मे प्रबधात्मक कविताए भी है।

सग्रह की कविताओ मे कवि का चितन अधिक प्रौढ़,

अनुभूति अधिक गहन, सर्वस्व समर्पण का भाव अधिक पूर्ण है,

अभिव्यजना अधिक समर्थ एव [illegible] है।[16]

एकांकी / नाटक

डॉ रामकुमार वर्मा का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक और चुम्बकीय था। वे भारतीय मनीषा के सस्कृति पुरूष थे। हिन्दी साहित्य को उन्होने जो कृतिया दी है

उसके लिए हिन्दी साहित्य उन्हे सदैव सम्मान देता रहेगा। वे छायावादी काव्य के प्राख्यात कवि थे ऐतिहासिक और सामाजिक नाटको के रचनाकार थे हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास के प्रणेता थे। अनेक समीक्षा ग्रथो और सस्मरण पोथियो के लेखक थे। इन सबके अतिरिक्त उन्हे सम्पूर्ण हिन्दी ससार ने एक स्वर से हिन्दी एकाकी के जनक के रूप मे स्वीकार किया है।[17]

एकाकी के क्षेत्र मे डा वर्मा का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब हिन्दी एकाकी का स्वरूप स्थिर नही हो पाया था इसके पूर्व जो भी प्रयास किए गये उन पर बगला, सस्कृत, अग्रेजी शैली का बहुत प्रभाव था। डॉ वर्मा पहले व्यक्ति थे जिन्होने हिन्दी एकाकी के क्षेत्र मे परिवर्तन किया।[18]

डॉ वर्मा ने अपना पहला एकाकी **'बादल की मृत्यु (1930)'** लिखा जो काल क्रम की दृष्टि से पहला एकाकी माना जाता है।[19] डॉ वर्मा इसको फैंतेसी मानते है। इस एकाकी मे इस तथ्य को उद्घाटित किया गया है कि सृष्टि का कण–कण चेतना की झकार से झकृत है। सभी मे एक ही प्रवाह निर्झर की तरह गतिमान है। उसे देखने के लिए ऑखे चाहिए। जड हो चेतन सभी मे एक ही अनन्त सत्ता की आख मिचौनी हो रही है।

बादल की मृत्यु जड प्रवृति का एक सुकोमल उपहार है, उसमे भी वही चेतना प्रवाह है जो मानव की तरह बोल सकता है, प्रेम कर सकता है। वह भी जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त करता है। बादल सख्या से प्रेम करता है और उसी वियोग मे अपने प्राण न्योछावर कर देता है। यह मैतालिग शैली मे लिखा गया एक गद्यरूपक है।[20]

इसी समय डॉ वर्मा ने **'दस मिनट'** (1931) लिखा। इस एकाकी मे बताया गया है कि कानून अपराध की सजा देता है न्याय नहीं करता । वह प्रमाण के हाथो बिका हुआ पुतला है।[21]

डॉ वर्मा के **'नहीं का रहस्य (1933) तथा एक्ट्रेस (1934)'** अन्य प्रारम्भिक एकाकी है। 'नहीं के रहस्य' मे यह बताने का प्रयास किया गया है कि नारी

प्रकृति का मूल रहस्य है। पुरूष की सहचरी वामा और जननी है। विवाह एक व्यवस्था है सृष्टि विकास का सहयोगी और प्राकृतिक सत्य है जो सृष्टि का उद्गाता है।[22] 'एक्ट्रेस' को कला की अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। नृत्य एक कला है। कला आत्मा के सौन्दर्य का एक सुन्दर उर्मिल कचन है। इसी तथ्य की अभिव्यक्ति 'एक्ट्रेस' मे है।[23]

इन प्रारम्भिक एकाकियो पर काव्य का रग चढा हुआ है। उनमे सघर्ष की अपेक्षा सयोग का तत्व मुख्य है। लेखक की प्रवृति रहस्योद्घाटन की ओर अधिक है।[24]

पृथ्वीराज की ऑखे (1935) – इस एकाकी सग्रह का प्रकाशन 1935 मे आर्य बुक डिपो नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस सग्रह मे 'पृथ्वीराज की ऑखे', 'चपक', नही का रहस्य, बादल की मृत्यु, दस मिनट शीर्षक एकाकी सकलित है। चद्रवरदायी ने अपने ग्रथ 'पृथ्वी राज रासो' मे पृथ्वी राज़ का कैद होकर गौर जाना लिखा है और अत मे पृथ्वीराज के बाण से गौरी का वध होना लिखा है। यह बाते ऐतिहासिक तथ्य से परे है।[25] इसी आधार पर वर्मा जी ने सुन्दर एकाकी का स्रजन किया है।

रेशमी टाई (1941) – डॉ वर्मा का यह सकलन 1941 मे भारती भण्डार इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया। इस सग्रह मे 'परीक्षा', 'रूप की बीमारी', '18 जुलाई की शाम', 'एक तोले अफीम की कीमत' औरे 'रेशमी टाई' शीर्षक एकाकी सकलित है।

सग्रह की समस्त एकाकी गम्भीर भावो को लिए है, 'परीक्षा' एकाकी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि मनुष्य कैसे वैज्ञानिक उपलब्धियो का विस्तार कर मकडी के जाल मे फसता है। 'रूप की रानी' डाक्टरो पर गम्भीर व्यग्य करती है, और '18 जुलाई की शाम' आज की आधुनिकता पर, 'एक तोले अफीम की कीमत' आज की दहेज प्रथा पर तथा 'रेशमी टाई' राजनीति पर सशक्त व्यग्य है।

इस एकाकी सग्रह का आधार सामाजिक जीवन है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज मे रहता है। वह चेतन प्राणी है उसे अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए अनेक सघर्ष करने पडते है। इस सग्रह का उद्देश्य सामाजिक जीवन की यथार्थ अनुभूति को पाठको के समक्ष रखना है।[26]

चारूमित्रा (1942) – रामकुमार वर्मा की इस कृति का प्रकाशन साधना सदन इलाहाबाद द्वारा किया गया। इसमे लेखक की 'चारूमित्रा', उत्सर्ग, रजनी की रात, और अधकार शीर्षक एकाकिया सकलित है। 'चारूमित्रा' शीर्षक एकाकी कथानक ऐतिहासिक है जो सम्राट अशोक के काल का है। यह एकागी अनुपम बलिदान का प्रतीक है। इसमे 'चारूमित्रा' रानी तिष्यरक्षिता की दासी है अपने स्वामी की रक्षा के लिए अपने जीवन के फूल को अपने देवता के मन्दिर मे चढा देती है।[27]

उत्सर्ग, एकाकी इस तथ्य को उद्घाटित करती है कि मृत्यु जीवन का अत नही, एक अर्धविराम है प्रकृति का शाश्वत व्यापार है। अधकार, पौराणिक और प्रतीकात्म एकाकी है, जबकि 'रजनी की रात' सामाजिक पृष्ठिभूमि पर आधारित एक सामाजिक जीवन की समस्या का निरूपण है। एक सुशिक्षित नारी अपने और इस समाज के सबध मे अपने हृदय मे जिन कल्पनाओ को सजोती है उसी की अभिव्यक्ति रजनी की रात है।

शिवाजी (1945) – डॉ वर्मा की इस कालजयी कृति को सन् 1945 मे साहित्य भवन प्रयाग ने प्रकाशित किया। शिवाजी जैसे महान नायक पर नाटक लिखने के पीछे डॉ वर्मा का उद्देश्य था कि विद्यार्थियो मे उनके समान आदर्श के भाव उत्पन्न हो। इसकी भूमिका मे डॉ वर्मा ने लिखा है, "शिवाजी नाटक की रचना विद्यार्थियो के भाव क्षेत्र को अधिक विस्तृत और परिष्कृत करने के दृष्टिकोण से की गई है। इस नाटक का कथानक भारतीय इतिहास का एक अत्यन्त आलोकमय पृष्ठ है। छत्रपति शिवाजी ने अपने चरित्र निर्माण के साथ ही साथ भारतीय आदर्शो के अनुकूल जिस सघशक्ति का निर्माण किया था वह उन्हे महापुरूष की सज्ञा से विभूषित करती है।[28]

इस नाटक के कथानक मे शिवाजी ने अपने चरित्र की दृढता मे समस्त प्रलोभनो पर विजय प्राप्त की है। कल्याण की लूट मे प्राप्त हुई अप्रतिम सुन्दरी गोहरबानू के आकर्षण की हिलोर को दृढवृत्ति शिवाजी ने केवल मॉ शब्द की दृड कगार से लौटा दिया। यह चरित्र दृढता मात्र भारतीय है और इन्ही नैतिक आदर्शो पर चलकर हमारे विद्यार्थियो को उस राष्ट्र का निर्माण करना है जिसमे जीवन प्रतिफल चरित्र दृढता से सचालित होकर कौशल के कर्म करने मे प्रतिफलित होता है।[29]

शिपाजी नाटक का कथानक 24 अक्टू 1657 की वह घटना है जो शिवाजी के चरित्रबल के दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास मे अद्वितीय है। कल्याण प्रदेश पर अधिकार करते समय शिवाजी के सेनापति अप्पाजी सोमदेव ने मुल्ला अहमद की पुत्र वधू को भेट स्वरूप शिवाजी को प्रस्तुत किया, शिवाजी ने जिसे देखकर कहा कास मेरी मॉ भी इतनी सुदर होती।[30] लेखक ने इस ऐतिहासिक घटना को सुन्दर नाटक का रूप दिया है।

सप्त किरण (1947) – सप्तकिरण मे डॉ वर्मा की सात उत्कृष्ट एकाकी सकलित हैं, इसका प्रकाशन 1947 मे नेशनल इन्फार्मेशन एण्ड पब्लिकेसन्स लिमिटेड बम्बई द्वारा किया गया। सात एकाकी लेखक के अलग–अलग दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते है। लेखक ने भूमिका मे लिखा है "इन नाटको की रचना मे आप सात अलग–अलग दृष्टिकोण पावेगे। मैने मानव जीवन की अर्न्त सवेदनाओ को घटनाओ के सघर्ष मे उभारने की चेष्टा की है। सवेदनाओ की रूपरेखा एक मात्र मनोविज्ञान द्वारा खीची गई है। [31]

इस सग्रह मे सात एकाकी का सकलन है राजरानी सीता जो धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। औरगजेब की आखिरी रात, और पुरस्कार राजनैतिक दृष्टिकोण से लिखी गई है। 'कलाकार का सत्य' एकाकी लेखक का आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। फेल्ट हैल्ट, सामाजिक दृष्टिकोण पर आधारित है। छोटी

सी बात पारिवारिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इस सकलन को अतिम एकाकी 'आखो का आकाश' वैवाहिक दृष्टिकोण को प्रस्ततु करती है।

कौमुदी महोत्सव (1949) – लेखक के इस नाटक का प्रकाशन 1949 मे साहित्य भवन लि इलाहाबाद द्वारा किया गया। इस नाटक का कथानक मौर्यकालीन है और चन्द्रगुप्त मौर्य पर आधारित है। कौमुदी महोत्सव से पूर्व चन्द्र गुप्त पर मुख्यत तीन नाटक लिखे गये, पहला विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस है जो सस्कृत मे लिखा गया है। दूसरा द्विजेन्द्र लाल राम रचित चन्द्र गुप्त नाटक है जिसकी रचना बगला मे सन् 1909 मे की गई और तीसरा जय शकर प्रसाद ने हिन्दी मे चन्द्रगुप्त नाटक लिखा। इन नाटको मे चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व पर अन्याय किया गया है। केवल एक ही प्रसग ऐसा है जिसमे चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व के उभरने का अवसर आता है। वह प्रसग है 'कौमुदी महोत्सव' ।[32]

डॉ वर्मा ने इसी प्रसग के आधार पर इस नाटक की रचना की है। इस नाटक मे उन्होने चन्द्रगुप्त के उज्ज्वल पक्ष को उजागर किया है।

रम्य रास (1950) – राम कुमार वर्मा की इस कृति का प्रकाशन आर्य बुक डिपो नई दिल्ली द्वारा 1950 मे किया गया। इस कृति मे सास्कृतिक एव साहित्यिक दोनो प्रकार की एकाकी का सग्रह किया गया है। इसमे जीवन के प्रति स्वस्थ्य दृष्टिकोण को अपनाया गया है।[33]

इसमे रम्यरास शीर्षक एकाकी सास्कृतिक दृष्टिकोण के आधार पर लिखी गई है। इसमे रास की एक रोचक एव आकर्षक घटना का वर्णन किया गया है। भगवान श्री कृष्ण राधा के कहने पर ही बासुरी बजाते है। राजरानी सीता अन्य सास्कृतिक दृष्टिकोण पर लिखी गई एकाकी इस सकलन मे सग्रहीत है।

'ज्यो की त्यो धरिदीनी चदरिया' मे वर्मा जी ने कबीर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रसाद की कला शीर्षक से वर्मा जी ने जयशकर प्रसाद के नाटको का समीक्षात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है।

डॉ वर्मा के इसी कालावधि मे दो एकाकी प्रकाशित हुए। प्रथम रूप रग शीर्षक से जिसे चॉद प्रेस इलाहाबाद द्वारा सन् 1948 मे प्रकाशित किया गया तथा दूसरा ध्रुवतारिका जिसे 1950 मे राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया।

हिन्दी साहित्य का आलोचानात्मक इतिहास (1938) – रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास लिखा है। यह ग्रथ राम नारायण लाल इलाहाबाद द्वारा सन् 1938 मे प्रकाशित हुआ। इसमे सम्वत् 750 से 1750 तक का इतिहास प्रस्तुत किया गया है।

वर्मा आलोचनात्मक शैली मे इतिहास लेखन प्रक्रिया के पक्षधर है। उनकी आलोचना भी भारतीय साहित्य के आदर्श को सुरक्षित रखते हुए पश्चिम की आलोचना शैली से प्रभावित है। डॉ वर्मा ने स्पष्ट किया है कि "साहित्य का इतिहास आलोचनात्मक शैली से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है अत ऐतिहासिक सामग्रियो के साथ कवियो एव साहित्यिक प्रवृत्तियो की आलोचना करना मेरा दृष्टिकोण है। मैंने साहित्य की सस्कृति का आदर्श सुरक्षित रखते हुए पश्चिम की अलोचना शैली को ग्रहण करने का प्रयत्न किया है। अभी तक की उपलब्ध सामग्री का उपयोग भी मैने स्वतत्रतापूर्वक किया है।[34] वह साहित्य एव सस्कृति को अपनी ऐतिहासिक दृष्टि देते है। उनका विचार है कि वस्तुत साहित्य एव सस्कृति एक ही वृत के दो फूल हैं और उनका पोषण एक ही रस से होता है।[35]

डॉ वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। साहित्य की ऐसी कोई विधा नही जिस पर डॉ वर्मा ने अपनी लेखनी न चलाई हो। डॉ वर्मा ने आजादी के पहले और बाद दोनो युगो को देखा, बदलती हुई परिस्थितियो को देखा किन्तु वह निरन्तर साहित्य साधना मे तल्लीन रहे।

काव्य, एकाकी, नाटक के अतिरिक्त 20वीं, शताब्दी के तीसरे एव चौथे दशक मे शोधग्रथ, आलोचनात्मक ग्रथ, सस्मरण प्रकाशित हुए तथा आपने अनेक ग्रथो का सम्पादन किया।

'कबीर का रहस्यवाद' (1931) और 'सत कबीर' (1947) आदि शोध ग्रथो को साहित्य भवन इलाहाबाद के द्वारा प्रकाशित किया गया।

आपने साहित्य समालोचना (1930) 'हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन' (1947) 'विचार दर्शन' (1948) समालोचना समुच्चय (1949) आदि आलोचनात्मक ग्रथो का प्रणयन किया। उक्त ग्रथ हिन्दी आलोचना मे मील के पत्थर माने जाते है।

डॉ वर्मा सस्मरण लिखने मे भी पीछे नही रहे। इस अवधि मे 'हिम हास' सस्मरण ग्रथ लिखा जिसे 1936 मे भारती भण्डार इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित करवाया गया। इसी अवधि मे दूसरा सस्मरण ग्रथ, 'स्मृति के अकुर लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया।'

डॉ वर्मा ने साहित्य लेखन के साथ–साथ साहित्य सपादन मे भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1932 मे उनके सपादकत्व मे हिन्दी गीत काव्य प्रकाशित हुआ जिसे रामदयाल अग्रवाल ने प्रकाशित किया। 1937 मे कबीर पदावली जैसे ग्रथ का सपादन किया जिसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित किया गया। 1942 मे आपके सपादकत्व मे गद्य परिचय जिसे मिश्र बधु कार्यालय इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1945 मे वर्मा जी के सम्पादन मे एक और महत्वपूर्ण ग्रथ आधुनिक काव्य सग्रह प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष सरस्वती प्रकाशन द्वारा आधुनिक हिन्दी काव्य सग्रह उनके सम्पादन मे प्रकाशित हुआ।

राम कुमार वर्मा ने साहित्य के क्षेत्र मे अपना अमूल्य योगदान दिया है अनेक उपयोगी ग्रथो के लेखन के साथ वह सहित्यिक गोष्ठियो, सम्मेलनो मे निरन्तर सम्मिलित होते रहते थे। सरस्वती, चाद, श्री शारदा आदि साहित्यिक पत्रिकाओ मे उनकी लेखनी जीवन पर्यन्त चलती रही।

हरिवंश राय बच्चन

हरिवश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद के चक्क मोहल्ले मे हुआ। कवि बच्चन पिता की छठी सन्तान थे। आरम्भिक शिक्षा उर्दू मे हुई।

सन् 1925 मे कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद से हाईस्कूल तथा 1927 मे गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज से इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की।[36] सन् 1929 मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। जब बच्चन बी ए प्रथम वर्ष के ही विद्यार्थी थे उनका विवाह रूप नारायण पुर गाव के निवासी बाबू राम किशोर की बडी पुत्री 'श्यामा' से कर दिया गया।[37]

सन् 1930 मे अग्रेजी मे एम ए प्रिवियस पास किया। उन्हीं दिनो सत्याग्रह आन्दोलन जोरो से चल रहा था। बच्चन उससे प्रभावित हुए और आगे की पढाई छोड दी। 1932 मे पायनियमर मे जिला सवाददाता का कार्य किया। 1933 मे अभ्युदय के सम्पादकीय विभाग मे सम्मिलित हो गये। 1934 मे अग्रवाल विद्यालय मे अध्यापक की नौकरी कर ली। इस पद पर उन्होने तीन वर्ष तक कार्य किया। इन्ही दिनो पत्नी यक्ष्मा से पीडित रहने लगी। 1936 मे अतत लम्बी बीमारी से सघर्ष के पश्चात् पत्नी श्यामा का देहान्त हो गया। बच्चन के भावुक ह्रदय पर इस दुर्घटना से गम्भीर आघात पहुचा। वह सध्या साधारण दिन की सध्या नहीं थी। वह श्यामा के जीवन दिवस की सध्या थी जो मृत्यु की अखण्ड रात मे बदल जाने वाली थी।[38]

जुलाई 1937 मे मुख्यत परिस्थितिया बदल डालने के उद्देश्य से पुन इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे एम ए द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी के रूप मे भरती हो गये। सन् 1930 एम ए कर लेने के बाद बनारस ट्रैनिग कालेज मे प्रविष्ट हुए। वहीं उन्होने एकात सगीत की रचना की। ट्रेनिग का डिप्लोमा ले लेने के बाद 1940 मे वह इलाहाबाद मे ही स्नात्कोत्तर अध्ययन करने लगे। इसी युग मे 'आकुल अतर, विकल विश्व' के कुछ गीतो की भी रचना की थी जो बाद मे धार के इधर उधर मे सम्मिलित कर लिए गये।[39]

1942 की 24 जनवरी बच्चन की जिन्दगी का सुनहरा अवसर लेकर आई। इस दिन बच्चन की सिविल मैरिज (कोर्ट मैरिज) जिला मजिस्ट्रेट मि डिक्सन ने अपने बगले पर की।[40] तेजी लाहौर के एफ सी कालेज मे मनोविज्ञान की अध्यापिका थी। वह विवाह पति–पत्नी दोनो के लिए पूरक सिद्ध हुआ। विवाह के बाद बच्चन जी

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे ही अग्रेजी साहित्य के प्रवक्ता हो गये। इस समय उनकी ख्याति भारत भर मे फैल गई थी। परिस्थितिया बदल गई और उनकी कविता मे नया दौर प्रारम्भ हो चुका था।[41] तेजी से विवाह के बाद जीवन् का वह दौर समाप्त हो चुका था। अब बच्चन जी ने जीवन का नया अर्थ तलाश किया 'बीत गई सो बात गई' जैसी सशक्त कविताए उन्होने लिखनी प्रारम्भ की जिनमे नवजीवन और आत्मविश्वास का असीम सदेश था।[42]

1952 मे कवि बच्चन अग्रेजी साहित्य मे डाक्टरेट प्राप्त करने के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गये। वहा महाकवि ईटस पर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर 1954 मे स्वदेश लौटे और पुन इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। सितम्बर 1955 मे वह भारतीय आकाशवाणी मे हिन्दी प्रड्यूसर के रूप मे नियुक्त हुए। 1955 मे ही विदेश मत्रालय मे विशेष कार्य अधिकारी का दायित्व स्वीकार किया।[43]

बच्चन सघर्ष मे, सुख दु ख की धूप छाव मे अपने कर्तव्य पथ से कभी नहीं हटे और निरन्तर साहित्य साधना मे रत रहे। बच्चन जी ने हिन्दी साहित्य को अपनी काव्य साधना से समृद्ध बनाया।

तेराहार (1932) – कवि की इस प्रथम कृति का प्रकाशन 1932 मे राम नारायण लाल बुक सेलर द्वारा किया गया। इस सग्रह मे कवि की अनुभूतिया अति स्वाभाविक ढग से व्यक्त हुई हैं। उस समय प्रकाशित पत्र पत्रिकाओ मे इस सग्रह की खूब चर्चा हुई। चाद पत्रिका मे छपा कि कविता प्रेमियो को इसे एक बार अवश्य देखना चाहिए। विश्वामित्र ने लिखा था कि इसके रचयिता महोदय का नाम यद्यपि हम हिन्दी मे पहली बार देख रहे है तथापि कविताए पढने से मालूम होता है कि वे इस कला मे सिद्धहस्त है।[44]

मधुशाला (1935) – बच्चन की इस कालजयी कृति का प्रकाशन 1935 मे सुषमा निकुज इलाहाबाद के द्वारा किया गया।[45] प्रकाशन से पूर्व ही इस सग्रह की

कविताए धूम मचा चुकी थी 1933 मे सरस्वती पत्रिका मे इसकी अनेक रूबाइया प्रकाशित हो चुकी थी।[46]

प्रकाशन से पूर्व हिन्दी साहित्य क्षेत्र मे सबसे अधिक चर्चित और कवि सम्मेलनो मे सुना गया कदाचित पहला काव्य सग्रह है। बच्चन जी को जितना नाम इस सग्रह से मिला है अन्य से नहीं। बच्चन और मधुशाला एक दूसरे के पूरक बन गये है। बच्चन जी ने स्वय लिखा है, "शुरू से लेकर आज तक मधुशाला' को बुरा कहने वालो उसका उपहास करने वालो उसका अनुकरण करने वालो और उसकी उपेक्षा करने वालो की कमी नही रही। पर उस पर झूमने वाले बहुत रहे है।[47]

मधुशाला बीसवी शताब्दी की सम्भवत देश की भिन्न–भिन्न भाषाओ मे रची गई सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियो मे से एक है। खडी बोली की पहली काव्य पुस्तक है जिसका अग्रेजी मे अनुवाद अग्रेजी की ही कवियत्री MARJORIE BOOLION ने किया और स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू ने इस पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका लिखी थी।

मधुशाला पर उमर खैयाम की रूबाइयो का प्रभाव स्पष्ट है। इसमे न मदिरा सबधी रूबाइया है और न आध्यात्मिक अर्थ मे गृहीत छन्द। यद्यपि उर्दू गजलो मे हाला, प्याला, साकी और मधुशाला का अर्थ इन्ही रूपो मे अधिक प्रचारित किया है किन्तु कवि बच्चन की मधुशाला मे कवि भी है, सुधारक भी और क्रातिकारी व्यक्तित्व भी।

मधुबाला (1936) – मधुबाला सग्रह का प्रकाशन भी सुषमा निकुज इलाहाबाद द्वारा ही हुआ। कवि बच्चन की अनुभूतियो मे सचित जिन विविध मुखी भावो का क्षरण मधुशाला मे हुआ था वह अधूरा था उसका क्षरण मधुबाला मे काफी कुछ हो गया और शेष मधुकलश मे हुआ। इस सग्रह मे बच्चन की उस समय की रचनाए है जब वह गहन सघर्ष की परिस्थितियो से गुजर रहे थे इसकी प्रतिध्वनि भी इस सग्रह मे सुनाई देती है "उस दिन मेरी और अपनी अश्रुधारा के सगम पर तूने मुझे विश्वास दिलाया था कि तुझे सूनी अधेरी और भयावनी मधुशाला से मेरी आर्त पुकार सुन पडी थी और तू ही मधुशाला को सागर तट से लौटा लाई थी।"[48]

मधुबाला एक ओर भोगेच्छा रूपी नायिका के रूप मे मुखरित होने के साथ–साथ नारी के उस उज्ज्वल रूप को भी प्रतिष्ठित करती है जो ससार के कटु यथार्थ से सतृप्त है। इसके साथ–साथ बच्चन युवा पीडी का भी प्रतिनिधित्व करते है जो थोथले और पाखण्डी पण्डितो द्वारा तैयार पोथी पत्रो की धार्मिकता को मानने के लिए तत्पर नही ।

मधुशाला मे कवि ने जीवन के विभिन्न रग भरे है। प्रकृति के माध्यम से मन के भावो को ध्वनित किया है तो बच्चन ने बिना दुराव छिपाव के धरा की लाली से प्रकृति को भी रग दिया है कवि चाहता है कि जिस प्रकार प्रकृति पर कोई बधन नही उसी प्रकार मनुष्य को भी बधनो से मुक्त होना चाहिए।

मधुकलश (1937) – मधुकलश को भी 1937 मे सुषमा निकुज इलाहाबाद ने प्रकाशित किया। यद्यपि इसका प्रकाशन तो 1937 मे हुआ किन्तु इसकी कविताए 1935–36 मे ही लिखी गई जब बच्चन कठिनतम् सघर्ष के दौर से गुजर रहे थे "मेरे जीवन का जो उत्साह उल्लास और उन्माद–गो उसमे एक अभाव, एक असन्तोष एक निराशा की व्यथा भी घुली मिली थी– मधुशाला और मधुबाला मे व्यक्त हुआ था, वह अब उतार पर था मेरे भावना स्वप्नो का एक शीशे का ससार यथार्थता और वास्तविकता की चट्टान से टकराकर चकना चूर हो गया था।"[49]

मधुकलश मे बच्चन ने जीवन के कटु यथार्थ को प्रस्तुत किया है। सग्रह के शीर्षक को सार्थक उनकी पहली ही कविता 'है आज भरा जीवन मुझमे आज भरी मेरी गागर[50] सार्थक करती है।

निशा निमत्रण (1938) – निशा निमत्रण को सुषमा निकुज के द्वारा प्रकाशित किया गया। यह काव्य सग्रह कवि बच्चन की काव्य यात्रा का दूसरा महत्त्वपूर्ण मोड है। हर तूफान मद पडता है, हर नशा उतरता है। जीवन का पहिया घूम गया था। यौवन की मद मदिरा का उन्मत गान पत्नी श्याम की मृत्यु के साथ डूब गया।

'निशा निमत्रण' के गीत कवि के महाशोक का विलगन है। कवि का युवा मन समाज का विरोध सहकर भी मजबूत रहा, उल्लास उमग के गीतो से विषमताओ और बधनो को काटता रहा किन्तु पत्नी श्याम की मृत्यु से जीवन मे जो रिक्तता और पीडा भर गई थी, उससे निराश हुआ। यही कारण है कि 'निशा निमत्रण' के गीतो मे अति मार्मिक तीक्ष्ण उक्तिया है–

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

हो न जाए पथ मे रात कहीं,

मजिल भी तो दूर नहीं-

यह सोच थका दिन का पन्थी भी जल्दी-जल्दी चलता है

दिन जल्दी जल्दी ढलता है। [51]

एकात सगीत (1939) – 1939 मे इसका प्रकाशन सुषमा निकुज इलाहाबाद द्वारा हुआ। यद्यपि 'निशा निमत्रण' एव 'एकात सगीत' की रचना एक ही काल तथा मनोस्थिति मे की गई थी। एकात सगीत को 'निशा निमत्रण' की अगली कडी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। एकात सगीत कवि का एक मात्र ऐसा सग्रह है जिसमे गीत उसी क्रम मे रखे गये है जिसमे उनकी रचना हुई थी।

एकात सगीत के अधिकतर गीतो की रचना उन्होने बनारस से वी टी करते समय वहा कमच्छा बोर्डिंग हाउस मे लिखे थे तथा कुछ गीतो की रचना इलाहाबाद लौटकर की थी।[52]

एकात सगीत अकेले व्यक्ति के उस अकेलेपन का सगीत है जो निश्चित रूप से उसका निजी है, अपना है। इसका समर्पण भी कवि ने अपने प्रति किया है। इसके सगीत मे उसका आत्महान स्वान्त सुखाय है। इस स्वान्त सुखाय मे उस मानव का प्रतिबिम्ब है जो सामाजिक दृष्टि से चाहे अपनाने योग्य न समझा जाए किन्तु व्यक्तिगत स्तर पर उसका मूल्य है।

आकुल अतर (1943)— आकुल अतर काव्य सग्रह का प्रकाशन 1943 मे भारती भण्डार इलाहाबाद द्वारा किया गया। कवि बच्चन इस सग्रह मे प्रकाश की एक किरण खोजते है "मेरी कृतियो के रचनाक्रम मे 'आकुल अतर' एकात सगीत और सतरगिनी के बीच आता है। निशा निमत्रण मे जिस अवसाद की छाया उतरी थी, उसके अन्तिम और सघनतम् रूप को देखने के लिए मै एकात सगीत सुनता हुआ 'आकुल अतर' की गुहा मे बैठ गया। जहा अधकार सघनतम है वही प्रकाश की पहली किरण है"

लहर सागर का नहीं श्रृगार उसकी विकलता है।

अनिल अम्बर का नहीं खिलवार उसकी विकलता है।[53]

'आकुल अतर' कवि की काव्य यात्रा का तीसरा मोड है, इसमे कुल 71 गीत है, जिनमे अन्तर की पुकार कल्पना के पर लगाकर स्वप्निल दुनिया मे नहीं खो जाती बल्कि प्राकृतिक उपादानो और काव्य कला के अतिरिक्त अन्य कलाओ मे भी उसे ढूढ निकालती है।

1943 मे ही भारती भण्डार इलाहाबाद ने उनकी प्रारम्भिक रचनाओ जो 'सरस्वती', 'चाद' इत्यादि पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुकी थी को दो भागो मे प्रकाशित किया।

सतरगिनी (1945) – सन् 1942–44 मे लिखित कविताओ के इस सग्रह का प्रकाशन 1945 मे भारती भण्डार इलाहाबाद के द्वारा हुआ। इस काव्य सतरगिनी मे 50 कविताए है एक प्रवेश गीत है, शेष 49 कविताए सात–सात कविताओ के सात खण्डो मे विभक्त है। प्रकाशन से पूर्व 'खण्ड' शब्द के स्थान पर रग शब्द कर दिया गया। 'सतरगिनी के सात रग', 'प्रत्येक रग के सात गीत', उसके सात शेड उसकी सात क्रम क्रातिया हैं।

कवि इस सग्रह मे गहरे अवसाद से उबर चुका है। यह सग्रह तम भरे, गम भरे बादलो के ऊपर इन्द्र धनुष रचने का प्रयास है –

तूने देखी दुनिया जिस पर उतरी ऊषा की लाली,

तूने देखी दुनिया जिस पर बिखरी किरणो की जाली,

तूने देखी दुनिया जिस पर अधियाली सध्या छायी,

तूने देखी दुनिया जिस पर फैल गई रजनी काली

किन्तु कभी क्या तूने देखा जागती का सस्मित आनन,

इन्द्रधनुष की छाया मे।[54]

हलाहल (1946) – इस सग्रह की कविताए 1936 से 1945 के मध्य लिखी गई। इसको 1646 मे भारती भण्डार ने प्रकाशित किया। यह सग्रह मधुस्वप्न लोक से उतर कर जीवन के यथार्थ धरातल का काव्य है। मधुशाला की तरह यह भी एक प्रतीक काव्य है। इस सग्रह के 50 पद सन् 1936 मे लिखे गये थे जिनमे से कुछ पद सरस्वती पत्रिका मे प्रकाशित हुए थे। हलाहल के गीतो की रचना उस समय हुई थी जब कवि भूकम्प के झटको को सहन कर रहा था "मेरे जीवन मे एक भूकम्प का समय था। हलाहल जिन प्रवृत्तियो का प्रतीक बनकर मेरे मन मे उदित हुआ था उनको दुलरा कर नही बल्कि उनको चुनौती देकर ही मै अपने अदर बल सचित कर सकता था, अपने को सुस्थिर रख सकता था।[55]

हलाहल की कविता मानव जीवन की कविता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन मे कटुतिक्त और मधुर स्थितियो का सामना करना पडता है। मधुशाला ने मानव समाज को काल्पनिक मदिरा के स्वप्नो का सुख और मस्ती का रग दिया है। हलाहल कर्मप्रेरणा और आस्थामय आशा का सदेश देता है।

बंगाल का काल (1946) – 'बगाल का काल' शीर्षक लम्बी कविता को भारती भण्डार इलाहाबाद के द्वारा 1946 मे प्रकाशित किया गया। 'बगाल का काल' कवि बच्चन की प्रथम मुक्त छन्द मे लिखी लम्बी कविता है। सम्भवत उससे पूर्व मुक्त छन्द मे इतनी लम्बी कविता लिखी भी नही गई थी बगाल मे पडे अकाल से कवि हृदय पीडित हुआ था किन्तु उससे भी ज्यादा बगालवासियो की नपुसकता कष्ट

सहिष्णुता पर उसे क्रोध आया था। बगाल मे होती अकाल मृत्यु, तडपन और मनुष्य की इतनी हीन अवस्था देख कवि अपनी व्यग्रता को वाणी देने के लिए विवश हो गया।" यह पूरी कविता जो लगभग एक हजार पक्तियो मे है, करीब 36 घण्टो के अनवरत परिश्रम से लिखी गई। सुबह बैठा तो न नास्ते के लिए उठा, न दिन के खाने के लिए, न चाय के लिए न रात के खाने के लिए। बारह बजे रात को दिमाग चक्कर खाने लगा। मै थोडी देर लेट गया पर नीद नही आई फिर बैठकर लिखने लगा। दूसरे दिन अपरान्ह मे जाकर मैने रचना के नीचे अपने हस्ताक्षर किए।" [56]

खादी के फूल (1948) – राष्ट्रपिता के चरणो मे अर्पित इस कृति को 1948 मे भारती भण्डार इलाहाबाद ने प्रकाशित किया। इस सग्रह के सह लेखक प सुमित्रा नदन पत है जिनके 15 गीत इस सग्रह के अत मे है। इस सग्रह की प्रेरणा गाधी जी की हत्या की प्रतिक्रिया मूल है।

इन कविताओ को राष्ट्रवादी, एव गाधीवादी दृष्टिकोण से देखा जाए तो उस युग का समग्र चित्र दृष्टिपथ पर झूल जाता है। गाधी जी की हत्या से कवि मन पर गहरा आघात हुआ है। वह इस शोक को हरने के लिए कवि, साहित्यकारो देवताओ का आवाहन करता है कि वह कुछ कहे –

ओ राष्ट्र महाकवि राष्ट्रनाद मैथिली शरण,

हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण,

होकर अनाथ यह आर्त जाति मॉगती शरण

कुछ कहो देवता-दैन्य शोक सताप हरण।[57]

सूत की माला (1948) – बच्चन की इस कृति को 1948 मे सेण्ट्रल बुकडिपो इलाहाबाद ने प्रकाशित किया। इसके प्रणयन की प्रेरणा भी गाधी जी की हत्या ही है। 'सूत की माला' मे बलिदान से सम्बन्धित घटनाओ पर एक सौ ग्यारह गीत है। कवि की गाधी के प्रति आस्था बलवती है।

उठ गये आज बापू हमारे,

झुक गया आज झण्डा हमारा।[58]

मिलन यामिनी (1950) – 1945–49 मे लिखित बच्चन का यह सग्रह 1950 मे भारतीय ज्ञानपीठ बनारस से प्रकाशित हुआ। मिलन–यामिनी मे 99 कविताए है जिन्हे कवि ने 33–33 के तीन भागो मे विभक्त कर दिया है। कवि ने इस कृति को अपनी सह धर्मिणी तेजी को समर्पित किया है –

तेजी को,

जिसके तन की विमल कल्पना

अजित अमित की वन किलकार

पुलक उठी मेरे आगन में।[59]

मिलन यामिनी, निशा निमत्रण सग्रह के विपरीत मन की सुखात्मक उद्वेलन से युक्त अनुभूतियो की भावाक्ति है। 'निशा निमत्रण' की जिस वियोग मयी अधेरी रात मे कवि हल्की सी प्रकाश किरण के सहारे, अपने अन्तर्मन के अवसाद, विषाद को सम्भाले हुए था, वह कवि उस बीती को भूल, वर्तमान मे लौ जलाकर भविष्यत की सुनहली कल्पना मे खोना चाहता है।

इस सग्रह के गीतो मे प्रणय रागिनी की मधुर सगीत ध्वनि गुजित है। "सुहागरात का वर्णन? मिलन यामिनी मैने किसलिए लिखी है ? कविता जो काम कर चुकी है, गद्य जब उसे करना चाहता है तो उसके हाथ पाव फूल जाते है। आप यहा यह पुस्तक बद कर मिलन यामिनी खोलकर बैठ जाए।"[60]

हरिवश राय बच्चन का कृतित्व विराट था। वह सही अर्थो मे युगपुरूष हैं। कठिनतम् सघर्ष किन्तु लेखनी कभी न रूकी।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे आपके अनेक काव्यसग्रहो के साथ अलोचना, निबध, कहानिया एव आत्यकथा के तीन खण्ड प्रकाशित हुए। इस समय 'प्रणय

पत्रिका' धार के इधर–उधर, आरती और अगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभगिमा, चार खेमे चौसठ खूटे, दो चट्टाने, बहुत दिन बीते, कटती प्रतिमाओ की आवाज, अभरते प्रतिमानो के रूप, जाल समेटा इत्यादि कृतिया प्रकाशित हुई।

बच्चन ने अनेक कृतियो का अनुवाद किया जो उनके मौलिक सृजन का ही विस्तार है। उमर खैयाम की रूबाइया, जनगीता, चौसठ रूसी कविताए, मरकत द्वीप का स्वर, नागर गीता, भाषा अपनी भाव पराये। शेक्सपियर के चार नाटको–मैकवेथ, ओथेलो, हैमलेट और किगलियर का अनुवाद किया।

बच्चन जी ने काव्य के साथ–साथ गद्य लेखन भी किया। आत्म कथा के तीन खण्ड क्या भूलू क्या याद करू, नीड का निर्माण फिर, और बसरे से दूर शीर्षक से प्रकाशित हुए। आलोचना सबधी तीन पुस्तके कवियो मे सौम्य सत सुमित्रा नदन पत, (1960), नये पुराने झरोखे (1962), और टूटी झूटी कडिया (1973) प्रकाशित हुई।

बच्चन जी का जितना विस्तृत काव्य ससार है उतना विस्तृत गद्य ससार तो नही है किन्तु जितना भी गद्य का सृजन किया वह उनके काव्य की ही कोटि का है।

संदर्भ एंव फुट नोट

1 श्रीवास्तव राधेकृष्ण (सपा), आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि रामकुमार वर्मा प्रका राजपाल एण्ड सस, नई दिल्ली, 1975, पृष्ठ 5

2 वही, पृष्ठ 7

3 वही, पृष्ठ 7–8

4 वर्मा रामकुमार, अजलि, साहित्य भवन इला 1929 पृष्ठ 17–18

5 वही, पृष्ठ 17

6 वर्मा राम कुमार, अभिशाप, ओझा बधु आश्रम इला 1930 पृष्ठ 4

7 राज दशरथ, कविवर डा राम कुमार वर्मा और उनका काव्य, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 1966 पृष्ठ 77

8 वही, पृष्ठ 19

9 वर्मा रामकुमार, निशीथ, विश्व साहित्य प्रका लाहौर, 1932, पृष्ठ 38 (तृतीयसर्ग)

10 वर्मा रामकुमार, चित्रलेखा, चाद प्रेस इला 1935, पृष्ठ10

11 वही, पृष्ठ 31

12 राज दशरथ, कविवर डा राम कुमार वर्मा और उनका काव्य, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 1966, पृष्ठ 22

13 वर्मा, राम कुमार, चन्द्र किरण, गगा ग्रथागार लखनऊ, 1937, पृष्ठ 48

14 वर्मा, राम कुमार, सकेत, मेहर चद लछमन दास, नई दिल्ली, 1939, पृष्ठ 5

15 राज दशरथ, कविवर डा राम कुमार वर्मा और उनका काव्य, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 1966, पृष्ठ 23

16 वही, पृष्ठ 25

17 शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद, रामकुमार वर्मा एकाकी रचनावली, भाग 1 किताबघर, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 5

18 मिश्र मिथिलेश कुमारी, नाटक कार राम कुमार वर्मा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली 1985 पृष्ठ 75

19 सिन्हा सावित्री, हिन्दी साहत्य का वृहत इतिहास, भाग 6 नागरी प्रचारिणी सभा काशी, स 2029 (वि) पृष्ठ 257

20 मिश्र मिथिलेश कुमारी, नाटककार राम कुमार वर्मा, आर्य बुक डिपो नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ 76–77

21 वही, पृष्ठ 76–77

22 वही, पृष्ठ 77

23 वही, पृष्ठ 77–78

24 सिन्हा सावित्री, हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, भाग 6 नागरी प्रचारिणी सभा काशी, स 2029 (वि) पृष्ठ 257–258

25 शर्मा चन्द्रिका प्रसाद, रामकुमार वर्मा एकाकी रचनावली, भाग 1 किताबघर, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 119

26 मिश्र मिथिलेश कुमारी, नाटक कार राम कुमार वर्मा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली 1985, पृष्ठ 88

27 वर्मा रामकुमार, चारूमित्रा, साधना सदन इला 1942, पृष्ठ 18

28 वर्मा रामकुमार, शिवाजी, साधना सदन इला 1942, पृष्ठ 1

29 वही, पृष्ठ 1–2

30 वही, पृष्ठ 7

31 वर्मा रामकुमार, सप्त किरण, नेशनल इनफरमेशन्स एण्ड पब्लिकेशन्स, मुम्बई, 1947, पुष्ठ 1 (भूमिका)

32 वर्मा रामकुमार, कौमुदी महोत्सव वही, (तृतीय सस्करण) साहित्यभवन इला 1952, पृष्ठ 9

33 मिश्र मिथिलेश कुमारी, नाटक कार राम कुमार वर्मा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली 1985, पृष्ठ 88

34 वर्मा राम कुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (चतुर्थ सस्करण), प्रका राम नारायण लाल, इलाहाबाद 1958 पृष्ठ 1

35 वही, पृष्ठ 5

36 अरोडा ललिता, बच्चन एक अध्ययन, भारतीय ग्रथ निकेतन नई दिल्ली 1992, पृष्ठ 18

37 विद्यालकार चन्द्रगुप्त, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि हरिवश राय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 1960, पृष्ठ 7

38 बच्चन हरवश राय, नीड का निर्माण फिर, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली (पाचवा सस्करण) 1980, पृष्ठ 14

39 विद्यालकार चन्द्रगुप्त, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि हरिवश राय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 1960, पृष्ठ 9

40 बच्चन हरवश राय, नीड का निर्माण फिर, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली (पाचवा सस्करण) 1980, पृष्ठ 259

41 विद्यालकार चन्द्रगुप्त, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि हरिवश राय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 1960, पृष्ठ 9

42 वही, पृष्ठ 10

43 वही , पष्ठ 11

44 अरोडा ललिता, बच्चन एक अध्ययन, भारतीय ग्रथ निकेतन नई दिल्ली 1192, पृष्ठ 25

45 कुमार अजित, (सपा) बच्चन रचनावली भाग–1, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1983, पृष्ठ 36

46 सरस्वती, दिसम्बर 1933, पृष्ठ 502

47 कुमार अजित, (सपा) बच्चन रचनावली भाग–1, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1983, पृष्ठ 36

48 बच्चन हरि वश राय, मधुबाला, सुषमा निकुज इलाहाबाद, 1936 पृष्ठ 1 (भूमिका)

49 बच्चन हरि वश राय, मधुकलश, सुषमा निकुज इलाहाबाद, 1936 पृष्ठ 1 (भूमिका)

50 वही, पृष्ठ 5

51 बच्चन हरि वश राय, निशा निमत्रण, सुषमा निकुज इलाहाबाद, 1938 पृष्ठ 6

52 कुमार अजित, (सपा) बच्चन रचनावली भाग–1, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1983, पृष्ठ 208

53 बच्चन हरिवश राय, आकुल अतर, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1943, पृष्ठ 1

54 बच्चन हरिवश राय, सतरगिनी, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1945, पृष्ठ 1

55 बच्चन हरिवश राय, हलाहल, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1946, पृष्ठ 1–2 (भूमिका)

56 बच्चन हरिवश राय, बगाल का काल, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1946, पृष्ठ 5 (भूमिका)

57 बच्चन हरिवश राय, खादी के फूल, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1946, पृष्ठ 4

58 बच्चन हरिवश राय, सूत की माला, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद 1948, पृष्ठ 1

59 बच्चन हरिवश राय, मिलन यामिनी, भारतीय ज्ञान पीठ बनारस, 1950, पृष्ठ 1

60 बच्चन हरि वश राय, नीड का निर्माण फिर, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 1980 (पाचवा सस्करण), पृष्ठ 272

अध्याय - 3

प्रमुख साहित्यकार और उनकी साहित्य साधना

अध्याय- 3

अन्य साहित्यकार और उनकी साहित्य साधना

20वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे इलाहाबाद के साहित्यिक एव राजनीतिक परिवेश मे एक प्रकार की बौद्धिक सम्पन्नता दिखाई देती है।[1] सरस्वती, चॉद पत्रिकाओ ने जिस परिवेश का निर्माण किया उसके परिणाम स्वरूप यहा साहित्य निर्माण की अनवरत प्रक्रिया आरम्भ हुई। प सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, प सुमित्रा नदन पत, महादेवी वर्मा, डा राम कुमार वर्मा, और हरिवश राय बच्चन के समान अन्य साहित्यकार हुए जिनका कृतित्व उनके समान विराट तो नहीं था किन्तु साहित्य सृजन मे उन्होने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन साहित्यकारो की रचनाए निरतर सरस्वती, चॉद, मर्यादा आदि पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुई और अनेक कृतियो का सृजन किया।

रामनरेश त्रिपाठी

रामनरेश त्रिपाठी 20वी शताब्दी के आरम्भ के साहित्यकार है। रामनरेश त्रिपाठी का जन्म स 1946 (सन् 1890) को कोइरी पुर ग्राम जिला सुल्तानपुर मे एक सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनके पिता सस्कृत के पण्डित और धार्मिक ग्रथो के अध्येता थे।[2] त्रिपाठी जी की शिक्षा का प्रारम्भ उर्दू से हुआ और ग्राम की पाठशाला मे कक्षा आठ तक शिक्षा पाई। गरीबी के कारण शिक्षा आगे न हो सकी। शिक्षा के अपूर्ण रहने पर अपने चाचा रामस्वरूप जी के यहा कलकत्ता चले गये। कवित्त की प्रतिभा के कारण शीघ्र ही वहा लोकप्रिय हो गये।[3]

सन् 1925 मे पिता के देहान्त के पश्चात प्रयाग आ गये और राष्ट्रीय आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया और कठोर कारावास भोगा। जेल से बाहर आने पर हिन्दी मदिर की स्थापना की। अब तक वे मिलन और पथिक दो खण्ड काव्यो की

रचना कर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। प्रयाग मे राष्ट्रीय आन्दोलन मे अग्रणी प मदन मोहन मालवीय, पुरूषोत्तम दास टण्डन, डॉ काटजू, जवाहर लाल नेहरू, सर तेज बहादुर सप्रू, सी वाई चिन्तामणी से उनकी मित्रता हुई। गाधीजी और नेहरू को रामायण पढाने का कार्य उन्होने ही किया था।[4]

त्रिपाठी जी की कविता बहुजन हिताए ओर बहुजन सुखाए की दृष्टि से लिखी गई थी। उन्होने तुलसीदास जी को आदर्श बनाया और काव्य की रचना की। उन्होने लिखा है –

"तुलसीदास जी ने कविता के सबध मे लिखा है –

कीरति भनित भूति भलि सोई। सुर सरि सम सब कर हित होई।।

अर्थात कीर्ति, कविता, और सम्पदा वही सराहनीय है जो गगा जी की तरह सबके लिए हितकारी हो। मैने सदा इसी भाव से प्रेरित होकर कविता लिखी है। उसे चाहे स्वान्त सुखाए कहिए चाहे बहुजन हिताए।"[5] रामनरेश त्रिपाठी की साहित्य साधना सरस्वती के प्रकाशन के पश्चात् आरम्भ होती है। इस समय देश मे बग–भग आन्दोलन चल रहा था "मेरा स्मृतिमय जीवन उस समय से शुरू होता है जब देश से बाहर रूस और जापान का युद्ध हो रहा था और देश मे बग–भग का आन्दोलन जोरो पर था। बग वासी मे देश भक्ति के जो गीत निकलते थे उनका मेरे बाल जीवन पर गहरा प्रभाव पडता था। इससे देश प्रेम और दीन दुखियो की सेवा के भाव मेरे हृदय मे सबसे अधिक समाए, जो पद्यवद्ध होकर निरतर निकलते रहे।[6] त्रिपाठी की पहली रचना 'हिन्दुओ की हीनता' सरस्वती मे प्रकाशित हुई थी।

मिलन (1917) – मिलन काल क्रम की दृष्टि से त्रिपाठी जी का पहला खण्ड काव्य है। इसे उन्होने इलाहाबाद मे उस समय लिखा जब देश मे अग्रेजी राज्य का शिकजा पूर्णत कस चुका था "सबसे पहले इलाहाबाद मे रहकर मैने मिलन नाम का एक खण्ड काव्य लिखा, जिसका पहला सर्ग मर्यादा नाम की पत्रिका मे प्रकाशित हुआ। साहित्यिक मित्रो मे उसकी प्रशसा हुई थी तब मैने उसमे चार सर्ग और बढाकर

उसे पूरा खण्ड काव्य कर दिया था। उन दिनो देश मे अग्रेजी राज तप रहा था और राष्ट्रीय कविता लिखना एक जुर्म माना जाता था।[7]

मिलन खण्ड काव्य का कथानक राष्ट्रीय भावनाओ से प्रेरित है। काव्य का नायक आनन्द कुमार और नायिका विजया दोनो ही देश प्रेम की भावनाओ से ओत प्रोत है। नायक तो देश भक्ति मे दीक्षित वीर है –

आहत युवक थक गया तन से

निकल रहा था रक्त।

था तथापि शत्रु मथन मे

पूर्ण रूप आसक्त।[8]

देश भक्ति एव सामाजिक आधार पर लिखे गये 'मिलन' खण्ड काव्य मे युग का यथार्थ चित्र अकित है।

पथिक (1920) – पथिक राम रनेश त्रिपाठी ने रामेश्वर की यात्रा से लौटकर इलाहाबाद मे लिखा " रामेश्वर की यात्रा के बाद इलाहाबाद आया तब सबसे पहले अपना वह नशा उतारने मे लग गया और 21 दिनो तक मकान की छत पर टिन के एक छप्पर के नीचे बैठकर और वही खा पीकर और सोकर भी मैने 'पथिक' लिख डाला। 'पथिक' के पद्यो मे मैने प्राकृतिक दृश्यो को जिसे देखा था जगह जगह टाक दिया है। पथिक की बडी प्रशसा हुई देश के बडे बडे नेताओ और हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवियो ने उसका आदर किया।"[9] महात्मा गाधी ने पथिक को पढा और इसकी अत्यधिक प्रशसा की थी।[10]

'पथिक' खण्ड काव्य मे तत्कालीन परिस्थितियो का यथार्थ चित्रण है। ब्रिटिश साम्राज्य की कूटनीति तथा राजा और प्रजा के वैमनस्य का यथार्थ चित्र प्रस्ततु होता है। पथिक काव्य का मुख्य स्वर तो देश भक्ति का है किन्तु खण्ड काव्य के नायक पथिक के पारिवारिक जीवन की ओर भी कवि ने ध्यान खीचा है।[11] पथिक

व्यक्तिगत जीवन मे कठिनाइयो से जूझते हुए भी गाधी दर्शन के अहिसक सिद्धातो को गली गली, गाव गाव घूमकर प्रचारित करता है।[12]

स्वप्न (1929) – त्रिपाठी जी ने 1928–29 मे कश्मीर की यात्रा की और कश्मीर से इलाहाबाद लौटकर इस खण्ड काव्य को पूरा किया "1928–29 मे मै कश्मीर गया। कश्मीर तो पृथ्वी का स्वर्ग ही है। वहा के प्राकृतिक दृश्यो पर तो मन लहा लोट हो ही गया था। वही मेरे स्नेह भाजन श्री गोपाल नेवटिया ने पथिक की तरह एक और खण्डकाव्य लिख देने का अनुरोध किया था, जिसे कश्मीर से लौटने के बाद पूरा किया। उसे पूरा करने मे तीन महीने लगे क्योकि इलाहाबाद के सघर्षमय जीवन मे मन का शिखर तक पहुचना और वहा देर तक टिकना युग काव्य ही था।"[13]

'स्वप्न' ऐसा काव्य है जिसे त्रिपाठी ने नवयुवको के लिए देखा है ताकि वह भावी पीढी का निर्माण कर सके "इसमे मैने आजकल के नवयुवको के दुविधामय ह्रदय को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। आजकल एक ओर तो देश का दु ख दैन्य करूण रस उत्पन्न कर रहा है, दूसरी ओर सौन्दर्य श्रृगार और सुख के लिए प्रकृति का प्रोत्साहन है। नवयुवको का मार्ग श्रृगार और करूण के बीच का है। शुद्ध ह्रदय के लिए दोनो ओर आकर्षण है। किधर जाना चाहिए इसके लिए ही मैने यह स्वप्न तैयार किया है।"[14]

राम नरेश त्रिपाठी का सख्या की दृष्टि से काव्य अधिक नहीं किन्तु उनके तीनो ही खण्ड काव्य तथा अन्य स्फुट रचनाए ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रकृति प्रेम, देशानुराग, एव सामाजिक सुधार उनकी कविताओ के प्रमुख विषय है। हास्य और व्यग्य भी कुछ कविताओ मे सहज और सशक्त रूप से मुखरित हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है "कार्य क्षेत्र मे जिस स्वाभाविक स्वच्छदता (रोमैटिसिज्म) का आभास प श्री धर पाठक ने दिया था उसके पथ पर चलने वाले द्वितीय उत्थान मे त्रिपाठी जी ही दिखाई पडे। मिलन, पथिक, और स्वप्न नामक इनके तीनो खण्डकाव्यो मे इनकी कल्पना ऐसे मर्मपथ पर चलती है जिस पर मनुष्य मात्र का ह्रदय स्वभावत ढलता आया है। ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओ के भीतर

न बधकर अपनी भावना के अनुकूल स्वच्छद सचरण के लिए कवि ने नूतन कथाओ की उद्भावना की है।"[15]

उपेन्द्र नाथ 'अश्क'

प्रेम चन्दोत्तर युग के उपन्यासकारो मे अश्क का विशिष्ट स्थान है। अश्क ने साहित्य के प्रत्येक अग पर लेखनी चलाई है। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, आदि साहित्य अगो पर इनकी गति समान रूप से रही है और इनमे से किसी एक साहित्य की एकागी साधना मे सलग्न होकर इन्होने दूसरे क्षेत्रो मे अपनी गति को कुठित नही होने दिया है।[16]

अश्क का जन्म 14 दिसम्बर 1910 को भारद्वाज गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण परिवार मे जालधर, पजाब मे हुआ। अश्क माधोराम की 6 सतानो मे दूसरे थे। सारस्वत ब्राह्मण सरस्वती नदी के किनारे बसने वाले तथा भारद्वाज ऋषि के आश्रम मे शिक्षा पाने वाले ब्राह्मण है। अश्क जी मानते थे कि उनके पूर्वज जसरा (इलाहाबाद के समीप) से जालधर गये होगे। इलाहाबादी लेखको के विरोध मे अश्क जी कहते थे कि आप लोगो के जुल्म से मेरे पुरखे पजाब चले गये होगे। मै अपने पूर्व पुरूषो की धरती पर आ गया हूँ और मैने त्रिवेणी तट पर अपना खूटा गाड दिया है, कोई इसे हिला नही सकता।" [17]

अश्क आठ वर्ष तक अपने पिता के साथ, हिसार, बगवाना और सैला खुर्द आदि स्टेशनो पर रहे। पिता ने आरम्भिक शिक्षा घर पर ही दी। पाच वर्ष की आयु मे इन्हे सस्कृत के श्लोक तथा अनेक अग्रेजी के वाक्य कठस्थ थे। पिता का तबादला होने पर इनकी माता जालधर मे रहने लगी। यहीं पर 1919 मे साई दास सस्कृत एग्लो हाईस्कूल मे कक्षा तीन मे प्रवेश लिया। अश्क मे काव्य के गुण बचपन से ही दिखाई देने लगे थे। साई दास सस्कृत एग्लो हाईस्कूल से ही 1927 मे हाईस्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण की। स्कूल के दिनो मे अश्क की दशा एक यतीम जैसी थी इसे लेखक ने स्वय स्वीकार किया। "मेरे चेहरे पर तो स्कूल के दिनो मे

यतीमी वरसती थी   आकृति पर कुछ अज्ञात सा सहम, घुटा हुआ सिर, तग माथा, लम्बी चोटी, टखनो से ऊचा उटग पायजामा, पाव प्राय नगे।"[18]

स्कूल मे अश्क प्राय तुकबदी करते। 1924 मे प्रथम पजाबी कविता 'की चाही दै गुरू बनाम लगिया' लिखी तथा 1926 मे पहली उर्दू नज्म लाहौर के प्रसिद्ध उर्दू दैनिक मिलाप के रविवारीय अक मे छपी। 1927 मे उनकी पहली कहानी 'याद है वो दिन' के नाम से प्रकाशित हुई। 1930 मे पहला कहानी सग्रह 'नौ रतन' प्रकाशित हुआ। 1933 मे दूसरा कहानी सग्रह 'औरत की फितरत' प्रकाशित हुआ इसकी भूमिका मुशी प्रेचचद ने लिखी थी।[19]

1932 मे इनका विवाह इनकी इच्छा के विपरीत शीला देवी से कर दिया। इन्होने अपनी रचनाओ मे अपने जीवन के इस महत्व पूर्ण मोड का औचित्य सिद्ध करने का प्रयास किया है। अश्क का जीवन सघर्षो का जीवन है जब इन्हे अपनी पत्नी से प्यार हुआ तब वह इन्हे छोडकर चली गई। 1936 मे घटित इस घटना ने अश्क को भीतर तक झकझोर कर रख दिया। इन्होने मौत से जूझकर भी मौत से पराजित न होने की प्रतिज्ञा की। इनमे अनुभूति की तीव्रता बढने लगी, हृदय सवेदनशील एव भाव प्रवण हो गया। जीवन मे इस एकाकी पन के भार से मुक्त होने के लिए लेखक का हृदय कराह उठा –

"मै भी उकता जाता हू, निज एकाकी सूने पन से

उकता जाता हू अपने इस, भार सरीखे जीवन से।"[20]

दुख एव पीडा के इन्ही क्षणो मे अश्क ने अपना काव्य सग्रह प्रातप्रदीप पूरा किया। कविताए तो अश्क ने पत्नी की मृत्यु से पूर्व भी लिखना आरम्भ कर दिया था और वह छपने भी लगी थी लेकिन प्रातप्रदीप अश्क जी का प्रथम काव्य सग्रह है जो 1938 मे प्रकाशित हुआ।[21]

पत्नी की मृत्यु के दु ख मय वातावरण से शीघ्र ही अपने को उबार लिया। दूसरी शादी की किन्तु उनसे वह आजीवन न निभा सके और कौशल्या देवी से विवाह

कर लिया जो शिक्षित एव अध्यापिका थी। आगे चलकर कौशल्या के सहयोग से अश्क ने इलाहाबाद मे नीलाभ प्रकाशन की स्थापना की और अथक परिश्रम से उसे सुदृढ बनाया।[22]

अश्क ने अपना साहित्यिक जीवन कहानीकार एव कवि के रूप मे आरम्भ किया किन्तु उपन्यास को उन्होने अपनी साहित्य साधना का प्रमुख क्षेत्र बनाया और वर्षो एकात रूप से उपन्यास लिखते रहे। यही नही अपने आरम्भिक सफल छोटे उपन्यासो के बाद जिनमे वे एक श्रेष्ठ कलाकार के रूप मे सामने आते है और चेतन नायक के माध्यम से एक श्रृखला ही खडी कर देते है।[23]

अश्क का प्रथम उपन्यास **'सितारो का खेल'** 1940 मे प्रकाशित हुआ। आलोचक 'सितारो के खेल' को रूमानी उपन्यास मानते है और प्रथम दृष्टया यह उपन्यास रूमानी लगता भी है रावी की लहारो पर जगत और लता की सैरे, उस काली बरसाती, तूफानी रात मे बसीलाल का सिर्फ नल के सहारे लता के मकान की तीन मजिले चढ जाना, वहा लगभग उसकी घातक छलाग, अमृतराय का लता और राजरानी का अमृतराय से प्रेम और फिर धर्मशाला के वे उदास–उदास प्यार भरे एकाकी दिन, सब एक रोमानी झीने पर्दे मे लिपटे दिखाई देते हैं। एक सीमा तक सितारो के खेल रूमानी उपन्यास है किन्तु इसमे यथार्थवाद के स्पष्ट दर्शन होते हैं। जिस यथार्थवाद के दर्शन गिरती दीवारो मे होते हैं उसके बीज सितारो के खेल मे भी मौजूद है।[24]

इस उपन्यास को देखकर लेखक की भावी दिशा का अनुमान लगाना कठिन है और इस उपन्यास की समाप्ति पर स्वय अश्क ने निर्णय किया कि 'गढा गढाया' उपन्यास अब वह न लिखेगे। उपन्यास का शीर्षक कहता है कि लेखक को भाग्य पर अटूट विश्वास है या उपन्यास मे नियति को अत्यन्त शक्तिशाली चित्रित किया गया है। यह भी प्रतीत होता है कि लेखक धरती की अपेक्षा आकाश अथवा यथार्थ की अपेक्षा कल्पना को अधिक महत्व दे रहा है पर उपन्यास के अनुशीलन से दूसरे ही तथ्य प्रकट होते है। अश्क स्वीकारते है – मेरे कच्चे मन मे नियति का भी

कुछ न कुछ विश्वास अवश्य था।' उपन्यास मे चित्रित है कि व्यक्ति की कृपाओ का नियत्रण नियति करती है और इस तथ्य को प्रकट करने के लिए प्रेम और विवाह की समस्या को उठाया गया है।

इस उपन्यास की प्रेरणा सती अनुसुइया का पौराणिक आख्यान है। पौराणिक कथा मे चित्रित है कि अनुसुइया का एक अपाहिज व्यक्ति से विवाह कर दिया जाता है और वह उसे पूरे प्रेम और श्रृद्धा से अपने साथ रखती है। अश्क के मन को पौराणिक कथा का यह सत्य स्वीकार नही था। उनके मन मे अनेक प्रश्न उठे कि क्या कोई युवती ऐसा कर सकती है। बस इसी की अभिव्यक्ति के लिए सितारो के खेल की रचना हुई। [25]

अश्क ने एक घटना के माध्यम से एक बडे मनौवैज्ञानिक सत्य का उद्‌घाटन किया है। लता पूरी आस्था से पगु वशी लाल की सेवा करती है। उसकी इस निष्ठा को देखकर डा अमृत राय उसे प्रेम की दृष्टि से देखने लगता है, पर वही लता जब वशीलाल को विष दे देती है तो अमृतराय की प्रेम भावना को एक तीव्र झटका लगता है। निष्ठा देखकर लता के प्रति प्रेम उमडना स्वाभाविक है तो उसका द्योतक रूप देखकर उसके प्रति विरक्त होना भी उतना ही सत्य है। लेखक इस रचना के माध्यम से एक सदेश देता हुआ प्रतीत होता है। वह मानो लता के माध्यम से कह रहा है कि हे आधुनिक नारी, लता की तरह स्वतत्र रहकर भटको मत, प्रकृति ने जिस उद्देश्य से स्त्री–पुरुष का सृजन किया है, उसी उद्देश्य की पूर्ति का मार्ग सबसे अच्छा मार्ग है।[26]

उपेन्द्र नाथ अश्क गिरती दीवारो के पश्चात चर्चित हुए किन्तु एक उपन्यास कार के रूप मे सितारो के खेल से उनका परिचय हो गया था। सितारो के खेल की विवेचना मे ओकार शरद ने लिखा है "गिरती दीवारो की इतनी गर्मा गर्म चर्चा रही कि सितरो के खेल का जिक्र बहुत ही कम हो पाया और उपन्यास कार के रूप मे अश्क जी गिरती दीवारो के बाद ही सम्मानित हो पाए। यद्यपि जिन्होने सितारो के खेल पढा था उन्हे इस पहिले उपन्यास ने ही अश्क का उपन्यास कार की हैसियत से पूरा परिचय दे दिया था।[27]

अश्क का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास 'गिरती दीवारे' 1946 मे प्रकाशित हुआ। "गिरती दीवारे शरवत का गिलास नही कि आप उसे एक ही घूट मे कठ के नीचे उतार ले। काफी के तख्त प्याले की तरह आपको उसे घूट–घूट कर पीना होगा। पर काफी की तख्त शीरीनी (कटुमिठास) का जो शख्स आदी हो जाता है फिर वह शरवत की ओर आख उठाकर भी नही देखता।"[28]

अश्क ने अपने प्रथम उपन्यास 'सितारो के खेल' की समाप्ति पर निर्णय लिया था कि वह ऐसा गढा गढाया उपन्यास फिर न लिखेगे और इस उपन्यास मे उन्होने अपने निर्णय का पालन किया है। यह एक सामाजिक याथार्थवादी उपन्यास है, जिसमे भारतीय समाज का, विशेष रूप से निम्न मध्यम वर्गीय समाज का विशद चित्रण है तथा तत्कालीन परिस्थितियो का व्यापक वर्णन है। निम्न मध्यम वर्ग की आर्थिक चिताओ का अकन है। अपनी असफलताओ से कुठित निम्न मध्यम वर्ग का यथा तथ्य चित्रण है। उपन्यास मे पजाब के प्रसिद्ध नगर जालधर और उसके चारो ओर फैली बस्तियो, लाहौर और शिमला के मध्यम वर्गीय समाज का जीवन उसकी गतिविधयो, इच्छाओ आकाक्षाओ, लेन–देन, आचार व्यवहार समस्याओ आदि का अत्यन्त सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है। लेखक ने बिना किसी सकोच के तथा बिना किसी पक्षपात के अपने इर्द गिर्द के परिवेश का पूर्ण ईमानदारी के साथ विवरण प्रस्तुत किया है।[29]

गिरती दीवारे उपन्यास का नायक चेतन है, जिसके सम्मुख अन्य निम्न मध्यम वर्गीय युवको की भाति जीवन की कोई दिशा स्पष्ट नहीं है। उसका पिता अथवा अन्य कोई व्यक्ति उसका पथ प्रदर्शन भी नही करता। चेतन मे प्रतिभा है पर उसके सदुपयोग से वह अनभिज्ञ है। वह अपने जीवन निर्माण मे सलग्न है, उसका लक्ष्य उच्च है पर रास्ते अस्पष्ट है। फलस्वरूप उसे हर मोड पर असफलता के दर्शन होने लगते है और उसके जीवन मे विश्रृखलता आने लगती है। वह भटकने लगता है। वह कथाकार, उपन्यासकार, कवि, सगीतज्ञ, चित्रकार, अभिनेता बनना चाहता है पर अनिश्चय की भावना मे भटकने के कारण कुछ भी नही बन पाता।

गिरती दीवारे आम आदमी के सघर्ष की कहानी है। उपन्यास सामाजिक जीवन के परिपेक्ष्य मे लिखा गया जहा मध्यम वर्ग परिस्थितियो से लडता दिखाई देता है। "कहानी उसमे महत्व नही रखती, महत्व रखता है निम्न मध्यम वर्ग के वातावरण का चित्रण और उस वातावरण के अधेरे मे अपनी प्रतिभा के विकास का पथ खोजने वाले जागरूक अति भाव प्रवण युवक की तडप और उसका मानसिक विकास।"[30]

निम्न मध्यम वर्गीय जीवन मे आने वाली अनेक समस्याओ, सडे गले सस्कारो, रूढिग्रस्ता सामाजिक विषमताओ, पूजी वादी शोषण के प्रति असहाय विद्रोह छल कपट आदि का पूर्ण रूपेण चित्रण तथा इस चित्रण द्वारा ही व्यक्ति की बहुविधि कुण्ठा की दीवारो को गिराने की सकेतिक प्रेरणा देना ही इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

गिरती दीवारो के पश्चात अश्क एक श्रेष्ठ उपन्यास कार के रूप मे प्रतिष्ठित हो गये। उपन्यास लेखन को अपने लेखन मे प्रमुख रूप से अपना लिया। गिरती दीवारो के पश्चात गर्मराख (1952) प्रकाशित हुआ। बडी बडी आखे, पत्थर अल पत्थर, शहर मे घूमता आइना, एक नन्ही किन्दील, बाधो न नाव इस ठाव, निमिषा, छोटे बडे लोग, चन्द्रा, नीला मुझे माफ कर दो, धोलाघाट की छाया मे, आदि महत्वपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए।

अश्क उपन्यास कार के साथ साथ श्रेष्ठ नाटककार, कुशल कहानीकार एव कवि भी है। गद्य की इन विधाओ मे अश्क सामानान्तर लिखते रहे। उनकी पहली कहानी 1927 मे 'याद है वो दिन' प्रकाशित हुई उसके पश्चात कहानी लेखन निरन्तर जारी रहा। पिजरा, दो धारा, छीटे, काले साहब, जुदाई की शाम का गीत, सत्तर श्रेष्ठ कहानिया, उवाल और अन्य कहानिया, बैगन का पौधा, आकाश चारी, कहानी लेखिका, और झेलम के सात पुल, अश्क की श्रेष्ठ कहानिया, राचा राम दित्ता, दूरदर्शी लोग, दस प्रतिनिधि कहानिया आदि कहानी सग्रह प्रकाशित हुए।

नाटक एव एकाकी भी उतने ही श्रेष्ठ लिखे जितने उपन्यास। जय पराजय, छठा बेटा, स्वर्ग की झलक कैद और उडान, आदि मार्ग, लौटता हुआ दिन, बडे

खिलाडी, पैतरे, अलग अलग रास्ते, अजो दीदी, भवर, नाटक लिखे। देवताओ की छाया मे, तूफान से पहले, चरवाहे, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, साहब को जुकाम है, अधी गली, मुखडा बदल गया, श्रेष्ठ एकाकी सग्रह प्रकाशित हुए।

अश्क कहानीकार, नाटककार, एव उपन्यासकार के रूप मे सामने आए और साहित्य की प्रमुख विधा काव्य को भी अपनाया। कविता तो उनकी हॉवी ही रही।[31]

प्रातप्रदीप (1937) के पश्चात नाटक, उपन्यास, कहानियो के साथ साथ काव्य यात्रा भी जारी रही, उम्मिया, बरगद की बेटी, दीप जलेगा, चादनी रात और अजगर, खोया हुआ प्रभा मण्डल, सडको पे ढले साये, अदृश्य नदी, एक दिन आकाश ने कहा, स्वर्ग एक तलघर है आदि प्रसिद्ध कविता सग्रह प्रकाशित हुए।

अश्क का साहित्यिक जीवन जितना उज्ज्वल व्यक्तिगत जीवन उतना ही अधकार मय। उन्होने जीवन भर सघर्ष किया। इलाहाबाद मे उन्हे व्यक्तिगत एव साहित्यिक शत्रुओ से सघर्ष करना पडा। साहित्यिक शत्रुओ मे इलाचन्द्र जोशी ने आरोप लगाया कि अश्क कभी सामाजिक उद्देश्य से प्रतिबद्ध नही रहे।

एक ओर कुछ साहित्यकार उनके खिलाफ लिख रहे थे तो इलाहाबाद के अनेक साहित्यिक गुटो ने उनका स्वागत भी किया। नीलाभ प्रकाशन शुरू किया किन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अश्क स्वय और पत्नी कौशल्या किताबो का बैग उठाए पूरे देश के दौरे करते थे।[33]

समस्त सघर्षो के बाद भी अश्क की कलम कभी नही रूकी और वह जीवन भर साहित्य साधना करते रहे। साहित्य के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए। अश्क जी न केवल भारत के बल्कि विश्वके श्रेष्ठतम लेखको मे से एक थे।

- लाचन्द्र जोशी

इलाचन्द्र जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी सहित्यकार है। कविता, कहानी, निबध मे लेखनी चलाई किन्तु वह एक श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप मे प्रतिष्ठित हुए। जोशी का जन्म 13 दिसम्बर 1902 को अल्मोडा के एक सुसस्कृत परिवार मे हुआ।

इनके पिता पडित चन्द्र वल्लभ जोशी वन विभाग मे चीफ कजर्वेटर ऑफ फारेस्ट के निजी सचिव एव प्रसिद्ध सगीतज्ञ भी थे।[34]

जोशी को शैशव काल से ही लिखने का शौक था जब वह सातवीं कक्षा मे पढते थे, तब उन्होने सुधाकर नाम की एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली। उस समय सुमित्रा नदन पत इनसे पढाई मे कुछ साल आगे थे, उसी स्कूल मे पढने के कारण जोशी पत से प्रभावित हुए। इस पत्रिका मे उन्होने कविवर पत और यशस्वी नाटक कार गोविद बल्लभ पत की रचनाए प्रकाशित करवाई। इसलिए कवविर पत और शरत चन्द्र का साहचर्य उनकी सृजनात्मक प्रतिभा के लिए प्रेरक मत्र बना जो उन्हे महान साहित्यकार बनाने मे उपयोगी सिद्ध हुआ। अन्य साहित्यकारो से भी वह प्रभावित हुए। उन्होने लिखा है "जो चार महाकवि अपने जीवन और कृतित्व से मेरे साहित्य रहस्यान्वेषी मन को जीवन भर आच्छन्न किए रहे, वे है – शेक्सपियर, कालिदास, तुलसीदास और रवीन्द्र नाथ।[35]

जोशी जी पत की पीढी के ही साहित्यकार है जिन्होने अल्मोडा छोडकर प्रयाग को अपनी कर्मभूमि बनाया। 1925 से जोशी ने लिखना आरम्भ कर दिया था और हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे अपनी काव्य कृति 'विजनवती' के साथ प्रवेश किया।[36] विजनवती मे छायावादी शैली की कुछ रूपकमय या प्रतीकमय कविताए सकलित है। कविताओ मे अधिकतर विशादरस की प्रवलता है। जोशी जी की कविताओ मे मनोवैज्ञानिक कथा प्रणाली के दर्शन होते हैं। राजकुमार, दमयती, महाश्वेता, शकुन्तला आदि कविताओ मे मनोवैज्ञानिकता, प्रतीकात्मकता, वैयक्तिकता तथा नारी आत्मा के प्रति श्रद्धा और महानता का दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देता है। अपनी कवितओ के सम्बन्ध मे जोशी जी ने लिखा है "विजनवती मे मैने विजन की उस अमूर्त मानस प्रतिमा का ट्रैजिक गीत गाया है जो मेरे लिए किसी मूर्तमती जीवित प्रतिमा से भी अधिक सजीव तथा सत्य है।[37]

जोशी ने लगभग 100 कहानिया लिखी है जो "रोमाटिक छाया" डायरी के नीरस पृष्ठ, होली और दीवाली, आहुति, खण्डहर की आत्याए, धूपलता, आदि सग्रहो

मे सकलित है। इनके अतरिक्त उपनिषदो की कथाए, महापुरूषो की प्रेम कथाए नामक दो और कथा सग्रह है। जोशी की अधिकाश कहानिया भी आत्मचरित शैली मे लिखी गई है। सब मे मनोवैज्ञानिकता का आधार और आग्रह है।[38]

जोशी ने अपना साहित्यिक जीवन कवि एव कहानीकार से प्रारम्भ किया किन्तु बाद मे वह उपन्यासकार के रूप मे प्रतिष्ठित हुए। मानव उद्वेगो को प्रकट करने के लिए वह कविता एव कहानी छोडकर उपन्यासो की ओर आए। उन्होने लिखा है, "उपन्यास लिखने की रूचि मेरे मन मे क्यो जगी इस प्रश्न की ओर मेरा ध्यान इसके पहले कभी नही गया। जब पहला उपन्यास लिखने बैठा था तब सिवा लिखते चले जाने के क्यो और कैसे ? इस तरह का तो सवाल ही मेरे मन मे नही उठा। पर जब आज इस प्रश्न पर विचार करता हूँ तब ऐसा लगता है कि मेरी इस रूचि के पीछे निश्चिय ही कोई मनोवैज्ञानिक कारण, धारणा या विश्वास अवश्य ही मेरे अन्जान मे काम कर रहा होगा। विश्लेषण करने पर कई कारणो मे से एक कारण सुस्पष्ट रूप से मेरे आगे उभर उठता हैं घृणामयी जो मेरी पहली औपन्यासिक कृति थी, इसके पूर्व मे छुट–पुट कविताए या छोटी कहानिया लिखा करता था। कहानियो से भी अधिक रूझान कविता लिखने की ओर था पर निरन्तर कटु और कठोर यथार्थ से सघर्ष होते रहने से मुझे (अनजाने मे ही) लगा कि स्वय अपनी और सारे समाज की वास्तविक पीडाओ का चित्रण कविता की अपेक्षा मै उपन्यास के माध्यम से अधिक ईमानदारी और सचाई से कर सकता हूँ। कविता द्वारा केवल साकेतिक शैली मे ही उस मर्मपीडा का भावात्मक आभास दिया जा सकता है पर उपन्यास द्वारा उसे जीवन और ज्वलत सत्य का रूप दिया जा सकता है, साथ ही औपन्यासिक शैली मे काव्यगत भाव पक्ष तो निहित है ही।"[39]

जोशी का प्रथम उपन्यास 'घृणामयी' 1929 मे प्रकाशित हुआ। घृणामयी को परिस्कृत रूप मे 1941 मे जोशी ने **लज्जा** नाम से प्रकाशित किया। इस कृति मे उपन्यासकार का प्रमुख लक्ष्य नायिका की आत्म निगर्हना द्वारा अपने भाई की हत्या के कारण उन कार्यो के प्रति प्रायश्चित है जो उसकी दमित वृत्तियो एव यौन भावना

के कारण पूर्ण हुए। भाई की मृत्यु के साथ पिता की मृत्यु भी उसी का परिणाम है। इसका ही पूर्ण चित्र जोशी जी ने उपन्यास मे दिया है। कहानी निपट निराशा से आरम्भ होकर गहन विषाद मे समाप्त हो जाती है।

जोशी का दूसरा उपन्यास **'सन्यासी'** है जो 1941 मे प्रकाशित हुआ। यह सर्वप्रथम विश्वामित्र के प्रथम वर्ष के अको मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। मुख्य पात्र नद किशोर, शाति, वलदेव एव जयती है। लज्जा के विपरीत उपन्यास के नायक नदकिशोर के चरित्र का गठन हुआ है जो कि अपने अह भाव से ग्रसित है। अह से परिचालित होने के कारण उसमे अमानवीय गुण सदेह से उद्‌भूत ईर्ष्या, विफलता से उत्पन्न जलन आदि प्रमुख रूप मे है। नदकिशोर का चरित्र एक मनोवैज्ञानिक तथ्य का प्रतीक है। उसके चरित्र के समस्त विकास और परिणिति को अकन करके इलाचन्द्र जोशी एक मनोवैज्ञानिक नियम को स्वरूप प्रदान करते है।

जोशी की तृतीय कृति **पर्दे की रानी** है जो 1941 मे प्रकाशित हुई। यह लगभग 220 पृष्ठो का छोटा उपन्यास है। यह उपन्यास भी आत्मकथा शैली मे लिखा गया है, पर चार भागो मे विभाजित है। पहले भाग मे शीला की कहानी है, दसरे मे निरजना की, तीसरे मे शीला की और चौथे मे फिर निरजना की कहानी है। तब पाठक सशय मे पड जाता है कि उपन्यास मे दो पात्रो की अलग अलग कहानिया हैं क्या ? नही वास्तव मे कहानी तो निरजना की ही है, शीला केवल सुनाती है। शीला की कहानी आती भी है तो गौण रूप मे आती है पर्दे की रानी उपन्यास के सभी पात्र मुख्य रूप मे कुठित मानसिक तनाव मे घिरे हुए है और अपने आप मे प्रतीक वन गये हैं।

जोशी ने इस उपन्यास मे यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि हीनता की भावना थोडी या अधिक मात्रा मे सबमे रहती है। हीनता का बोध, हीनता जनित क्षति पूर्ति की आकांक्षा और आकाक्षा की पूर्ति के लिए शक्ति प्राप्त करने की भावना, इन तीन बातो की शिकार पर्दे की रानी मे निरजना एव इन्द्र मोहन हैं।

जोशी का उपन्यास **'प्रेत और छाया'** सन् 1945 मे प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के मुख्य पात्र चार है – मजरी, नदिनी, भुजौरिया जी और पारसनाथ। अकेले पारस का सम्बन्ध तीन नारियो से होता है। इसी सम्पर्क मे उसके कतिपय दुर्गणो का स्पष्टीकरण होता है। पारसनाथ के मन पर एक विशेष आघात उसकी मॉ के चरित्र सम्बन्धी था। इस आघात के फलस्वरूप वह नारी जाति से घृणा करने लगता है और समाज मे उन रूढियो को महत्व नही देता जो आवश्यक है। इस प्रकार नद किशोर मानसिक तनाव और कुठा का शिकार बन जाता है।

जोशी ने लम्बी भूमिका मे दृष्टिकोण को अधिक स्पष्ट किया है । उस भूमिका का मूल स्वर यही है कि सभी प्रकार के जीवन चक्रो की मूल परिचालिका शक्ति है विश्व मानव की अज्ञात चेतना, अतर्जीवन और अज्ञात चेतना से सम्बन्धित रचना ओ की उपेक्षा करने से काम न चलेगा इत्यादि।

जोशी का उपन्यास **'निर्वासित'** 1946 मे प्रकाशित हुआ। जोशी इस उपन्यास मे भी अन्य उपन्यासो की भाति मानसिक ग्रथियो एव कुण्ठाओ की कथा कहते है। निर्वासित मे भी उन्होने अहमन्यता, स्वरित और आत्म केन्द्रित जैसी हीन भावनाओ को कथा आधार बनाया है। निर्वासित मे उन्होने महीप जो कि प्रमुख पात्र है, उसकी पराभूत मनोवृत्ति और मानसिक जटिलता को कथा का आधार बनाया है। निर्वासित की भूमिका मे उपन्यास की कथा के आधार की ओर सकेत किया गया है – (उपन्यास का नायक महीप) जीवन के किन जटिल लाज सकुल पथो से होकर विचरण करता है, किन किन घटना चक्रो का सामना उसे करना पडता है और उनकी क्या–क्या और कैसी प्रति क्रियाए उसके भीतर होती है, इन्ही सब बातो का चित्रण करने का प्रयत्न मैने किया है।"[40]

उपन्यास के प्रमुख प्रात्र महीप, नीलिमा, प्रतिभा, रूपा,शारदा देवी, डा लक्ष्मी नारायण सिह और धीरज सिह है। इन पात्रो की मानसिक स्थितिया एक सी मिलती है परन्तु गौण पात्रो की भी कमी नही, जो कि इन पात्रो की मानसिक दशा को उभारने मे सहायक सिद्ध हुए।

मुक्तिपथ जोशी जी का एक अन्य महत्वपूर्ण उपन्यास है जो 1950 मे प्रकाशित हुआ। यह उनका परवर्ती उपन्यास माना जाता है। आरम्भ के उपन्यासो मे वह मनोविज्ञान से अधिक जुडे हुए थे और मानसिक आघात से समस्याए कर दिखाते हैं।

यह उपन्यास जोशी का सर्व प्रथम ऐसा उपन्यास है जहा आधुनिक मनोविश्लेषण की गहरी छानबीन के द्वारा मानसिक स्तरो को उधाडने की चेष्टा कम की गई है। यही कारण है कि यहा यौन वृत्तियो एव मानसिक ग्रथियो से उत्पन्न समस्याओ का ह्रास हो जाता है एव व्यक्ति के सबल पक्ष का उभार होता है।

जोशी जी ने उपन्यास लेखन को प्रमुख रूप से अपनाया और वह निरन्तर लिखते रहे। 20वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे भी अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए। सुबह के भूले (1951) जिप्सी (1952) जहाज का पछी, ऋतु चक्र (1968) कवि की प्रेयसी (1976) प्रमुख है।

जोशी जी ने काव्य, कहानी एव उपन्यास के अतरिक्त अनेक समीक्षात्मक निबधो का सृजन किया । यद्यपि जोशी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्य कार रहे है किन्तु वह पाठको के समक्ष एक उपन्यासकार के रूप मे ही प्रतिष्ठित हुए।

नरेश मेहता

समकालीन रचनाकारो के मध्य नरेश मेहता उन गिने चुने लोगो मे से हैं जिनके लिए रचना कर्म ही एक मात्र प्रधान कर्म है। शेष सारे कार्य व्यापार अनुसगिक है। नयी कविता मे अपनी भाषिक सजगता के कारण नरेश जी अलग खडे दिखाई देते है। काव्य के समानान्तर उनका गद्य साहित्य भी कुछ कम समृद्ध नहीं है किन्तु यह निर्विवाद सत्य है वह कहीं भी अपना कवि व्यक्तित्व छिपा नहीं पाए है।

नरेश मेहता का जन्म मालवा के शाजापुर कसबे मे 15 फरवरी 1922 को हुआ। बचपन मे ही माता का देहान्त हो गया। मालवा व उज्जैन मे बाल्यकाल एव किशोरावस्था बीती। काव्य प्रतिभा मेहता मे बचपन से ही दिखाई देने लगी थी।[41]

नरेश मेहता की आरम्भिक कविताए छायावादी एव रहस्यवादी ढग की थी, किन्तु आगे चलकर इन्होने उसे कविता कहने से ही इकार कर दिया । अपनी पिछली कविताओ पर टिप्पणी करते हुए वह लिखते है, "अपनी पिछली छायावादी एव रहस्यवादी कविताओ को कविता नही मानता। क्योकि किसी भी प्रकार के प्रभाव मे लिखी गई कविता को द्वितीय श्रेणी का काव्य कहना होगा और यह द्वितीय बाली बात मुझे पसद नही।"[42]

दूसरा सप्तक नरेश मेहता की दस कविताओ से सज्जित है। ये दशो कविताए नरेश की प्रकृति चेतना, प्रेमिल भावना और सस्कृतिक भूमिका पर कवि की विश्व मानवता वादी दृष्टि की उद्‌बोधक है।

किरन मयी ! तुम स्वर्ण वेश मे;

स्वर्ण देश मे!

सिचित है केसर के जल से,

न्द्रलोक की सीमा,

आने दो सैन्धव घोडो को

रथ कुछ हल्के धीमा,

पूषा के नभ के मदिर मे

वरूण देव को नींद आ रही,

आज अलक नदा किरनो की वशी का सगीत गा रही

अभी निशा का छन्द शेष है, अलसाये,

नभ के प्रदेश मे।[43]

दूसरा सप्तक के पश्चात नरेश मेहता का स्वतत्र रूप से काव्य सग्रह 'बन पाखी सुनो' प्रकाशित हुआ। बन पाखी सुनो, के पश्चात, सशय की एक रात, बोलने

दो चीड को, मेरा समर्पित एकात, शबरी, महाप्रस्थान, तुम मेरा मौन हो, उत्सवा, और अरण्या जैसे महत्वपूर्ण काव्य प्रकाशित हुए।

काव्य के साथ साथ नरेश मेहता के नाटक, उपन्यास, कहानी आदि विधाओ मे लेखनी चलाई। खण्डित यात्राए, तथा सुबह सुबह के घण्टे नाटक लिखे। सनोबर के फूल, ओर पिछली रात की वरफ एकाकी सग्रह प्रकाशित हुए। नरेश महेता कवि एव नाटक कार के साथ साथ श्रेष्ठ उपन्यासकार भी है। उन्होने उत्तर कथा, डूबते मस्तूल, दो एकात, नदी यशस्वी है, प्रथम फाल्गुन, यह पथ बधु था, जैसे श्रेष्ठ उपन्यास लिखे।

मेहता ने कहानी एव निबध लेखन भी किया। मेहता उन कवियो मे से एक है जिन्होने 20वी शताब्दी के पूर्वाद्ध एव वर्तमान कटु यथार्थ को देखा और भोगा है।

जगदीश गुप्त

डॉ जगदीश गुप्त की सृजन धर्मी अगुलिया लेखनी उठाती है तो कविता रचती है, तूलिका पकडती है तो चित्राकन करती है, विलुप्त भारतीयता के अन्वेषण मे भित्तीचित्रो और जमीदोज मूर्तियो का अमूल्य कोष खोज लाती है और जीवन की चितन व्याख्या की प्रक्रिया मे कला समीक्षा के नये प्रतिमान स्थापित करती है। वह मन–प्राण से कलाकार है। काव्य रचना और चित्राकन एक ही उदग्र चेतना के विभिन्न आयामो की अभिव्यक्ति है। यह सच है कि अधिकाश हिन्दी पाठको की दृष्टि मे वह ब्रज भाषा की कोमल कात पदावली मे छद से लेकर आधुनिक कविता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप मे समादृत है। गुप्त परिमल के सस्थापको मे से एक है।[44]

जगदीश गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1924 को शाहावाद हरदोई मे हुआ। उच्च शिक्षा इलाहाबाद मे प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम ए डी फिल तथा चित्रकला एव सस्कृत मे डिप्लोमा प्राप्त किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सहित्य वाचस्पति की उपाधि से विभूषित किया। अध्ययन पूरा कर 1950 मे इलाहाबाद विश्व विद्यालय मे अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया और यही से 1987–88 मे हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप मे सेवामुक्त हुए।[45]

गुप्त जी कला साहित्य एव शिक्षा के उन्नयन मे अग्रणी भूमिका निभाते रहे है। वह उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक प्राचीन सस्था हिन्दुस्तानी एकेदमी के सचिव तथा अध्यक्ष रह चुके है। इस अवधि मे 'हिन्दुस्तानी' शोध पत्रिका के प्रधान सपादक रहे। कला त्रैमासिक और नयी कविता पत्रिकाओ का भी उन्होने सपादन किया। नयी कविता पत्रिका अपने समय मे समकालीन कविता की मानक पत्रिका के रूप मे प्रतिष्ठित हुई थी।[46]

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ जगदीश गुप्त ने ब्रजभाषा के छन्दो को नयी अभिव्यजना से मडित किया है। खडी बोली काव्य के युग मे अपनी कलात्मकता के कारण उनके छद आधुनिक साहित्यकारो के मध्य उसी प्रकार लोकप्रिय हुए जिस प्रकार प्रतिष्ठित छदकारो के मध्य हुए थे। आधुनिक भावबोध और वैश्विक चेतना उनकी 'नयी कविता' की अन्तर्वस्तु है जिसके कारण समकालीन शीर्ष कवियो मे उनका महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा शिल्प और समकालीन कविता की रचनाशीलता के विषय मे उनकी समीक्षाए नये प्रतिमानो की स्थापना करती है। छद युक्त कविता की अन्तरलय पर उन्होने जोर दिया और ऐसी कविता को आप के विघटित मानव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति माना। त्रयी के माध्यम से कई नवोदित कवियो को उन्होने प्रतिष्ठित किया।

गुप्त जी के साहित्यिक योगदान को देखते हुए उन्हे अनेक सम्मान प्रदान किए गये। 'गुजराती एव व्रजभाषा कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन' नामक शोध ग्रथ पर वृज साहित्य मण्डल का विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया। प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला तथा वृजभाषा छद शती उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान लखनऊ द्वारा पुरस्कृत हुईं। हिन्दी सस्थान ने उन्हे 'साहित्य भूषण' सम्मान से समादृत किया और मध्यप्रदेश शासन द्वारा सर्वोच्च "मैथिलीशरण गुप्त सम्मान" से विभूषित किया गया।

गुप्त जी का रचना ससार विशाल है। नयी कविता, नाव के पाव, लेखक और राज्य, शब्द देश, गुजराती और व्रजभाषा कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय कला के पद चिन्ह, रीति काव्य सग्रह, हिमविद्ध, स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षण

शिविर प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, रीतिकाव्य, कृष्ण भक्ति काव्य, आदिम एकात, नयी कविता, स्वरूप और समस्याए, काव्य सेतु युग्म, कवितान्तर त्रयी 1, 2, 3, शम्बूक, छदशती, केशवदास, नवधा, गोपा गौतम, बोधिवृक्ष, हिन्दी की प्रकृति और विकास, माँ के लिए, साझ, कुम्भ दर्शन, जयत, आदि प्रमुख कृतिया है जिन्हे उन्होने मा भारती के चरणो मे अर्पित किया है।

विजयदेव नारायण साही

विजय देव नारायण साही 'परिमल' के सस्थापक सदस्यो मे से एक थे। 10 दिसम्बर सन् 1944 को अपने उत्साह पूर्ण विद्यार्थी जीवन मे साहित्यिक अभिरूचि रखने वाले कुछ मित्रो ने अनायास ही यह सकल्प किया कि वे मिलजुलकर एक अपरिभाषेय सस्था बनायेगे, जिसका नाम परिमल होगा वर्तमान सदस्यो मे केवल विजयदेव नारायण साही ही एक मात्र ऐसे है जो उसकी सर्वप्रथम गोष्ठी मे सम्मिलित हुए थे।[47]

विजयदेव नारायण साही का जन्म 7 अक्टूबर 1924 को वाराणसी मे हुआ।[48] अपने अध्ययन काल से ही वह प्रयाग के साहित्यिक वातावरण मे घुल मिल गये। 1948 मे एम ए किया और कुछ समय काशी विद्यापीठ मे अध्यापन के पश्चात इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अग्रेजी के प्राध्यापक होकर स्थायी रूप से आ गये। अग्रेजी के अध्यापक होते हुए भी आप जीवन पर्यन्त हिन्दी के काव्य और आलोचना के सृजनात्मक लेखन मे लगे रहे।[49]

सख्या की दृष्टि से प्रकाशित रचनाओ की सख्या ज्यादा नही है – तीसरा सप्तक, मछलीघर, छठवा दशक, साखी, साहित्य और साहित्यकार का दायित्व आदि कुछ कृतियो को प्रकाशित कराया। आलोचना एव नई कविता का सपादन किया। साही की प्रकाशित रचनाओ की सख्या अवश्य ही कम है किन्तु उन्होने साहित्य का सृजन कम नहीं किया दुर्भाग्य से वह प्रकाशित न हो सका। "विजयदेव नारायण शाही के बारे मे एक भ्रम है कि उन्होने बहुत कम लिखा है इसमे सच सिर्फ इतना है कि उन्होने बहुत कम छपाया है कुछ भी प्रकाशित कराने से वे हमेशा कतराते थे लेकिन लिखना और

पढना उन्होने अतिम सास तक किया। कम लोगो को पता होगा कि साही ने सशक्त नाटक लिखे, नाटक खेले, प्रमुख भूमिकाए की निर्देशन भी किया। साही ने कहानिया लिखी प्रचुर मात्रा मे व्यग्य, कविता, कहानी, पैरोडी, सडक साहित्य डायरिया जिनमे अपने वक्त के साहित्यिक एव राजनीतिक जगत के बडे ब्योरे हैं उनमे कुछ ऐसे विषय भी है जो साही को रात दिन मलते रहते थे।[50]

धर्मवीर भारती

पत्रकार और प्राध्यापक होते हुए भी धर्मवीर भारती मूलत साहित्यकार हैं। सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हे प्रयाग की साहित्यिक धरती से मिली। कौन सी साहित्यिक विधा है जो उनकी प्रतिभा सम्पन्न अभिव्यक्ति से अछूती रही हो ? कविता कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना, अनुवाद, रिपोर्ताज सभी को तो उनकी लेखनी से बहुत कुछ मिला।

धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद के अतरसुइया मुहल्ले मे 24 दिसम्बर 1926 ई को हुआ। पिता का नाम चिरजी लाल वर्मा तथा माता का नाम नदा देवी था।[51] स्कूली शिक्षा के लिए वे डीएवी हाईस्कूल भेजे गये। आठवीं कक्षा मे थे तभी पिता का देहान्त हुआ इस स्थिति मे उनके मामा अभय कृष्ण जोहरी ने मदद की और वह आगे पढ सके। इन्हीं दिनो के विचार मथन मे अधायुग लिखने की प्रेरणा दी।[52]

सन् 1945 मे भारती ने प्रयाग विश्वविद्यालय से बीए की परीक्षा उत्तर्ण की। आर्थिक विपन्नता से ही भारती को प्रारम्भ से स्वावलम्बी बनना पडा। बीए की पढाई के दौरान वे ट्यूशने करते। एमए मे पढाई करते समय पदमकात मालवीय द्वारा सम्पादित अभ्युदय नामक दैनिक पत्र मे पत्रकारिता को अपनाया ताकि पढ़ाई का खर्च निकल सके।

एमए करने के पश्चात डा धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन मे सिद्ध साहित्य पर शोध कार्य किया। सन् 1948 मे लीडर प्रेस से प्रकाशित 'सगम' नामक साप्ताहिक मे सह सम्पादक के रूप मे कार्य करना आरम्भ किया। सह सम्पादक वह सिर्फ दो वर्ष रहे।

1950 मे उन्होने अपना शोधकार्य पूर्ण कर लिया और इसी वर्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभाग मे प्राध्यापक हो गये।[53]

प्रकाशित रचना की दृष्टि से सबसे पहले 1946 मे उनका कहानी सग्रह मुर्दो का गॉव प्रकाशित हुआ। इसमे भारती की नौ कहानियो का सकलन है – मुर्दो का गाव, एक आदमी की कीमत, आदमी का गोस्त, वीमारिया, कफन चोर, हिन्दू या मुसलमान, कमल और मुर्दे, एक पत्र, कहानियो से पहले।

मुर्दो का गाव के अतिरिक्त भारती जी के 'चॉद और टूटे एुए लोग', 'बद गली का आखिरी मकान' प्रमुख कहानी सग्रह है। भारती ने दो उपन्यास लिखे जिनका उपन्यास साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है गुनाहो का देवता, और सूरज का सातवा घोडा।

काव्य को भी भारती की कलम ने स्पर्ष किया। ठडा लोहा, सातगीत वर्ष उनके प्रमुख कविता सग्रह है। कनुप्रिया प्रसिद्ध प्रबध काव्य है। अधा युग काव्य नाटक लिखा। नदी प्यासी थी एकाकी सकलन प्रकाशित हुआ।

धर्मभारती सच्चे अर्थो मे साहित्यकार थे अनेक स्फुट काव्य लिखा, आलोचना, एव अनेक निबध लिखे तथा सगम, निकष, आलौचना, और धर्मयुग जैसी साहित्यिक पत्रिकाओ का सपादन किया।

प्रयाग धरती के अन्य साहित्यकारो मे उक्त साहित्यकारो के अतिरिक्त केशवचन्द्र वर्मा, लक्ष्मीकात वर्मा, रघुवश, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विपिन अग्रवाल आदि साहित्यकार सम्मिलित है। प्रयाग उस समय साहित्य का केन्द्र था, साहित्यकार ससद, जैसी सस्थाए थी जहा दूर–दूर से साहित्यकार कवि लेखक आते और साहित्य साधना करते थे।

सन्दर्भ एवं फुट नोट

1 साक्षात्कार डॉ रामकमल राय, इलाहाबाद दिनाक 15 9 1999

2 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहासए खण्ड 9 ना प्र स 1983, पृष्ठ 365

3 वही, पृ 365

4 वही, पृ 366

5 त्रिपाठी रामनरेश , आधुनिक कवि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद शक 1884, पृष्ठ–9

6 वही, पृष्ठ 10–11

7 वही, पृष्ठ 10–11

8 त्रिपाठी रामनरेश , मिलन, 1917 पृष्ठ 70

9 त्रिपाठी, रामनरेश , आधुनिक हिन्दी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद शक 1884 पृष्ठ–11

10 वही, पृष्ठ 12

11 पाण्डेय सुधाकर (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड IV ना प्र स 1983 पृष्ठ 367

12 वही, पृष्ठ 368

13 त्रिपाठी रामनरेश , आधुनिक हिन्दी कवि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इला शक 1884 पृष्ठ 12–13

14 पाण्ड्रेय सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड IX ना प्र स 1983 पृष्ठ 371–372

15 शुक्ल रामचन्द्र , हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा स 2049 (वि) छब्बीसवा सस्करण पृष्ठ 340–341

16 गुप्ता कमल , अश्क व्यक्तित्व और कृतित्व, दीपक पब्लिशर्स जालधर, 1984, पृष्ठ 9

17 साक्षात्कार श्री नीलाभ अश्क, इलाहाबाद दिनाक 13 8 2000

18 अश्क उपेन्द्र नाथ , ज्यादा अपनी कम परायी, पृष्ठ 169

19 अश्क उपेन्द्रनाथ , औरत की फितरत, 1933 पृष्ठ 1

20 अश्क उपेन्द्र नाथ , बरगद की बेटी, पृष्ठ 34

21 अश्क उपेन्द्र नाथ , प्रात प्रदीप 1938 पृष्ठ 1

22 साक्षात्कार श्री नीलाभ अश्क इलाहाबाद दिनाक 13 8 2000

23 गुप्त कुलदीप चन्द्र , उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ अश्क, पचशील प्रकाशन जयपुर 1986 पृष्ठ 1

24 अश्क उपेन्द्र नाथ 'सितारो के खेल, नीलाभ प्रकाशन 1974 (पाचवा सस्करण) पृष्ठ 7

25 आनन्द रवेल चन्द , (सपा) हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार (खण्ड 1) सूर्य प्रकाशन दिल्ली, 1978 पृष्ठ 193–194

26 वही पृष्ठ 194

27 अश्क उपेन्द्र नाथ , 'सितारो के रवेल' नीलाभ प्रकाशन 1974 (पाचवा सस्करण) पृष्ठ 6

28 अश्क उपेन्द्र नाथ , 'गिरती दीवारे तृतीय सस्करण (मुख्य पृष्ठ पर)

29 आनन्द रवेल चन्द , (सपा) हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार खण्ड 1, सूर्य प्रकाशन दिल्ली 1978, पृष्ठ 194

30 अश्क उपेन्द्र नाथ , गिरती दीवारे, तृतीय सस्करण पृष्ठ 21

31 गुप्त कुलदीपचन्द्र , उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ अश्क 1986 पृष्ठ 7

32 साक्षात्कार श्री नीलाभ अश्क, इलाहाबाद दिनाक 13 8 2000

33 साक्षात्कार श्री नीलाभ अश्क, इलाहाबाद दिनाक 13 8 2000

34 जैन राजेन्द्र , प इलाचन्द्र जोशी के औपन्यासिक नायक का अतर्द्वन्द्व, सूर्य प्रकाशन नई दिल्ली 1988, पृष्ठ 97

35 धर्मयुग पत्रिका अक 16 जनवरी 1977, पृष्ठ 18

36 तिवारी बलभद्र , इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास, रणजीत पब्लिशर्स, दिल्ली 1958 पृष्ठ 78

37 झारी कृष्णादेव , उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, साहित्यिक प्रकाशन अम्बाला 1959 पृष्ठ 35

38 वही, पृष्ठ 36

39 साहित्य सदेश, जुलाई–अगस्त 1956, पृष्ठ 77

40 जोशी इलाचन्द्र , निर्वासित 1946 पृष्ठ 5

41 सिह विद्या , नरेश मेहता का साहित्य एक अनुशीलन, ग्रथायन अलीगढ, 1990 पृष्ठ 23

42 अज्ञेय सच्चिदानन्द हीरानद वात्स्यायन , दूसरा तार सत्तक 1951 पृष्ठ 109

43 वही, पृष्ठ 116

44 गुप्त जगदीश , परिमल स्मारिका (सपा) 1971 पृष्ठ 9

45 साक्षात्कार जगदीश गुप्त इला 16 8 2000

46 साक्षात्कार जगदीश गुप्त इला 16 8 2000

47 गुप्त जगदीश , परिमल स्मारिका (सपा) 1971 पृष्ठ 9

48 साही विषय देव नारायण , छठवा दशक, हिन्दुस्तानी एकेडमी इला 1987 आवरण पृष्ठ

49 साही विजय देवनारायण , साहित्य और साहित्यकार का दायित्व, हिन्दी साहित्य सम्मेलन 1983 पृष्ठ 6

50 वही, पृष्ठ 26

51 वास्कर पुष्पा , धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और साहित्यकार, अलका प्रकाशन कानपुर 1987 पृष्ठ 17–18

52 वही, पृष्ठ 18–19

53 सोनवणे चन्द्र भानु सीताराम , धर्मवीर भारती का साहित्य , सृजन के विविध रग, पचशील प्रकाशन जयपुर 1979 पृष्ठ 25

अध्याय - 4

पत्र-पत्रिकाओं का साहित्यिक योगदान

अध्याय-4

पत्र-पत्रिकाओं का साहित्यिक योगदान

सन् 1900 से 1950 तक के काल को एक विशिष्ट साहित्यिक युग की सज्ञा दी जा सकती है।[1] इस युग को नीतिवादी और इतिवृत्तात्मक प्रधान कहा गया है। उसमे पौराणिकता की ओर रूझान की प्रधानता बतलाई गई है। भाषा शैली की रूक्षता तथ्य वादिता और वरोन्मुखी दृष्टि को भी महत्वपूर्ण कहा गया है। यह युग भावो की ही प्रबलता का युग नही, यह ज्ञान सपादन और सतर्क अभिव्यक्ति का युग है।[2] इसमे क्लासिकल युग होने की क्षमता नही है परन्तु मर्यादा औचित्य तथा रचना सौष्ठव पर विशेष ध्यान है। इस युग की पत्र पत्रिकाओ के प्रत्येक अक मे हमे आधुनिक साहित्यिक चेतना के विकास के सूत्र मिलेगे। अनन्त सम्भावानाओ के बीज जिस युग मे मिलते है उसे अभिनन्दनीय ही कहा जाएगा।[3]

इस युग के पूर्व हिन्दी पत्र–पत्रिकाओ की स्थिति बडी दयनीय थी। प्रथम तो उसके पाठक ही अत्यल्प थे क्योकि हिन्दी भाषा तब तक उनकी रोजी रोटी से नही जुडी थी। दूसरे पराधीन देश की पत्र–पत्रिकाओ पर शासक वर्ग का बडा नियत्रण था। जनता का अशिक्षित होना भी एक कारण था। इसके साथ ही जनता को उतना अल्प मूल्य भी देना भारी पडता था। जब से पत्र ने सचित्र रूप धारण किया है बराबर चित्र नही दे सका, इसके दो विशेष कारण है – प्रथम ग्राहको की लापरवाही अर्थात अस्वीकृति की सूचना न देना और वी पी जाने पर लौटाकर वृथा हानि पहुचाना।[4]

20वी शताब्दी की पत्रकारिता पर विचार करते समय जो बात सबसे पहले आकर्षित करती है वह है युग का राष्ट्रीय जागरण।

20वी शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता साहित्यिक सास्कृतिक आन्दोलनो का माध्यम बनी और इससे साहित्यिक सवेदना और भाषा सस्कार का धरातल क्रमश उन्नत होता गया। यद्यपि राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम के उस युग मे साहित्यिक, सास्कृतिक चेतना की पत्रिका का भी राजनीति निरपेक्ष रहना सम्भव नही था।[5]

इस शताब्दी मे धर्म और समाज सुधार के आन्दोलन कुछ पीछे रह गये और जातीय चेतना ने धीरे–धीरे राष्ट्रीय चेतना का रूप ग्रहण कर लिया। फलत अधिकाश पत्र, साहित्य और राजनीति को लेकर ही चले। इस समय विदेशी सत्ता से सत्रस्त जनता काग्रेस के नेतृत्व मे स्वशासन की माग करने लगी थी। बायकाट और स्वदेशी की नीतियो के द्वारा विदेशी सत्ता का परोक्ष विरोध भी किया जाने लगा था। ऐसे समय जनता की समाचार तत्व की पिपासा का जागृत होना सहज ही था। ऐसी स्थिति मे जातीय पत्र तथा भाषा जो भूमिका निभा सकते थे वह कर सकने मे असफल रहे। इसका सबसे बडा कारण था शिक्षित वर्ग का अग्रेजो की ओर झुकाव, क्योकि अग्रेजी उच्च शिक्षा का माध्यम थी। इसके अतिरिक्त हिन्दी पत्रो के पास ऐसे साधन भी नही थे कि वे अग्रेजी पत्रो की ही भाति शीघ्रता पूर्वक समाचार मगाकर छाप सके। अत सामयिकता के क्षेत्र मे गौण स्थान हो जाने के कारण अधिकाश हिन्दी पत्र साहित्यिक प्रयासो की ओर उन्मुख हुए।[6]

इन परिस्थितियो मे इलाहाबाद मे राजनीतिक क्राति के साथ वैचारिक और साहित्यिक उत्थान हुआ और इसका प्रारम्भ कर्ता बालकृष्ण भट्ट को माना जा सकता है। भारतेदु मण्डल के वरिष्ठ सदस्य पडित बाल कृष्ण भट्ट ने सितम्बर 1877 मे प्रयाग से 'हिन्दी प्रदीप' मासिक पत्र निकाला और तैतीस वर्षो तक घोर आर्थिक सकटो का सामना करते हुए भी उसे निरतर चलाया। प्रयाग की 'हिन्दी प्रवर्धनी सभा' के माध्यम से हिन्दी प्रदीप का प्रकाशन हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस पत्र का उद्घाटन किया'। आपने ही इसका सिद्धात गद्य भी पद्य मे लिखा था, जो इसकी नीति का सकेत करने वाला है –

शुभ सरस देश सनेह पूरित, प्रकट हैव आनद भरे।

बचि दुसह दुजन वायु सौ मणि दीप सम थिर नहीं टरे।।

सूझे विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।

हिन्दी-प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरे।।

पत्रकारिता की दृष्टि से 'हिन्दी प्रदीप' का जन्म हिन्दी साहित्य के इतिहास मे क्रातिकारी घटना है।[7] इसमे सदेह नही है कि 'हिन्दी प्रदीप' ने साहित्य एव सस्कृति के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी एक प्रति का मूल्य चार आने था और एक वर्ष का दो रूपये और छ मास का एक रूपया। आरम्भ मे यह विक्टोरिया प्रेस प्रयाग से छपता था। पर वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के लागू होते ही इसे भारी कठिनाइयो का सामना करना पडा। बाद मे यह गोपीनाथ पाठक के बनारस लाइट प्रेस से छपने लगा। इसी प्रेस से 'कवि वचन सुधा' का भी प्रकाशन आरम्भ हुआ। हिन्दी प्रदीप का राष्ट्रीय स्वर निर्भीकता था। प्रेस एक्ट के सम्बन्ध मे भट्ट जी ने सरकार की खुलकर आलोचना की थी "अखबार वालो की बडी हानि की बात इसमे यह है कि जब इस एक्ट के विरूद्ध कोई बात पत्र मे छपेगी तो जिले का मजिस्ट्रेट उस अखबार के पब्लिशर या प्रिटर को लोकल गवर्नमेण्ट की आज्ञा लेकर तलब करेगा और धमकी दे उससे एक मुचलका लिखवा लेगा कि फिर ऐसी बात इसमे न छापे। वाह क्या न्याय है, जो मजिस्ट्रेट प्रिटर के लेखको को बुरा समझे वही मुसिफ बन उससे मुचलका भी लिखवा लेगा भला ऐसा भी कभी सुनने मे आया है कि जो किसी को दोष लगावे वह उसका न्याय भी करे।"[8]

जहाँ 'हिन्दी प्रदीप' ने साहित्यिक सास्कृति क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वही दूसरी ओर सरकार की नीतियो का मुखर विरोध भी किया इसीलिए सरकार की इस पर बडी कडी नजर थी और 'हिन्दी प्रदीप' को मुद्रित एव प्रकाशित करने मे भट्ट जी को अनेकानेक कठिनाइयो का सामना करना पडा किन्तु वे इससे

चिंतित नही हुए। अप्रैल 1908 मे इसी पत्र मे प माधव शुक्ल की 'बम क्या है' शीर्षक कविता छपी।[9] सरकार ने इस पर रोक लगा दी। भट्ट जी ने इसे पुन निकाला पर फरवरी 1910 मे सरकारी कोप दृष्टि के कारण इसे बद करना पडा। इसमे हिन्दी साहित्य की प्रभूत सामग्री रहती थी। इसमे सर्व श्री श्रीधर पाठक, अम्बिका दत्त व्यास, काशी प्रसाद जयसवाल, मदन मोहन मालवीय, पुरूषोत्तम दास टण्डन, लाला भगवान दीन, राधाचरण गोस्वामी, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि नियमित रूप से लिखते थे।[10] इस मासिक पत्रिका मे विविध विषय पर सामग्री प्रकाशित होती थी।

सरस्वती

सन् 1900 ई हिन्दी पत्र–पत्रिकाओ के लिए सकट का काल था। उसका समाचार पक्ष अग्रजी के समक्ष गौण होता ही जा रहा था, साहित्य पक्ष भी निर्बल न हो जाए इसके लिए सजगता की आवश्यकता थी। ऐसे समय हिन्दी साहित्य जगत मे सरस्वती का आविर्भाव इडियन प्रेस के स्वामी श्री चिंतामणि घोष की अध्यक्षता मे तथा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के सस्थापक श्री श्याम सुन्दर दास के सम्पादकत्व मे हुआ।[11]

सरस्वती हिन्दी की पहली सार्वजनिक पत्रिका थी जो इस वर्ष निकली, अपनी छपाई, सफाई, कागज और चित्रो के कारण शीघ्र ही लोक प्रिय हो गई।[12] इस पत्रिका के सब सम्पादक नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य थे, जो अवैतनिक थे। प्रथम सम्पादक मण्डल मे बाबू राधा कृष्ण दास, बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री, बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर, प किशोरी लाल गोस्वामी, और बाबू श्याम सुन्दर दास थे। सन् 1903 से प महावीवर प्रसाद द्विवेदी इसके वैतनिक सम्पादक हुए।[13]

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने समय सदर्भ की चुनौती को स्वीकार किया। सरस्वती की सामग्री का चयन वे नियामक आचार्य के रूप मे करते कराते थे। यद्यपि सरस्वती के माध्यम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने एक विशिष्ट साहित्य पीढी का सस्कार किया तथापि सरस्वती मे प्रकाशित सामग्री के विषय वैविध्य को देखते

हुए सीमित अर्थ मे साहित्यिक पत्रिका नही कहा जा सकता। व्यापक अर्थ मे सरस्वती सास्कृतिक चेतना की पत्रिका थी, यद्यपि भाषा और साहित्य का विकास ही इसका प्रधान लक्ष्य था।[14] द्विवेदी जी के सरस्वती सपादन का इतिहास ऐसे अनेक आन्दोलनो का इतिहास है जो उनके व्यक्तित्व और तत्कालीन समाज के विकास का ही इतिहास कहा सकता है। सरस्वती के पूर्व पश्चात हिन्दी मे अनेक स्तरीय पत्रिकाओ का प्रकाशन हुआ और उनकी भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं, पर सरस्वती जैसी लोकप्रियता का एक कारण हिन्दी नव जागरण की अपनी एक शक्ति थी। यह शक्ति बिखरी हुई थी जिसे द्विवेदी जी के सम्पादकत्व मे सरस्वती ने एकत्र किया।[15]

सरस्वती के उद्देश्य तथा विषय के सम्बन्ध मे पत्रिका के प्रारम्भ मे ही उल्लेख है – इसके नवजीवन धारण करने का केवल यही मुख्य उद्देश्य है कि हिन्दी रसिको के मनोरजन के साथ ही साथ भाषा के सरस्वती भडार की अग पुष्टि, वृद्धि और यथार्थ की पूर्ति हो, तथा भाषा सुलेखको की ललित लेखनी उत्साहित और उत्तेजित होकर विविध भाव भरित ग्रथ राशि को प्रसव करे। इस पत्रिका मे कौन से विषय रहेगे यह केवल इसी से अनुमान करना चाहिए कि इसका नाम सरस्वती है। इसमे गद्य, पद्य काव्य, नाटक, उपन्यास, चपू, इतिहास जीवन चरित्र, हास–परिहास, कौतुक, पुरावृत विज्ञान, शिल्प, कला–कौशल आदि साहित्य के यावत् विषयो का यथावकाश समावेश रहेगा और आगत ग्रन्थादि की यथोचित समालोचना की जाएगी।[16]

इससे स्पष्ट है कि 'सरस्वती' का उद्देश्य बडा व्यापक था। वह सकुचित अर्थ मे साहित्यिक पत्रिका नहीं थी। हिन्दी के सभी अगो को पुष्ट करके पाठको मे साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न करने के साथ ही उन्हे आधुनिक और प्राचीन ज्ञान–विज्ञान सम्बधी लेख देकर ज्ञान वर्धन करना उसका उद्देश्य था। इसके प्रथम अक मे श्री राधाकृष्ण दास, भारतेदु हरिश्चन्द्र, प किशोरी लाल गोस्वामी, बाबू कार्तिक प्रसाद, बाबू श्याम सुदर दास के आलेख थे।[17] अत इसमे प्राचीन ज्ञान विज्ञान से लेकर आधुनिक ज्ञान–विज्ञान तक, फोटो ग्राफी, यात्रा वृतात आदि सभी पर लेख थे किन्तु सबसे महत्वपूर्ण भाग साहित्यिक लेखो का ही था।

वह युग बृज भाषा के साहित्यिक विकास का युग था और सरस्वती ने प्रथम वर्ष मे ही खडी बोली मे तीन चार कविताए प्रकशित की और आश्चर्य की बात यह है कि सरस्वती मे पहली खडी बोली की कविता बृज भाषा के कवि प किशोरी लाल गोस्वामी की लिखी हुई थी। तत्कालीन कविताओ मे प्रकृति प्रेम के दर्शन यत्र–तत्र होते थे –

''छठा और ही भाति की देखते है ।

जहा दृष्टि डालते है फेर कर मुह,

कहीं छद सुनते कहीं देखते है,

कहीं कोकिलो की मनोहर कुहू कुहू ।।''[18]

सरस्वती ने हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के लिए प्रारम्भ से ही एक आन्दोलन खडा कर दिया। हिन्दी के दो अर्थ है एक हिन्दुओ की भाषा और दूसरा हिन्द (हिन्दूस्तान) की भाषा। ये दोनो अर्थ बहुत व्यापक हैं। दोनो ही यह सूचित करते है कि इस देश की प्रधान भाषा हिन्दी ही है। यदि इसे हिन्द की भाषा माने तो यह सारे देश की भाषा हुई और हिन्दुओ की भाषा माने तो सारे हिन्दुस्तान की भाषा हुई। इसलिए पहले अर्थ मे ही हिन्दी की व्यापकता का गौरव कम नही है, क्योकि ऐसा कौन प्रान्त है जहा हिन्दू नहीं और ऐसी कौन जाति है जो हिन्दी नहीं समझती। अत इस देश की कोई एक भाषा हो सकती है तो वह हिन्दी ही है।[19]

इस पत्रिका मे जहॉ हिन्दी और हिन्दी साहित्य का प्रबल पक्ष लिया जाता वही दूसरी ओर हिन्दी साहित्य को लेकर इस समय भी क्षोभ की स्थिति विद्यमान है वह यह स्वीकार करते है कि हिन्दी साहित्य मे उत्तम लेखन की आवश्यकता है हिन्दी साहित्य बडी दुरावस्था को प्राप्त हो रहा है। उसकी अभिवृद्धि करने की इच्छा से अच्छे–अच्छे ग्रथ लिखना इस समय अत्यावश्यक है। हिन्दी बोलने वालो का यह परम धर्म है।[20]

तत्कालीन समय राष्ट्रीय आन्दोलन का था ब्रिटिश सरकार का शिकजा पूर्ण रूप से कस चुका था, भारत अधोपतन को जा रहा था इसके स्वर 'सरस्वती' मे दिखाई देने लगे। 1906 से नाथू राम शर्मा शकर जैसे कवियो की कविताए इसमे छपने लगी जिनमे भारत की दुर्दशा का स्पष्ट चित्रण होता था –

"शकर सुखभूल शोक हारी।

हे रूद्र त्रिशूल शक्ति धारी।।

टुक देश दयालु न्याय कारी।

गत गौरव दुर्दशा हमारी।।

कविराज समाज मे न बोले।

प्रतिभाशाली उदास डोले।।

गुणियो के मुख सरोज सूखे।

फिरते है [illegible]र भूखे।।

जो बात नई निकाल[illegible] है।

भूलो की भूल टालते है।।

भटके वे हाय रोटियो को।

चिथडे न मिले लगोटियो को।।

पाखण्ड भरी पवित्रता है।

छल बल के साथ मित्रता है।।

अस्थिर मन घर घमण्ड का है,

डर है तो राजदण्ड का है।" [21]

समय क्रम के अनुसार निराला, पत, महादेवी वर्मा हरिवश राय बच्चन, डा रामकुमार वर्मा, आदि अनेक महत्वपूर्ण साहित्य कारो की यह आवाज बन गई। जहा प्रारम्भ मे सूर्यकात त्रिपाठी निराला की रचना महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लौटा दी थी वही वह इसमे कुछ अतराल के बाद नियमित रचनाए भेजने लगे। जब निराला साहित्य के क्षितिज पर प्रकाश मान हो गये तब सरस्वती को भी उनकी रचनाओ का बेसब्री से इतजार रहने लगा। हिन्दी के आधुनिक कवियो मे श्रीयुत सूर्यकात त्रिपाठी निराला का अपना एक विशेष स्थान है। वे कवि ही नही काव्य मर्मज्ञ और वेदान्ती भी है हिन्दी मे वे गीतो के प्रवर्तक माने जाते। सरस्वती मे उन्होने दो गीत भेजे है –[22]

धन गर्जन से भर दो वन,

तरू टरू पादप-पादप तन।[23]

जिस गीत विधा को उन्होने हिन्दी साहित्य मे जन्म दिया वह गीत सरस्वती के पृष्ठो पर सदैव दिखाई देने लगे –

कुछ न हुआ, न हो

मुझे विश्व का सुख, श्री यदि केवल

पास तुम रहो

मेरे नभ से बादल यदि न कटे

चन्द्र रह गया ढका,

तिमिर रात को तिरकर, यदि न आते

लेश गगन मास का,

रहेगे अधर हसते, पथ पर तुम

हाथ यदि गहो।[24]

सन् 1930–40 का दशक सरस्वती मे निराला के गीतो के लिए जाना जाता है। इस दशक मे निराला ने सरस्वती के लिए अनेक गीत लिखे –

1 *बुझे तृष्णाशा - विषा ल झरे - भाषा अमृत निर्झर,*

उमड प्राणो से गहन तर-झा गगन ले अवनि के स्वर। [25]

2 *अस्ता चल रवि, जल छल-छल छवि,*

स्तब्ध विश्व कवि जीवन उन्मन,

मन्द पवन बहती सुधि रह रह

परिमल की कह कथा पुरानत। [26]

सरस्वती के दूसरे गीतकार थे प्रकृति के चतुर चितेरे कवि पत। कवि पत ने अपनी प्रारम्भिक रचनाओ से लेकर प्रोढ रचनाओ तक को सरस्वती मे भेजा और वह उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम बनी –

प्रिये प्राणो की प्राण !

न जाने किस गृह मे अन्जान

छिपी हो तुम स्वर्गीय विधान

नवल कलिकाओ की सी वान।' [27]

पत तो सरस्वती की शोभा ही बन गये और सरस्वती के प्रथम पृष्ठ पर इनकी रचनाए आने लगी –

लो जग की डाली डाली पर

जागी नव जीवन की कलिया

मिट्टी ने जड निद्रा तजकर

खोली स्वप्निल पलकावलिया [28]

जब कवि पत ने अपना निवास स्थान काला काकर बना लिया तब भी वह सरस्वती मे नियमित रचनाए भेजते रहे –

मेरे निकुञ्ज नक्षत्र वास !

इस छाया मर्मर के वन मे

तू स्वप्न नीड सा निर्जन मे

है बना प्राण पिक का विलास।[29]

सन् 1933 का शायद ही ऐसा कोई अक हो जिसमे कविवर पत की कोई रचना न छपी हो। अप्रैल 1933 मे कवि पत की लहरो का गीत कविता छपी[30] तथा मई के अक मे पत का प्रसिद्ध नाटक 'ज्योत्स्ना' छपा।[31] कवि पत इस दशक मे 'सरस्वती' मे छाए रहे नवम्बर 1935 के अक मे प्रसिद्ध कविता 'बढो' प्रकाशित हुई,[32] तथा दिसम्बर 1935 के अक मे ताराकश कविता छपी।[33]

वह समय देश मे आजादी के आन्दोलन का था कवि पत ने भी सरस्वती के माध्यम से चेतना जगाने का प्रयास किया। मई 36 के अक मे प्रभात शीर्षक कविता लिखी।[34]

गाधी जी देश के सर्वमान्य नेता थे और वह आजादी के आन्दोलन को चला रहे थे। कवि पत ने उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उनकी 'बापू के प्रति' कविता जून 1936 के अक मे छपी –

तुम मासहीन, तुम रक्त हीन,

हे अस्थि शेष ! तुम अस्थि हीन

तुम शुद्ध बुद्ध, आत्मा केवल

हे चिर पुराण ! हे चिर नवीन

तुम पूर्ण इकाई जीवन की,

जिसमे आसार भव शून्य लीन

भावी की सस्कृति समीचीन ।[35]

तत्कालीन प्रतिष्ठत लेखको मे ऐसा कोई लेखक नही जिसकी रचनाए सरस्वती मे न छपी हो। सूर्यकात त्रिपाठी निराला, कविवर पत के साथ ही साथ महीयसी महादेवी वर्मा का सम्बद्ध भी सरस्वती से रहा उनके अनेक गीत सरस्वती मे प्रकाशित हुए –

1 *मै मतवाली इधर, उधर मेरा प्रिय अलबेला सा है।*

मेरी आखो मे ढलकन छवि उसकी मोती बन आई।[36]

2 *शलभ ! मै शापमय वर हू,*

किसी का दीप निष्ठुर हू ।'[37]

कवि हरिवश राय बच्चन की कविताओ को भी सरस्वती ने उत्साह से छाया। जिस कविता के लिए बच्चन जाने जाते है अर्थात मधुशाला सबसे पहले वह सरस्वती मे ही प्रकाशित हुई –

भावुकता - अगूरलता से खींच कल्पना की हाला,

कवि बनकर है साकी आया भरकर कविता का प्याला

कभी न कण-कण खाली होगा लाख पिये दो लाख पिये,

पाठक गण है पीने वाले, पुस्तक मेरी मधुशाला।

* * * * * * * * *

मेरे शव पर वह रोये हो जिसके आसू मे हाला,

आह भरे वह जो हो सुरभित मदिरा पीकर मतवाला

दे मुझको वे कधा, जिनके पद मद डग-मग होते हों,

और जलू उस ठोर, जहां पर कभी रही हो मधुशाला ।[38]

जहा सरस्वती मे एक और निराला, पत, और महादेवी की रचनाओ की त्रिवेणी बह रही थी वही दूसरी ओर पाठको को बच्चन अपनी कविता की हाला पिला रहे थे। समकालीन साहित्यकारो मे राम नरेश त्रिपाठी का नाम पूरे सम्मान से लिया जाता है उनकी रचनाओ मे ग्रामाचल के दर्शन होते है जिन्हे भी सरस्वती ने बडे उत्साह से प्रकाशित किया।[39]

राम नरेश त्रिपाठी की प्रसिद्ध कविता आसू की मिठास भी जनवरी 1929 के अक मे प्रकाशित हुई –

आशा सुख शाति की दिखाई पडती है नहीं,

जम रहे शोक हम दु ख से सहम रहे।

भूख गई प्यास गई नींद फिर आई नहीं

जीवन के साथी कौन जाने कहा थम रहे

कौन विपदा मे सुध लेता है किसी की ? हाय !

माना था अपना जिन्हे वो तो निरे भ्रम रहे ।

एक बस हम रहे और कुछ गम रहे

सास आती जाती रही, आसू हरदम रहे।[40]

रामकुमार वर्मा जैसे कहानीकार, गद्यकार, कवि, लेखक, इस पत्रिका से जुडे, आपकी रचनाए सरस्वती मे नियमित प्रकाशित होने लगी। आपकी प्रसिद्ध कविता 'रूपराशि' सरस्वती के अगस्त 1932 के अक मे प्रकाशित हुई।[41]

सरस्वती ने साहित्य के सभी रूपो को आत्मसात कर लिया था जहा इसमे एक ओर प्रतिष्ठित कवियो की कविताए प्रकाशित होती थीं वहीं इलाचद जोशी जैसे कहानीकारो की कहानिया नियमित प्रकाशित होतीं थी। इलाचद जोशी की 'भाभी' कहानी 1928 मे छपी।[42] उनकी 'छुटिया' कहानी नवम्बर 1927 के अक मे प्रकाशित

हो चुकी थी। कहानियो को इस पत्रिका मे पर्याप्त स्थान मिलता क्योकि, महावीर प्रसाद द्विवेदी श्रेष्ठ गद्यकार थे और आगे चलकर पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी इसके सपादक हुए।

सरस्वती को साहित्य के शिखर पर पहुँचने मे लम्बा सघर्ष करना पडा। प्रारम्भ मे सम्पादन और प्रकाशित सामग्री के उच्च स्तर का होते हुए भी 'सरस्वती' को उत्साह वर्धक समाचार नही मिला। प्रकाशक को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। पर इतना होने पर भी प्रथम तीन वर्षो मे ही 'सरस्वती' ने हिन्दी ससार मे अपना स्थान बना लिया था, उस समय वह हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका मानी जाने लगी।[43] ऐसे समय सन् 1903 मे 'सरस्वती' की कमान महावीर प्रसाद द्विवेदी के हाथो मे आई। आरम्भ मे द्विवेदी जी को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। पर धीरे–धीरे उन्होने 'सरस्वती' के लेखको का मण्डल बना लिया जिसमे विविध विषयो के विशेषज्ञ थे। द्विवेदी जी सदैव नई प्रतिभाओ की खोज मे रहते थे, वे नये और होनहार साहित्य प्रेमी युवको को हिन्दी मे लिखने के लिए प्रोत्साहित करने लगे। उनसे लेख लिखवाते, किन्तु उनकी भाषा उनके मनकी नहीं होती थी तो उसे फिर से लिख देते थे। प्रसिद्ध व्यक्तियो से उनसे लिखने का आग्रह करते थे।[44]

सरस्वती का सपादन करने पर द्विवेदी ने अपने लिए कुछ आदर्श निश्चित किए थे। आपने सकल्प किया–

(i) वक्त की पाबदी, (ii) मालिको के विश्वास पात्र बनने की चेष्टा, (iii) अपने हानि–लाभ की परवाह न कर पाठको के हानि लाभ का ध्यान और, (iv) न्याय पथ से कभी विचलित न होना।[45]

पत्र सचालको ने आचार्य द्विवेदी के इन्ही आदर्शो से प्रभावित होकर उनके सपादन स्वातत्र्य मे कभी बाधा नही डाली। यह वस्तुत आपके प्रखर सम्पादक स्वरूप का ही सुपरिणाम था। सरस्वती सचालक बाबू चितामणि घोष से आपका सम्बन्ध अत्यन्त हार्दिक और परिवार के सदस्य जैसा था। सपादन कार्य मे द्विवेदी जी ने

न्यायप्रियता तथा सत्य के पालन का सदा सर्वदा ध्यान रखा। आप न कभी प्रलोभन मे पडे और न किसी धमकी से विचलित हुए।[46]

द्विवेदी जी ने सरस्वती मे समय–समय पर महत्वपूर्ण टिप्पणिया लिखी। उन्होने न केवल पाठको के हानि लाभ बल्कि लेखको के हानि लाभ का भी सदैव ध्यान रखा। उस समय शायद ही किसी लेखक को परिश्रमिक मिलता हो प मदनमोहन मालवीय और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सर्वप्रथम इस पर विचार विमर्श किया और लेखको को पारिश्रमिक देने का निश्चय किया।[47]

द्विवेदी जी के साहित्यिक विवादो ने तात्कालीन हिन्दी साहित्य जगत मे एक नवीन जीवन उत्पन्न कर दिया था। कालीदास की निरकुशता भाषा की अस्थिरता आदि ऐसे विवाद थे जिससे साहित्यिक क्षेत्रो मे चहल–पहल ही नहीं हुई, इनसे लोगो को साहित्यिक समस्याओ पर स्वतत्र विचार करने तथा दोनो पक्षो के तर्को का मूल्याकन करने की आदत पड गई और इसका स्थाई परिणाम बहुत शुभ हुआ।[48]

भाषा के परिष्कार के क्षेत्र मे भी सरस्वती ने बहुत बडा कार्य किया। इसके पूर्व भाषा मे एकरूपता नही थी। व्याकरण की बडी शिथिलता थी। द्विवेदी जी ने सरस्वती के द्वारा इसका बडा विरोध किया। सरस्वती का प्रभाव इतना बढ चुका था कि उसके प्रचलित रूपो का प्रचलन हिन्दी क्षेत्र मे मान्य हो जाता है।[49]

भाषा की एक रूपता के साथ कविता के लिए खडी बोली की पुष्टि भी सरस्वती की एक बहुत बडी उपलब्धि थी। इसके द्वारा आधुनिक खडी बोली की कविता को प्रतिष्ठा ही प्राप्त नहीं हुई, उसका आशातीत प्रचार भी हुआ। हिन्दी के कितने ही कवियो ने जो आज हमारे मूर्धन्य कवि माने जाते है इसी के प्रोत्साहन से ही अपनी काव्य साधना मे सफलता प्राप्त की। खडी बोली कविता का विकास 'सरस्वती' के अको मे देखा जा सकता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचरित उपाध्याय की कविताओ से लेकर मैथलीशरण गुप्त के युग तक पहुचने का इतिहास

इसके अको मे अकित है। प नाथू राम शर्मा 'शकर, राय देवी प्रसाद पूर्ण आदि कितने ही कवि सरस्वती के द्वारा ही चमके। [50]

कहानियो के क्षेत्र मे इसकी सेवाए अनुपम है। वास्तव मे आधुनिक हिन्दी कहानी का जन्म ही सरस्वती मे हुआ। प किशोरी लाल गोस्वामी की 'इदुमति' सर्व सम्मति से हिन्दी की पहली आधुनिक कहानी मानी जाती है। बग महिला की कहानियो ने उस नूतन प्रवृति को पुष्ट किया। बाबू वृदावन लाल वर्मा की पहली कहानी 'उसने कहा था' जो कहानी के क्षेत्र मे मील का पत्थर मानी जाती है, सरस्वती मे ही प्रकाशित हुई।

प्रेम चद की पहली हिन्दी कहानी छापने का सौभाग्य भी सरस्वती को प्राप्त हुआ। उस युग मे सरस्वती की कहानियो से अनुप्रेरित होकर वे लोग भी, जो कवि या गम्भीर लेखक थे कहानी लिखने का प्रयोग करने लगे। उदाहरण के लिए रामचद्र शुक्ल ने 'ग्यारह वर्ष का समय' और बालकृष्ण शर्मा ने 'सत' नामक कहानी लिखी थी जो 'सरस्वती' मे ही प्रकाशित हुई। फिर तो विशम्भर नाथ कौशिक, सुदर्शन, ज्वाला दत्त शर्मा आदि सभी लेखक कहानी मे दिखाई देने लगे।[51]

हिन्दी जनता को दूसरी भाषाओ की कहानियो से परिचित कराने के लिए सरस्वती ने अन्य भाषाओ की कहानियो के अनुवाद भी प्रकाशित किए। यही नहीं रवीन्द्र बाबू की बगला कहानियो का अनुवाद हिन्दी मे ही हुआ। और वह सन् 1902 मे सरस्वती मे छपा। आरम्भ से ही इसने वैज्ञानिक कहानियो की ओर ध्यान दिया और कितनी ही वैज्ञानिक कहानिया प्रकाशित की।

सरस्वती ने विविध ज्ञान–विज्ञान विषयक बिखरी हुई चेतना को भी समेटने का कार्य किया। सबसे महत्वपूर्ण इसकी सम्पादकीय टिप्पणिया हुआ करती थी जो विविध विषयो पर होती थी। सामाजिक, सास्कृतिक, साहित्यिक, शिक्षा सम्बन्धी विषयो पर-सरस्वती की सम्पादकीय टिप्पणिया विचारोत्तेजक होती थी। साहित्यिक

दृष्टि से इसने एक ओर महत्वपर्णू भूमिका निभाई। इसके ही माध्यम से बाल साहित्य तथा स्त्री साहित्य को पत्रिकाओ मे उचित स्थान मिला।

सरस्वती मे 'बाल बिनोद' शीर्षक ने बाल उपयोगी साहित्य का निर्माण कर बालको मे पत्र–पत्रिकाओ के पठन पाठन मे ऐसे समय रूचि उत्पन्न करने का प्रयास किया जबकि बालक के अग्रेजी माध्यम से शिक्षित माता–पिता तक की हिन्दी पत्र पत्रिकाओ मे रूचि न थी। आदर्श नारी जीवन के साथ आख्यायिका, निबध आदि के द्वारा महिलोपयोगी साहित्य का भी समावेश इसमे हुआ। यही नही समय–समय पर महिलाओ की रचनाओ को छापकर लिखने की प्रेरणा भी प्रदान की गई। यह वह समय था जब समाज मे स्त्री शिक्षा नगण्य थी, अत स्त्रिया घर की चहार दीवारी तक ही सीमित थी। उनके पास न तो राजनीतिक जीवन था और न सामाजिक प्रतिष्ठा। पैसा, आभूषण, रूढिवादिता ही उनका जीवन था। पर देश राजनीतिक दृष्टि से जागृत हो चुका था। ऐसे समय समाज के एक अग का पिछडा होना दुर्भाग्य का द्योतक था। सरस्वती ने समाज के इस अधकार युक्त क्षेत्र को प्रकाशित कर एक महान कार्य किया। उसका अनुकरण कर फिर तो अनेक पत्रिकाओ ने महिलोपयोगी साहित्य की ओर ध्यान दिया।

सरस्वती ने आरम्भ से ही हिन्दी के प्रचार प्रसार का व्रत ले रखा था। भाषा की शुद्धता और सौष्ठव की ओर इसका पूर्ण ध्यान रहा। इसके लिए आवश्यकता पडने पर इसने निर्भीक आलोचना का सहारा लिया। हिन्दी को उसके उचित स्थान पर प्रतिष्ठित कराने और उसे भारत की सार्वदेशिक भाषा स्वीकार कराने के लिए यह अपने जन्मकाल से ही प्रयत्नशील रही। यही कारण था कि यह सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका बन गई। इसके लेख शिक्षाप्रद और बडे ही गम्भीर होत थे। "सरस्वती का स्थान हिन्दी ससार मे बडा ऊचा है। इसका नाम सार्थक है सरस्वती के लेख बडे गम्भीर, शिक्षाप्रद' और उपयोगी रहे है।"[52]

स्त्री दर्पणी (1903)

वह स्वीकृत तथ्य है कि सरस्वती इस काल की प्रमुख पत्रिका थी। किन्तु अन्य पत्रिकाओ के साहित्यिक योगदान की भी अवहेलना नही की जा सकती। सरस्वती के पश्चात् प्रकाशित होने वाली दूसरी महत्वपूर्ण पत्रिका 'स्त्रीदर्पणी' थी, जो श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के सपादकत्व मे निकलती थी।[53] इस युग के लगभग सभी लेखक–लेखिककाए इसमे लिखते थे। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य स्त्रियो मे चेतना लाना था किन्तु इसमे विविध विषयो के साथ–साथ साहित्यिक रचनाए भी हुआ करती थी।[54]

इस पत्रिका के लेखो मे सशोधन नही किया जाता था और लेखको द्वारा भेजे गये लेख यथावत प्रकाशित कर दिया जाता था। उदाहरण के लिए नवम्बर 1915 के अक मे समाज सुधार विषय पर रूद्र दत्त का लेख 'पर समाज स्त्रियो के सुधार को रोक नही सकती। समाज उन्नति की धारा पर कदापि बाध नहीं बाध सकती।'[55]

नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, निबध आदि विविध विषय समन्वित इस पत्रिका मे 'सामयिक साहित्य चर्चा' शीर्षक भी एक स्तम्भ रहता था। जिसमे तात्कालीन पत्र–पत्रिकाओ की रचनाओ पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती थी। परोक्ष रूप से इस स्तम्भ ने समालोचना साहित्य के विकास मे बडा महत्वपूर्ण योगदान दिया। चतुर्वेदी पत्र के 'ब्रह्म विचार' शीर्षक लेख की कटु आलोचना निम्न भाति की गई थी – "किसे कहते हो ? और क्या कहते हो ? 'ब्रह्म विचार' शीर्षक लेख को पढकर उत्पन्न होते है। यह लेख आसाढ के अक से निकल रहा है। विषय तो यह योगियो द्वारा ही प्रतिपादित हो सकता है, और इसलिए हमे अधिकार नहीं है कि इस पर हम कुछ निज सम्मति प्रकाशित करे। परन्तु हमे दुख इस बात का है आज ससार मे लेखो का नहीं वरन् लेखक देखकर लेख प्रकाशित किए जाते हैं और वह भी एक ऐसे पत्र मे जो जातीय पत्र होने का दावा करता है। क्या सपादक महोदय स्वय ही

अपने ह्रदय पर हाथ रखकर बतलायेगे कि चतुर्वेदी समाज जिसके लिए यह 'चतुर्वेदी' पत्र निकाला गया है इसको कुछ भी आवश्यक समझता है।[56]

साहित्यिक दृष्टि से इस पत्रिका का विशेष योगदान अवश्य ही न रहा हो किन्तु तात्कालीन समय मे इसने अवश्य ही प्रयाग के साहित्यिक गौरव को बढाया। इस पत्रिका के अको मे गिरिजा कुमार घोष की 'लक्ष्मी', 'रूप तृष्णा', 'अरबी की यक्ष कथा' आदि अनेक कहानिया निकली है।

मर्यादा (1910)

मर्यादा का साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओ मे नाम बडे सम्मान से लिया जाता है। नवम्बर सन् 1910 मे अभ्युदय प्रेस प्रयाग से इसका प्रकाशन आरम्भ हुआ।[57] वास्तव मे 'मर्यादा' महामना मदन मोहन मालवीय के सद् प्रयासो का ही प्रतिफल था। जिस प्रकार वह एक उच्च कोटि के राजनैतिक, शिक्षाशास्त्री थे उसी प्रकार एक कुशल पत्रकार भी थे। पत्रकारिता के क्षेत्र मे आपने महान परम्पराओ का सृजन किया। आपने राष्ट्रीय जीवन के जिस क्षेत्र पर दृष्टि डाली उसी क्षेत्र मे एक वैशिष्ट्य उत्पन्न हो गया।[58]

महामना ने 1907 मे वसत पञ्चमी के अवसर पर 'अभ्युदय' निकाला। दो साल वह इसके स्वय सपादक रहे। इम्पीरियल कौसिल का सदस्य होने पर उन्होने इसका कार्य छोड दिया बाद मे मालवीय जी के भतीजे कृष्णकात मालवीय इसके सपादक रहे। मालवीय जी चाहते थे कि अभ्युदय के साथ–साथ साहित्यिक पत्रिका का भी प्रकाशन होना चाहिए उन्ही की प्रेरणा से 'अभ्युदय प्रेस' से 'मर्यादा' निकली जिसका सपादन प्रारम्भ मे कुछ दिनो तक बाबू पुरूषोत्तम दास टडन ने किया था। फिर कृष्णकात मालवीय ने उसका सपादन भार सम्भाला और वह अत तक इसके सपादक रहे।[59] •

प मन्नन द्विवेदी उस समय कवियो मे अपना एक स्थान रखते थे। उनकी कविताए मर्यादा अको मे नियमित रूप से निकलती थी –

अर्धरात्रि हो गई शाति का,

अटल राज्य चहुधा छाया।

शीत सुधा बहु बरसाते निशि

नाथ गगन छबि सरसाया।[60]

पत्रिका कहानी, कविताओ के साथ कवियो के सम्बन्ध मे प्रकाशित होता रहता था। इसके साथ—साथ अन्य भाषाओ की कविताओ के अनुवाद, कहानी, आदि भी प्रकाशित होते। मई 1912 के अक मे अग्रेजी कहानी के आधार पर लिखी गई ऋषीश्वर भट्ट की कविता 'शरीर मे गडबड' शीर्षक प्रकाशित हुई —

मन शक्तियो ने आपस मे

एक बार यो किया विचार।

पेटार्थी यह मानव हमको,

पीडा देता विविध प्रकार।।

आलस छोड करो आदोलन

इसकी करनी के प्रतिकूल

राय इन्द्रियो की भी लेकर

कह उनसे अपना दु:ख भूल।[61]

पत्रिका की विशिष्ट पहिचान उसका 'साहित्य समालोचना' शीर्षक स्तम्भ था। इस स्तम्भ के अतर्गत तत्कालीन समय मे प्रकाशित होने वाली प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओ के अको का मूल्याकन किया जाता। सरस्वती के सितम्बर अक की समालोचना करते हुए लिखा था, "सरस्वती (सितम्बर) इस सितम्बर वाले नम्बर मे अच्छे दो लेख और चित्र निकले है प्रोफेसर राम अवतार शर्मा के एक अग्रेजी लेख का अनुवाद "कालिदास का समय निरूपण' शीर्षक प्रकाशित हुआ है, यह बडा ही उत्तम

प्रबध है। इसके बाद बाबू मैथिली शरण गुप्त की 'अत्योक्ति पुष्पावली' भी अच्छी हुई है, इस अक मे जो अन्य कविताए निकली है वे साधारण है।[62]

मर्यादा के अको मे न केवल हिन्दी की पत्रिकाओ की समीक्षा की जाती बल्कि अग्रेजी, मराठी आदि भाषाओ की पत्रिकाओ की भी समीक्षा की जाती है। अक्टूबर के अक मे ही सरस्वती के साथ साथ इदु, नागरी हितैषिणी पत्रिका, मार्डन रिव्यू, मराठी मासिक, मनोरजन की भी इसमे समालोचना की गई।[63]

मर्यादा के अको मे अयोध्या सिह उपाध्याय की कविताए नियमित प्रकाशित होती थी। कभी कभी तो एक ही अक मे उनकी दो दो कविताए छपती। अक्टूबर 1912 के अक मे उनकी 'शरद शोभा' और 'दशहरा' एक साथ छपी –

उदधि गम्भीर हू मै सरसत नीर हू मै,

शीतल समीर हू मै समुद्र समायो है

कलित कलीन हू मै गुजत अलीन हूं मै

केलिवी चलीन हू मै ललित लाखयो है।[64]

* * * * * * * *

वर बितान तले नम नील के,

सिनत प्रभा रजनी पति रजिता।

विकसिता अति निर्मलता गयी,

दश दिशा नव अक उमगिता ।[65]

मर्यादा मे विविध विषय होते जो मुख्यत ऐतिहासिक, शैक्षणिक, सास्कृतिक, एव साहित्यिक होते थे – 'जापान के परलोकगत सम्राट', 'बहमनीराज्य', 'आधुनिक शिक्षा पद्धति' आदि लेख इसमे प्रकाशित हुए।[66]

महत लक्ष्मण दास की पौराणिक कथाओ पर आधारित कविताए भी 'मर्यादा' के अको मे छपती –

सुनकर जाना विपिन अचानक राम कुवर का ।

जनक सुता भी साथ चन्द्र मुख जिस मनहर का ।।

गौर श्याम सुकुमार मारमद हरनी जोडी ।

तिस पर सीता मृदुल सुमन की मछली न तोडी ।।[67]

मर्यादा के सम्बन्ध मे यह नि सकोच कहा जा सकता है कि यह एक उच्च कोटि की साहित्यिक पत्रिका थी किन्तु यह ज्यादा समय तक न चल सकी 1920 मे यह ज्ञान मण्डल वाराणसी को सौप दी गई जहा यह कुछ समय चलकर बद हो गई किन्तु इसके साहित्यिक योगदान की अवहेलना नही कि जा सकती।[68]

सम्मेलन पत्रिका (1913)

'सम्मेलन पत्रिका' प्रयाग से प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण पत्रिकाओ मे से एक है। यह पत्रिका हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा त्रैमासिक रूप से प्रकाशित की गई। इसके सम्पादन का भार सम्भाला धीरेन्द्र वर्मा ने। [69]

सम्मेलन पत्रिका को साहित्यिक पत्रिका माना जाए अथवा नहीं इस सम्बध मे साहित्यकारो मे मतभेद है कुछ विद्वान इसे सम्मेलन के समाचार पत्र देने वाली पत्रिका मानते है तो कुछ विद्वान इसे विविध विषयो वाली पत्रिका मानते हैं। सम्मेलन पत्रिका का स्वरूप 'सरस्वती' या 'चॉद' की तरह साहित्यिक नहीं था किन्तु इसका उद्देश्य साहित्यिक विकास ही था। धीरेन्द्र वर्मा ने इसके सम्पादकीय मे लिखा है, "सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा, साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार करना है। यह प्रचार तथा उन्नति किस प्रकार हो सकती है, उसके साधनो तथा कठिनाइयो पर गम्भीरता पूर्व विचार करने का माध्यम 'सम्मेलन पत्रिका'

होना चाहिए। पत्रिका का उद्देश्य तथा नीति इस आवश्यकता की पूर्ति करना ही रहेगा।[70]

धीरेन्द्र वर्मा ने यह तो पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि इसमे सरस्वती की तरह रचनाए तथा चित्र नही होगे किन्तु हिन्दी भाषा नागरी लिपि तथा साहित्य पर विचार किया जाएगा, तथा इन अगो की उन्नति पर समुचित ध्यान दिया जाएगा।[71] और इसके लिए उन्होने लेखको तथा विद्वानो का आवाहन किया कि वह 'सम्मेलन पत्रिका' मे लेख भेजे।[72]

पत्रिका मे "साहित्यावलोकन' शीर्षक हुआ करता था जिसमे विभिन्न पुस्तको, कविताओ, कहानियो की समीक्षा की जाती थी। इसके प्रथम अक मे ही – मोहन लाल महतो, गया लाल 'वियोगी' की 'एकतारा', शान्तिप्रिय द्विवेदी की 'मधु सचय' राम कृष्णदास की 'भावुक', अयोध्या सिह उपाध्याय की 'पद्य प्रसून' लक्ष्मी नारायण मिश्र की 'आर्त जगत' कविताओ का मूल्याकन किया गया।[73]

'सम्मेलन पत्रिका' मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्बधित समाचार अवश्य होते थे किन्तु इसके साथ ही साहित्यिक विषयो पर भी लेख होते थे। अपने द्वितीय अक मे सम्मेलन पत्रिका ने श्रीधर पाठक, 'हिन्दी गद्य का विकास स 1925 तक' तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का लेख, 'हिन्दी साहित्य मे छायावाद की प्रगति' प्रकाशित किए।[74]

अत 'सरस्वती' अथवा चॉद की तरह तो नही किन्तु सम्मेलन पत्रिका का उद्देश्य सदैव हिन्दी भाषा एव साहित्य की श्री वृद्धि करना ही रहा इसलिए इस पत्रिका के साहित्यिक योगदान को भी नही नकारा जा सकता।

चॉद (1922)

सन् 1900 से 1922 तक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र पर सरस्वती का एक छत्र राज्य रहा उसे टक्कर देने वाली कोई दूसरी पत्रिका नहीं थी। सरस्वती के समकक्ष

साहित्यिक मूल्यो को सजोए हुए सन् 1922 मे 'चॉद' का प्रकाशन एल्गिन रोड इलाहाबाद से प्रारम्भ हुआ।[75]

इसके सपादक मण्डल मे रामरख सहगल*, चण्डी प्रसाद ह्रदयेश, प बनारसी दास जी 'चतुर्वेदी' सम्मिलित थे। इसके प्रथम अक के प्रधान सपादक रामरख सहगल और रामकृष्ण मुकुन्द लघाटे थे।[76] रामरख सहगल जी चॉद को 1920 मे ही प्रारम्भ करना चाहते थे। किन्तु आर्थिक कारणो से वह इसे 1920 मे प्रकाशित न कर सके उन्होने प्रथम अक के सम्पादकीय वक्तव्य मे लिखा है, "चूकि इस देश की अनेक सामाजित कुरीतियो ने हमारे दिल पर चोट पहुचाई थी और हमारी आत्मा बार–बार इस बात के लिए प्रेरित कर रही थी कि हम अपनी तुच्छ बुद्धि से देश के समाज सुधारको का हाथ बटावे अतएव हमने करीब दो वर्ष पहले स्त्रियो का 'चॉद' नामक मासिक पत्र निकालना निश्चित किया था।

पत्र का डिक्लेरेशन देते समय हमने सरकार को यह विश्वस दिला दिया था कि हमारा पत्र केवल 'सामाजिक तथा साहित्यिक विषयो की चर्चा करेगा, प्राचीन अथवा अर्वाचीन राजनीति से इसका कोई सम्बन्ध न होगा।' पर इतने पर भी प्रान्तीय सरकार ने 1500 रु भेट करने की जमानत मागी, चुकि हम सरकार को 1500 रु भेट करने मे असमर्थ सिद्ध हुए अतएव हमे पत्र प्रकाशन का विचार कुछ समय के लिए स्थगित कर देना पडा।[77]

'चॉद' महिलाओ की पत्रिका थी इसके मुख्य पृष्ठ पर लिखा भी रहता था 'भारतीय महिलाओ की सचित्र मासिक पत्रिका' और इसने महिलाओ की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्न भी किया किन्तु महिलाओ की उन्नति के प्रयत्नो के साथ–साथ यह साहित्यिक जगत की प्रमुख पत्रिका बन गई। हमारे पत्र का उद्देश्य स्त्रियो का अज्ञान, परदे की कु प्रथा, इत्यादि सामाजिक बुराइयो को दूर करना स्त्रियो को उपयोगी तथा उनके हितो की बातों से उनका परिचय कराते रहना। पत्र की भाषा यथा शक्ति सरल

रामरख सहगल इसके प्रकाशक भी थे।

होगी। छोटे–छोटे किस्से कहानिया और गल्प आदि भी समय–समय पर ऐसे रहेगे जिनका सामाजिक सुधारो से विशेष सम्बन्ध होगा। [78]

सम्पादक महोदय पत्रिका की भूमिका मे छोटे–छोटे कहानिया होने की बात करते है किन्तु यह छोटे–छोटे कहानिया और किस्से विस्तृत गद्य एव पद्य साहित्य बन गये।

इसके प्रथम अक मे ही तत्कालीन निम्न साहित्यकारो के नाम नियमित लेखको के रूप मे प्रकाशित किए गये थे – श्रीमती सरला बाई नायक, कु एस दुरा, कु सी वी पूविहा, कु ज्योर्तिमयी गागुली, श्रीमती चन्द्र प्रभा देवी, श्रीमती सुशीला देवी निगम, श्रीमती शारदा कुमारी देवी, श्रीमती मगला देवी, श्री सतराम, परमानन्द, कु विद्यावती सेठ, लाला गगा प्रसाद, डॉ एम एल मलिक, डॉ हेम चन्द्र घोष, सी एस रगा लय्यर, प्रेमचद, विश्म्वर नाथ शर्मा कौशिक, लाला मन्नू मल, प्रो दयाशकर दुबे, बद्री नाथ भाटिया, जी पी श्रीवास्तव, मुन्शी नारायन प्रसाद जी अस्थाना, प्रो खन्ना, जी ए सुन्दरम, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, श्रीधर पाठक, मैथिली शरण गुप्त, राम चरित उपाध्याय, राम कुमार वर्मा, राम नारायन चतुर्वेदी मयक, सनेह आदि।[79]

उक्त लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारो ने 'चॉद' के साहित्यिक सौन्दर्य मे चार चॉद लगा दिए। इसके अक का प्रारम्भ ही रामकुमार वर्मा की कविता 'कामना' से हुआ–

करूणा मय ! इस तुच्छ विनय पर तनिक ध्यान हो ।

जगती लाल पर नारि जाति का पुन. मान हो ।।

उसके यश का नित्य प्रेम से मधुर गान हो ।

पूर्व दशा का पुन हृदय मे पूर्ण ज्ञान हो ।।

सब क्लेश कटे क्षण मे नहीं मन मे कुछ उन्माद हो

पथ - प्रणय प्रदर्शन के लिए 'चॉद' मनोहर 'चॉद' हो ।[80]

'चॉद' के प्रथम अक से ही यह विदित हो गया कि इसका स्वरूप साहित्यिक ही होगा। इसके प्रथम अक मे महादेवी वर्मा की 'चन्द्रोदय' राम चरित उपाध्याय की 'ससार की सिरमौर' सुभद्रा कुमारी चौहान की 'समर्पण' कविता प्रकाशित हुई।[81]

'चॉद' मे गद्य, पद्य पचुर मात्रा मे प्रकाशित होने लगा, नवम्बर 1925 मे तो 'चॉद' ने अन्य साहित्यिक पत्रिकाओ को पीछे छोडेते हुए प्रेमचद के उपन्यास 'निर्मला' को धारावाहिक रूप मे प्रकाशित किया।[82] 'चॉद' के 1920 के अको से सूर्यकात त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा की रचनाए साथ साथ दिखाई देने लगी। मार्च 1920 के अक मे निराला की 'वेदना' प्रकाशित हुई–

छेडो अब तार !

चुप है कर दो विकल,

बहने दो कल-कल-कल

सरिता की कविता मे खर तर स्वर धार

छेडो अब तार-तार

दिवसन विरहा शासी

पदम विकच भाषासी

जगती के चुन प्रसून गूँथो स्वर हार

छेडो अब तार।[83]

चॉद के अगले ही अक मे महादेवी वर्मा की लोकप्रिय कविता 'प्रतीक्षा' प्रकाशित हुई. –

मौर धरे मस्तक पर लाल ।

सजाकर नर जालो की माल ।।

सजाक पीताम्बर से गात ।

बने वर से दिनेश इस काल ।।

* * * * * * * *

चल दिए अस्ता चल की ओर

प्रेयसी को लेके दिनमान

प्रतीक्षाओ मे तक से ही देव

हो रहे व्याकुल मेरे प्रान।[84]

महादेवी वर्मा 'चॉद' की प्रमुख कवियत्री थीं। शायद ही कोई अक हो जिसमे महादेवी वर्मा की कोई न कोई कविता न हो। 'तब' शीर्षक कविता, 'एकात' शीर्षक कविता चॉद मे प्रकाशित हुई। उनकी प्रसिद्ध कविता 'ऑसू की माला' दिसम्बर 1927 के अक मे छपी –

उच्छवासो की छाया मे,

पीडा के आलिगन मे,

निश्वासो के रोदन मे,

सूने मानस मन्दिर मे

स्वपनो की मुग्ध हसी मे,

आशा के मग्न ह्रदय में,

बीते की चित्र पटी मे,

इस मीठी सी पीडा मे,

डूबा जीवन का प्याला

उसमे लिपटी उतराती,

मेरी आसू की माला।[85]

एक ओर चॉद दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा था तो देश मे आजादी की हवा चल रही थी। चॉद पत्रिका भी अपने आपको इस आधी मे न रोक सकी और नवम्बर 1928 का अक 'फासी' अक के रूप मे प्रकाशित किया फलत इसे सरकार का कोप भाजन बनना पडा और इसके फासी अक को जब्त कर लिया गया।[86]

इस घटना से 'चॉद' प्रकाशक रामरख सहगल और अनेक पाठको को धक्का तो अवश्य लगा किन्तु चॉद बद न हुई और यह प्रहार सह गई। चॉद के अक नये उत्साह से फिर निकलने लगे। दो माह पश्चात् अर्थात जून 1929 तक फासी अक के जब्ती की बात भूल सी गई और इसकी लोकप्रियता न केवल पाठको मे बढी बल्कि स्कूल कालेजो आदि के लिए अनुशसित की जाने लगी।[87]

इस अक (जनवरी 1929) का प्रारम्भ महादेवी वर्मा की कविता 'वरदान' से हुआ –

तरल आसू की लडिया गूथ,

इन्हीने काटी काली रात ।

निराशा का सूना निर्माल्य

चढाकर देखा फीका प्रात ।

आज आए हो हे करुणेश,

इन्हे जो तुम देने वरदान

गलाकर मेरे सारे अग

करो दो आखो का निर्माण ।[88]

इसी अक मे महादेवी वर्मा की एक अन्य कविता 'देव' प्रकाशित हुई –

सोकर मूक व्यथा मे अपने,

मुझे जाग लेने दे ।

अह्म भाव की चिर समाधि पर

देव ! त्याग लेने दे ।।[89]

'चाद' का मुख्य उद्देश्य तो स्त्रियो का कल्याण करना ही रहा, किन्तु चाद की विशेषता यह होती कि उनसे सबधित कुप्रथाओ पर प्रहार भी पद्य के माध्यम से किया जाता। बृद्ध विवाह पर व्यग्य निम्न भाति किया गया –

तन मे आई अगर बुढाई तो क्या ? मन है अभी जवान

रमणी झूट नहीं सकती है, चाहे निकल जाये यह जान

यही सोचकर मन मे विधि से वृद्ध महोदय करते ब्याह

[illegible] को, [illegible] को दिखलाने को गंदी राह

* * * * * * * * * *

बृद्ध छोड पत्नी को आखिर गये नरक के धाम

उनके घर मे इस घटना से मचा बड़ा भारी कुहराम

पर क्या होता, रग यही तो लाता बूढेपन का ब्याह

धन वृद्धि है उनकी जो जन, करते मन मे ऐसी चाह ।[90]

अत चाद ऐसी पत्रिका बन गई जिसने महिलाओ की दशा सुधारने के लिए साहित्य को माध्यम बनाया –

दिखा दो प्रभो ! मुक्ति की राह

मै हिन्दू विधवा हू, मेरा कैसा हो निर्वाह ?

जान न पाई विधि करतब मै,

विधवा हुई न जाने कब मै,

कहते है परिजन सब मेरे कभी हुआ था ब्याह।

पति सुख मैने कभी न जाना,

नहीं किसी को पति ही माना,

विधवा हुई कहा जब मुझ पर,

पडी न पति की छाह।[91]

चाद स्त्रियो का दु ख दर्द दूर करती तथा समाज के सामने सदैव एक प्रश्न उपस्थित करती। बाल विवाह, बृद्ध विवाह तथा अन्य सामाजिक कुरीतियो पर तीव्र प्रहार किए। महादेवी वर्मा के साथ एक ओर उच्च कोटि के साहित्यकार प्रोफेसर रामकुमार वर्मा भी सदैव 'चाद' मे लिखते रहे –

भारती भव्य भाव भण्डार,

सजा दो शब्दो का सुकुमार ।

हृदय उनको चुन-चुन कर चारू

गूथ डाले कविता का हार ।

स्पन्दित, सरस स्वरो से सजा,

सजग सरिता सा कविता तार ।

हिला दे हिल कर विश्व विराट,

छलक जावे पल-पल मे प्यार ।[92]

जहा चाद ने उच्चकोटि का काव्य प्रकाशित किया वही तात्कालीन श्रेष्ठ कहानीकारो की कहानिया इसमे नियमित प्रकाशित होने लगीं। जनवरी 1933 के अक मे प्रेमचद की 'बेटो वाली विधवा' तथा फरवरी 1933 के अको मे 'वेश्या' कहानी प्रकाशित हुई।[93]

क्या कहानी, क्या निबध, क्या कविता, और क्या उपन्यास सभी को 'चाद' ने प्रकाशित किया। एक ओर इसने स्त्रियो मे जागृति लाने के लिए सतत प्रयत्न किया तो दूसरी ओर उच्च कोटि का साहित्य प्रकाशित कर हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की, अत साहित्यिक पत्रिकाओ मे यदि सरस्वती के समकक्ष अन्य किसी पत्रिका को रखा जाएगा तो वह चाद होगी।

हिन्दुस्तानी (1931)

श्रेष्ठ साहित्यिक मूल्यो को स्थापित करने, साहित्य मे उच्च श्रेणी के शोध को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से हिन्दुस्तानी एकेडमी ने 'हिन्दुस्तानी' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की। यह जनवरी 1931 से निकाली गई और इसमे साहित्य के विभिन्न अगो का विवेचन किया गया।[94]

इसके सम्पादक मण्डल मे तात्कालीन प्रयाग की विद्धवत मण्डली को रखा गया। इसके सपादक मण्डल मे थे – राम चद्र टण्डन, डा तारा चद्र, बेनी प्रसाद, डा. राम प्रकाश त्रिपाठी और धीरेन्द्र वर्मा।[95] हिन्दुस्तानी के स्वरूप के सबध मे सदैव मतभेद रहा है कुछ विद्वान इसे शोध पत्रिका मानते है जबकि कुछ इसे पूर्ण साहित्यिक

पत्रिका मानते है। हरी मोहन मालवीय इसे पूर्ण साहित्यिक पत्रिका स्वीकार करते है।[96]

हिन्दुस्तानी पत्रिका के उच्च आदर्श थे। इसके सम्पादकीय वक्तव्य मे कहा गया समय बदलता है। अग्रेजी शिक्षा नये विचारो को उपस्थित करती है, नये भावो को जगाती है। जातीयता का एक नवीन अनुभव होता है। देश मे एक नई जागृति होती है। पुरानी कृतियो की याद, जापान के आश्चर्य जनक विजयो की कथा, यूरोप के आतरिक कलह, हिन्दुस्तान के क्षितिज पर आशाओ के असीम दृश्यो की झलक हमारे हृदयो को उमगो से परिपूर्ण कर देते है। जाति की प्रतिष्ठा के, उस अधिकारो के और उसके व्यक्तित्व को स्थिर करने के विचार लोगो के मस्तिको मे घूमते है और स्वभावत लोगो के दिल भाषा और साहित्य की उन्नति की ओर आकर्षित होते है। एक ऐसी सख्या की आवश्यकता प्रतीत होती है जो इस उद्देश्य को पूरा करने मे सहायक हो।[97]

तात्कालीन समय मे हिन्दी भाषा की नित्य प्रति उन्नति हो रही थी, और हिन्दी लेखको का एक बहुत बडा वर्ग साहित्य के प्रत्येक अग की प्रगति करने के लिए प्रयत्नशील था किन्तु उसके लिए प्रकाशन का कोई उचित माध्यम नहीं मिल पा रहा था। साहित्य की दृष्टि से उस समय नाटको, उपन्यासो, समालोचना और इतिहास जैसे अगो पर अपेक्षाकृत कम लिखा जा रहा था, कविता मे भाषा की प्रौढता नही थी अत साहित्य मे उक्त कमियो को दूर करने के लिए एक ऐसी पत्रिका की आवश्यकता महसूस हो रही थी जो उक्त समस्याओ को दूर कर सके और 'हिन्दुस्तानी' ने इसका प्रयास भी किया।[98]

देश का अधिकाश जनमानस अशिक्षित था, साहित्य उसके लिए कल्पना की वस्तु थी, लेकिन वह भी इसका अधिकारी है, यह बात लम्बे समय से महसूस की जा रही थी, लेकिन विद्वानो का एक वर्ग यह मानने को तैयार ही नहीं था कि किसी सस्था के समन्वित प्रयासो से श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण हो सकता है जो जन–जन

का बन सके, उनका विचार था कि कवि और साहित्यिकार बनाने से नही बनते, किन्तु इस तर्क का खण्डन तारा चद्र ने अपने सम्पादकीय वक्तव्य मे किया 'साहित्य जिन भावो, रसो, कल्पानाओ और विचारो को आश्रय देता है वह सभी मनुष्यो मे कम या अधिक पाए जाते है। ऐसा न होता तो साहित्य का प्रभाव इतना सर्वव्यापी न होता और कुछ थोडे मनुष्यो तक परिमित रहता। इन भावो, कल्पनाओ, प्रेरणाओ को एक रचनात्मक रूप देने की योग्यता अवश्य परिमित है।'[99]

हिन्दुस्तानी एकेडमी का उद्देश्य था भाषा को सवारना, साहित्य को अलकृत करना, कवि एव लेखको को प्रोत्साहन देना, ऐसा साहित्य उत्पन्न करना जो जन–जन का बन सके, और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए एकेडमी ने त्रैमाषिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' का प्रकाशन किया।[100]

'हिन्दुस्तानी' अपने उद्देश्यो को पूर्ण करने मे सफल हुई, इसने साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। घोर आर्थिक सकट के बावजूद आज भी इसका प्रकाशन हो रहा है।

20वी शताब्दी का पूवार्द्ध निर्माण की प्रक्रिया का आरम्भिक युग था, और जब निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ होती है तो उसके लिए देशकाल वातावरण उपस्थित करता है और समाज का सकल्प नई मूर्ति गढना आरम्भ करता है। मूर्ति की रचना मे केवल समाज का ही सकल्प सहायक नही होता अपितु समाज की मनीषा को कातिदान करने वाले साहित्यकार का अवदान भी कम महत्वपूर्ण नही होता, और इस युग मे जो साहित्यकार हुए वे देश की दशा और समाज की स्थिति से पूर्णत परिचित थे। वे समाज से कटे हुए केवल एकातवादी बौद्धिक चमत्कार के व्यक्तिवादी रचनाकार नही थे अपितु समाज के भीतर रहकर उसका सुख दुख आशा और निराशा और सकल्प को भोगने वाले और सवारने वाले लोग थे और इन लोगो के साहित्य को सवारा तत्कालीन समय में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओ ने। इस युग मे जितनी पत्र–पत्रिकाओ के प्रकाशन हुए वे सब की सब विविध विषयो से विभूषित थीं। विशेष वर्ग के लोगो को प्रोत्साहन देने के लिए बालको और स्त्रियो से

सबद्ध पत्र–पत्रिकाए भी निकली। इनके माध्यम से उन विभूतियो का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होने हिन्दी साहित्य को अनन्य श्री प्रदान की।[101]

देश के कोने–कोने से पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हुआ और इसमे इलाहाबाद का स्थान अग्रणी रहा, यहाँ से 'सरस्वती' और 'चाद' जैसी उच्च कोटि की साहित्यिक पत्रिकाए प्रकाशित हुई, और इन पत्रिकाओ के माध्यम से, गुलेरी, प्रेमचद्र, प्रसाद, किशोरी लाल गोस्वामी, वृदावन लाल वर्मा, पद्य सिह शर्मा, श्याम सुदर दास, मिश्रबधु, शिवपूजन सहाय, हरिऔध बालमुकुद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गगा प्रसाद अग्निहोत्री, गोविद नारायण मिश्र, पाण्डये बेचन शर्मा उग्र जैसे गद्यकार, और श्रीधर पाठक, हरिऔध, रामचरित उपाध्याय, राम नरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, पत, निराला, महादेवी और रामकुमार वर्मा जैसे कवि प्रकट हुए।[102]

अत उपलब्धियो की दृष्टि से यह युग (1900–1950) हिन्दी साहित्य के लिए अत्यत महत्वपर्णू है। इस युग मे कविता, कहानी, निबध, रेखाचित्र, समालोचना, उपन्यास, नाटक सभी साहित्य विधाओ का विकास हुआ। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओ ने इन विधाओ के विकास के लिए ठोस पृष्ठभूमि का कार्य किया।

विकास का श्रीगणेश, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यम से किया और मर्यादा, चाद, स्त्रीदर्पण, हिन्दी प्रदीप, सम्मेलन पत्रिका और हिन्दुस्तानी ने इस कार्य को आगे बढाया। सरस्वती के द्वारा खडी बोली काव्य भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित हुई। प्रारम्भ मे यह भाषा अत्यधिक और भावो को वहन करने मे अक्षम थी, पर धीरे–धीरे द्विवेदी जी के प्रयत्नो से इसका परिष्कार हुआ। पत्र–पत्रिकाओ के माध्यम से जब खडी बोली का विस्तार हुआ तो काव्य के साथ–साथ गद्य की भी निबध, नाटक, उपन्यास, कहानी आलोचना जैसी विधाए साहित्यिक क्षेत्र मे प्रतिष्ठित होने लगीं।

पत्रिकाओ द्वारा बहुमुखी विकास प्रक्रिया मे अनेक विधाओ का जन्म ही हुआ, जिनमे रेखाचित्र भी एक है, यह निबध की सीमा रेखा को छूता हुआ एक नया

साहित्यिक रूप है। इतिहासकारो ने 'मर्यादा' (सन् 1918 ई) मे प्रकाशित बनारसी दास चतुर्वेदी के 'औरगजेब' शीर्षक रेखाचित्र को हिन्दी का प्रथम रेखा चित्र माना है।

इन पत्रिकाओ के माध्यम से ही सर्व प्रथम पारपरिक विषयो, रूढियो और अध विश्वासो का उच्छेदन कर जीवन के साथ समीक्षा का अविच्छेद सबध स्थापित हुआ। कहने का अभिप्राय यह है कि साहित्य का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, ऐसा कोई कोना नहीं जिसका स्पर्श इन पत्र–पत्रिकाओ ने न किया हो अत साहित्यिक योगदान मे पत्र–पत्रिकाओ के साहित्यिक योगदान की अवहेलना नहीं की जा सकती।

संदर्भ एवं [illegible]

1 पाण्डेय सुधाकर , (सपा), हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, खण्ड – 9, नागरी प्राचारिणी सभा (स0 2034) पृष्ठ 283

2 वही, पृष्ठ 283

3 वही, पृष्ठ 283–284

4 अबला हितकारक , सम्पादकीय, मई 1912, पृष्ठ 3

5 मिश्र कृष्ण बिहारी , हिन्दी पत्रकारिता, लोकभारती, इला 1994, पृष्ठ 62

6 पाण्डेय सुधाकर , (सपा), हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, खण्ड – 9, नागरी प्राचारिणी सभा (स0 2034) पृष्ठ 285

7 भटनागर राम रतन , राज एड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नलिज्म, इलाहाबाद, 1947, पृष्ठ 478

8 हिन्दी प्रदीप, मई 1878, पृष्ठ 2–3

9 हिन्दी प्रदीप, मई 1908, पृष्ठ 11–12

10 वैदिक वेद प्रताप , हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, (भाग 1) हिन्दी बुक सेन्टर, 1997, पृष्ठ 286

11 पाण्डेय सुधाकर , (सपा), हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, खण्ड – 9, नागरी प्राचारिणी सभा (स0 2034) पृष्ठ 286

12 वाजपेयी अम्बिका प्रसाद , समाचार पत्रो का इतिहास, ज्ञानमण्डल स 2010, पृष्ठ 238

13 वही, पृष्ठ 238

14 मिश्र कृष्ण बिहारी , हिन्दी पत्रकारिता, लोकभारती, इला 1994, पृष्ठ 63

15 राम स्वरूप चतुर्वेदी का 1993 मे इलाहाबाद सग्रहालय मे दिया गया व्याख्यान।

16 सरस्वती, जनवरी 1900 ई पृष्ठ 1–3

17 सरस्वती भाग 1, खण्ड 1 जनवरी 1900 ई

18 बागीस्वर मिश्र, सरस्वती, मई–जून 1902, पृष्ठ 179

19 सरस्वती, फरवरी–मार्च 1903 ई पृष्ठ 92

20 वही, पृष्ठ 94

21 नाथू राम शर्मा , 'शकर' हमारा उद्य पतन, सरस्वती मई 1906, पृष्ठ 192

22 सरस्वती, नवम्बर 1935 ई पृष्ठ 431

23 वही, पृष्ठ 431

24 सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' , उक्ति शीर्षक कविता, सरस्वती, नवम्बर 1933, पृष्ठ 450

25 सरस्वती, जनवरी 1936 ई पृष्ठ 91

26 सरस्वती, फरवरी 1936 ई पृष्ठ 145

27 सरस्वती, जुलाई 1927, भाग–2, खण्ड–2 पृष्ठ 761

28 सरस्वती, जुलाई 1933 पृष्ठ–1

29 सरस्वती, अक्टूबर 1933 पृष्ठ 289

30 सरस्वती, अप्रैल 1933, खण्ड 1 (भाग 34) पृष्ठ 441

31 सरस्वती मई 1933 खण्ड 1 (भाग 34) पृष्ठ 558

32 सरस्वती, नवम्बर 1935, पृष्ठ 385

33 सरस्वती, दिसम्बर 1935, पृष्ठ 385

34 सरस्वती, मई 1936, खण्ड1, पृष्ठ 433

35 सरस्वती, जून 1936 खण्ड 1, पृष्ठ 576

36 सरस्वती, सितम्बर 1936, पृष्ठ–193

37 सरस्वती, मार्च 1936–पृष्ठ–241

38 सरस्वती, दिसम्बर 1933, भाग 34 (खण्ड–2) पृष्ठ 502

39 राम नरेश त्रिपाठी , ग्राम्यगीत शीर्षक कविता, सरस्वती नवम्बर 1927, भाग 28 (खण्ड2) पृष्ठ 1280–1281

40 सरस्वती, जनवरी 1929, पृष्ठ 146

41 सरस्वती, अगस्त 1932, पृष्ठ–121

42 सरस्वती, जुलाई 1928, पृष्ठ–93

43 पाण्डेय सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास खण्ड नागरी प्रचारिणी सभा (स 2034) पृष्ठ 287

44 वही, पृष्ठ 288

45 वैदिक वेद प्रताप , हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, भाग–1, हिन्दी बुक सेन्टर, 1997, पृष्ठ 126

46 वही, 126

47 A letter from Rt Madan Mohan Malavıya to Mahavır Prasad Dwıvedı, Dated, 26-2-1916 P K Malvıya Callecteor NAI New Delhı

48- पाण्डेय सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहट इतिहास, खण्ड 9, नागरी प्रचारिणी सभा, (स 2034) पृष्ठ 288

49 वही, पृष्ठ 288

50 वही, पृष्ठ–288–289

51 वही, पृष्ठ

52. A letter from govınd Ballabh Pant to Denı Dulty Shukla (edt Saraswatı) Lucknow Date Oct, 16, 1937,

53 श्रीवास्तव सालिगराम , (सपा), प्रयाग प्रदीप, हिन्दुस्तानी एकेडमी, 1937, पृष्ठ 161

54 उत्तर प्रदेश, फरवरी 1984, अक–1, पृष्ठ 146

55 स्त्री दर्पण, नवम्बर 1995, पृष्ठ–329

56 स्त्री दर्पण, नवम्बर, 1915, पृष्ठ 371

57 उत्तर प्रदेश (प्रयाग विशेषाक) फरवरी 1984, पृष्ठ 146–147

58 त्रिपाठी आर एन , तीस दिन मालवीय जी के साथ, 1942 पृष्ठ 53

59 श्रीवास्तव सालिगराम , (सपा) प्रयाग प्रदीप, हिन्दुस्तानी एकेडमी 1937, पृष्ठ 160

60 मर्यादा, अगस्त 1912, पृष्ठ 283

61 मर्यादा, मई 1912, पृष्ठ 30

62 मर्यादा, अक्टूबर, 1912, पृष्ठ 405–408

63 वही, पृष्ठ 406–408

64 मर्यादा, अक्टूबर 1912, पृष्ठ 394

65 मर्यादा, अक्टूबर 1912, पृष्ठ 397

66 बनारसी दास चौबे, मर्यादा, नवम्बर 1912, पृष्ठ–20

67 विदुषी सुमित्रा , मर्यादा, फरवरी 1913 पृष्ठ 210–211

68 उत्तर प्रदेश, फरवरी 1984, पृष्ठ– 146–147

69 सम्मेलन पत्रिका भाग 1, अक 1 माघ 1985 (विक्रय)

70 सम्पादकीय वक्तव्य, सम्मेलन पत्रिका भाग 1, अक 1 माघ 1985 (विक्रय) पृष्ठ 1

71 वही, पृष्ठ1

72 वही, पृष्ठ 1

73 सम्मेलन पत्रिका, भाग–1 अक 1 माघ 1985 (वि) पृष्ठ 66–67

74 सम्मेलन पत्रिका, भाग 1 अक 2 ज्येष्ठ 1986 (वि) पृष्ठ 34

75 चॉद, नवम्बर 1922, वर्ष 1, अक 1

76 वही, पृष्ठ (पत्रिका का मुख्य पृष्ठ)

77 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–2

78 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–3

79 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–1–2 (भूमिका पृष्ठ)

80 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–1

81 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–29

82 चॉद, नवम्बर 1922, पृष्ठ–14

83 चॉद, मार्च 1925, पृष्ठ–561

84 चॉद, अप्रैल 1926, पृष्ठ–658

85 चॉद, दिसम्बर 1927, पृष्ठ–201–202

86 In exercise of the power conferred by section 99/Aof the code of criminal procedure, 1898 (Act v of 1898) the Governor in council hereby declares to be forfeited to his majesty every copy of the special 'Phansi' Ank (Capital Punishment Number) of the Hindi Chand Magazine issued in November 1928, edited by Sri Chatur Sen Shastre and printed and published by R Sehgal at the fine art printing cottage 28, Elgin Road, Allahabad, on the ground that the said number contains matter, the publication of which is punishable under section 124/A of the Indian Penal code

Gazette of United provinces, Govt of UP No 3774/VIII-100 Dated, Dec 15, 1928

87 Hıghly apprecıated and recommended for use ın schools and lıbrarıes by dırectors of publıc ınstructıon, Punjab, central provınces and Kashmır State etc

चॉद, जनवरी 1929, पृष्ठ 1

88 चॉद, जनवरी, 1929, पृष्ठ–2

89 चॉद, जनवरी, 1929, पृष्ठ–529

90 चॉद, जनवरी, 1929, पृष्ठ–501–508

91 चॉद, फरवरी, 1929, पृष्ठ–658

92 स्मरण के दो शब्द' चॉद, जनवरी 1933 पृष्ठ 273

93 चॉद, फरवरी, 1933, पृष्ठ–404

94 श्रीवास्तव सालिगराम , (सपा) प्रयाग प्रदीप, प्रका हिन्दुस्तान एकेडमी, 1937, पृष्ठ 160

95 हिन्दुस्तानी, जनवरी 1931, पृष्ठ–1 (भूमिका)

96 साक्षात्कार, हरीमोहन मालवीय, सपा, हिन्दुस्तानी, दिनाक 29 3 2000, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद

97 हिन्दुस्तानी, जनवरी 1931, पृष्ठ 124

98 वही, पृष्ठ 124

99 वही, पृष्ठ 124–125

100 वही, पृष्ठ 126–127

101 पाण्डेय सुधाकर , (सपा) हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास', खण्ड 2, नागरी प्रचारिणी सभा (स 2034) पृष्ठ 24

102 वही, पृष्ठ 27

अध्याय - 5

इलाहाबाद की साहित्यिक संस्थाएं

अध्याय- 5

इलाहाबाद की साहित्यिक संस्थाएं

निर्माण की प्रक्रिया जब आरम्भ होती है तो उसके लिए देश काल वातावरण प्रस्तुत करता है और समाज का सकल्प नई मूर्ति गढना आरम्भ करता है। रचना मे केवल समाज का ही सकल्प सहायक नही होता अपितु समाज की मनीषा को कातिदान करने वाले साहित्यकार का अवदान भी कम महत्वपूर्ण नही होता।

इस युग मे जो साहित्यकार हुए वे देश की दशा और समाज की स्थिति से पूर्णत परिचित थे। वे समाज से कटे हुए केवल एकातवादी बौद्धिक चमत्कार के व्यक्तिवादी रचनाकार नहीं थे अपितु समाज के भीतर रहकर उसका सुख, दु ख आशा निराशा और सकल्प को भोगने और सवारने वाले लोग थे। वे यह महसूस कर रहे थे कि जिस कार्य को एक व्यक्ति कर सकता है यदि उस कार्य को कुछ व्यक्ति मिलकर करे तो कार्य उत्तम और शीघ्र किया जा सकता है।[1]

मौलिक व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार जो व्यक्तिगत अनुभूतियो का समाज को दान देते है, वे सगठन के कच्चे होते है फिर भी इस युग का साहित्यकार उठा और अन्य क्षेत्रो मे जिस प्रकार का सगठन हो रहा था उसके लिए सक्रिय हुआ। प्रारम्भ मे बडा सगठन बनाना कठिन कार्य था इसलिए मित्र मण्डलियो के बीच साहित्य रचना का कार्य आरम्भ हुआ। पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हो चुका था इसलिए प्राय साहित्यकार प्रकाशन करते थे। उनके भीतर एक दूसरे के सहयोग की भावना थी क्योकि वे सभी मौलिक तो थे ही, निर्माण की शक्ति भी उनमे थी।[2]

इलाहाबाद मे इस समय देश के प्रमुख साहित्यकार उपस्थित हो चुके थे और इलाहाबाद साहित्यिक गतिविधियो का केन्द्र बन गया था। हिन्दी रगमच पर मदन मोहन मालवीय का पदार्पण हो चुका था। बाबू श्याम सुन्दर दास और महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्पर्क सूत्रधार बन चुके थे। हिन्दी प्रदीप, और सरस्वती ने एक

वातावरण का सृजन किया जिससे इलाहाबाद मे अनेक साहित्यिक सस्थाओ का जन्म हुआ और जिन्होने भारतीय साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[3]

हिन्दी साहित्य सम्मेल (1910) – हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना उस प्रक्रिया का परिणाम, उस साहित्यिक आन्दोलन का परिणाम था जिसकी नीव 19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे पडी। सर्वप्रथम राजा लक्ष्मण सिह ने 1863 मे हिन्दी आन्दोलन की नीव डाली और वे आजीवन उस पर दृढ रहे। उन्होने फारसी–अरबी रहित शुद्ध हिन्दी की वकालत की, प्रजाहितैषी, नामक अखबार निकाला जो पाच वर्ष तक चला। आगे चलकर महर्षि दयानन्द और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र तथा उनकी मण्डली के सदस्यो ने उक्त आन्दोलन को सगठित रूप प्रदान किया।

इन महारथियो की मृत्यु के बाद आन्दोलन मे कुछ शिथिलता आई किन्तु इस आन्दोलन का सूत्र पकडकर 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का गठन हुआ। शैक्षणिक जगत पर मालवीय का पदार्पण हुआ। इसके पूर्व मालवीय जी प्रयाग मे 1884 मे 'हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा' का गठन कर चुके थे।[4]

मालवीय जी ने राष्ट्रभाषा आन्दोलन को एक नई दिशा प्रदान की तथा अदालतो मे प्रयुक्त होने वाली फारसी लिपि की जगह देवनागरी लिपि की वकालत की उन्होने स्पष्ट कहा कि "यदि मान लिया जाए कि फारसी लिपि मे अधिक तीव्रता से काम चलता है तो भी नागरी के गुणो को नही भुलाया जा सकता। शिकस्त लिखने मे अदालत का यदि कुछ समय बच जाता है तो उन्हीं कागजो को पढने मे बहुत समय नष्ट हो जाता है, और अत मे नामो आदि के बारे मे सदेह रह जाता है।"[5] उन्होने आकडो के आधार पर यह सिद्ध किया कि इस प्रात मे प्राइमरी स्कूलो मे हिन्दी पढने वाले छात्रो की सख्या उर्दू पढने वाले छात्रो से दुगुनी तिगुनी है। मालवीय जी की सभा के कार्यकर्ता प्रान्त के विभिन्न भागो से हिन्दी के पक्ष मे 60 हजार हस्ताक्षर कराकर लाए। इसके पश्चात् एक प्रभावशाली प्रतिनिधि मण्डल जिसमे सर सुन्दरलाल तथा अयोध्या, माडा, आवागढ और सुरमन के राजा सम्मिलित थे, उक्त ज्ञापन पत्र

को लेकर 2 मार्च 1898 को युक्त प्रात के छोटे लाट ऐटनी पैट्रिक मैक्डॉनल से मिला। मैक्डॉनल आयरिश थे और उन दिनो आयरलैण्ड भी ब्रिटेन के अधीन था। उसकी कुछ समस्याए भारत की कुछ समस्याओ से मिलती जुलती थी। एक व्यवहारिक तथा कुशल राजनीतिज्ञ मालवीय जी ने, समस्याओ के इस साम्य से लाभ उठाया। मैक्डॉनल पर उनका पहले से प्रभाव था ही गवर्नर ने प्रार्थना पत्र स्वीकार कर लिया।[6]

अत 14 अप्रैल 1900 ई को गवर्नर ने अदालतो मे फारसी लिपि के साथ नागरी लिपि के चलन की आज्ञा जारी कर दी। अत हिन्दी भाषा–साहित्य प्रेमियो का उत्साहित होना स्वाभाविक ही था। इस सफलता से उत्साहित होकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने यह निश्चय किया कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन किया जाए। इस समाचार के प्रकाशित होते ही एक आन्दोलन उठ खडा हुआ और प्रत्येक जगह से समर्थन मिलना आरम्भ हो गया। अत काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने एक स्वागत कार्यकारिणी बनाई जिसमे सम्मिलित थे – बाबू कालीदास माणिक, प केशव देव शास्त्री, राय कृष्ण चन्द्र राय कृष्ण जी, कृष्णा राम मेहता, राव गोपाल दास, बाबू बलभद्र दास, बाल मुकुन्द वर्मा, राव बैजनाथ दास, बाबू माधव प्रसाद, प रामचन्द्र शुक्ल, रामनारायण मिश्र, गोस्वामी रामपुरी, राव शिव प्रसाद, शिव प्रसाद गुप्त, डॉ, शोभाराय मेहता, बाबू श्याम सुन्दर दास, सिद्धेश्वर शर्मा, सुधाकर द्विवेदी, सुरेन्द्र नारायण शर्मा।[7]

समिति ने सर्वसम्मति से यह तय किया कि सम्मेलन 10 अक्टूबर 1910 को हो तथा इसके सभापति मदन मोहन मालवीय जी को बनाया जाए।[8] सम्मेलन मालवीय जी की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ इसमे आठ प्रस्ताव पारित किए गये –

1 अदालतो मे नागरी का प्रचार

2 विश्वविद्यालय शिक्षा मे हिन्दी का आदर

3 हिन्दी पाठ्य पुस्तको मे चुनाव का प्रबध

4 राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि

5 स्टाम्पो और सिक्को पर नागरी अक्षर

6 प्रान्तीय कान्फ्रेसो द्वारा नागरी का आदर

7 बडोदा नरेश को धन्यवाद,

8 नृपतिगणो से नागरी प्रचार की प्रार्थना।

अत नागरी अक्षरो और हिन्दी भाषा के प्रचार पर अधिक ध्यान दिया गया।[9] मालवीय जी ने अपने लम्बे व्याख्यान मे हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए आवाह्न किया। उन्होने कहा "हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिए यह समय बहुत ही उपयुक्त है। हिन्दी की दशा इस समय शोचनीय हो रही है। हिन्दी साहित्य के इस शमन की अवस्था मे सरस्वती शयन कैसा ? इस ध्यान से हमारे हिन्दी प्रेमियो मे बहुत से लोगो का यदि यह विचार है कि सरस्वती शयन कर रही है तो इससे क्या होता है ? हम लोग इस सम्मेलन मे उपयुक्त यत्न कर सरस्वती को जगाए। बात भी ऐसी ही है। जहा रात होती है वहा सूर्य नारायण की लालिमा दिखाई देती है। रात के अधकार के बाद प्रात काल होता है तो उसको देखना अच्छा लगता है। ऐसी अवस्था मे इस सरस्वती शयन का समय मुझको आशा देता है कि हिन्दी भाषा के शयन के समय मे जब साहित्य सम्मेलन होता है तब इस सरस्वती शयन के साथ के उपरान्त जैसे विजयादशमी का दिन आता है वैसे ही मुझको विश्वास है कि सोई हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य के जागने का समय निकट है। [10]

उन्होने जनता से हिन्दी भाषा सीखने, अग्रेजी ग्रथो के हिन्दी अनुवाद करने तथा सरल, सहज भाषा के प्रयोग का सुझाव दिया। उन्होने कहा हिन्दी मे फारसी अरबी के बडे–बडे शब्दो व्यवहार जैसा बुरा है, हिन्दी को अकारण ही सस्कृत के शब्दो से गूथ देना भी बुरा है। हमारी भाषा के शब्द ऐसे हो जिससे सभी प्रदेशो के लोग लाभ उठा सके। जितनी भाषाए है हमारी है। बगाली हमारी भाषा है। अब इसके विचार से किसी भाषा को बुरा कहना गलत है। हिन्दी अपनी बहिनो मे सबसे

प्राचीनतम और बडी बहन है, और माता का रूप और प्रकृति उससे बहुत मिलती है। आप भी ऐसा यत्न करे जिससे हिन्दी वाडगमय समृद्ध हो सके और हिन्दी भाषा, राष्ट्रभाषा बन सके।[11]

सभा के प्रथम सम्मेलन के गर्भ से 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का जन्म हुआ। यह सभा की राजनीतिक शाखा थी और इसने प्रारम्भ से ही अपना लक्ष्य रखा राष्ट्र लिपि देवनागरी और राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार, हिन्दी को अन्तर्प्रान्तीय भाषा बनाना, सरकारी प्रबधो, कार्यालयो कचहरियो आदि मे इसके प्रवेश के लिए आन्दोलन करना, विश्वविद्यालयो मे शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए यत्न करना।[12]

दूसरा साहित्य सम्मेलन 1911 मे प्रयाग मे हुआ। इसकी अध्यक्षता प गोविन्द नारायण मिश्र ने की। दूसरे सम्मेलन के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन नामक एक समिति बनाई गई, और यही समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलन सस्था के रूप मे स्थापित हुई। [13]

अपने जन्म के आरम्भ से ही इस सस्था ने हिन्दी भाषा और साहित्य के उत्थान के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिए। वार्षिक सम्मेलनो की अनवरत श्रखला आरम्भ हुई जिससे समस्त देश के कवि, साहित्यकार, एव विद्वान एक मच पर एकत्र होने लगे। भाषा सहित्य और उसकी आवश्यकताओ पर तत्कालीन तथा बाद के भी सभापतियो ने निरन्तर पहले हिन्दी भाषी जनता और कालान्तर मे भारतीय जनता का ध्यान आकर्षित किया। सम्मेलन के मालवीय युग और गाधी युग मे कुछ तात्विक अतर था। मालवीय युग मे सम्मेलन का प्रचार, प्रसार तथा रीति नीति किसी सीमा तक हिन्दी प्रदेशो तक सीमित थी। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं था कि हिन्दी को समग्र भारतीयता की वाहिका भाषा के रूप मे उस काल मे लोग नहीं जानते थे। वास्तविकता यह थी कि हिन्दी क्षेत्रो मे ही कोर्ट कचहरी शिक्षा आदि सरकारी महकमो मे हिन्दी को कोई स्थान नहीं प्राप्त था और जब कुछ स्थान मिला, तो हिन्दी के उस अधिकार की व्याख्या स्वरूप को सरकारी अहलकारो तथा हिन्दी द्वेषी लोगो के द्वारा उपेक्षा या गलत ढग से प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई। अत सम्मेलन के लिए यह

आवश्यक था कि ब्रिटिश भारत के हिन्दी भाषी प्रान्तो तथा हिन्दी भाषी देशी रियासतो मे सबसे पहले हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलवाया जाए। इसके लिए प्रस्ताव पारित करके सम्बन्धित सरकारो से बारम्बार निवेदन करना, ध्यान आकर्षण, आदि ही किया जा सकता था।[14]

प्रथम दो सम्मेलनो के सभापतियो को राजनीतिक कहा जा सकता है, किन्तु वह भाषा एव साहित्य के उत्थान के लिए समर्पित थे। सम्मेलन का प्रातीय अधिवेशन जो कलकत्ता मे हुआ प्रसिद्ध साहित्यकार प बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' को बनाया गया।[15] प्रेमघन जी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास पर अत्यधिक बल दिया 'देववाणी क्रमश व्याकरण और साहित्य के विविध अगो–प्रत्यगो से युक्त होकर इतनी उन्नत अवस्था मे पहुची कि आज भी ससार की भाषाए अनेक अशो मे उसके आगे सिर झुका रही है। आरम्भ मे यही यहा की सामान्य भाषा या राष्ट्रभाषा थी। फिर राजभाषा अथवा नागरी भाषा हुई। अत सर्वप्रथम कार्यालयो को अपनी भाषा के प्रदेश का उद्योग करना चाहिए। दूसरा कर्तव्य यह होना चाहिए कि भाषा की शिक्षा मे सुधार हो उसका साहित्य समृद्ध हो।[16]

प बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन ने साहित्य के विकास का आवाहन किया और द्वितीय सम्मेलन मे तय किए गये उद्देश्य पर चलने की आवश्यकता बताई। द्वितीय सम्मेलन 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इतिहास मे मील का पत्थर है इसमे उद्देश्य निर्धारित किए गये और पुरूषोत्तम दास टण्डन द्वारा निर्मित नामावली स्वीकृत की गई –

1 हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सब अगो की पुष्टि और उन्नति का प्रयत्न करना।

2 देश व्यापी व्यवहारो और कार्यो को सुलभ करने के लिए राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रसार करना।

3 नागरी लिपि को मुद्रण सुलभ और लेखन सुलभ बनाने की दृष्टि से उसे अधिक विकसित करने का प्रयत्न करना।

4 हिन्दी भाषा को अधिक सुगम, मनोरम, व्यापक और समृद्ध बनाने के लिए समय–समय पर उसके अभावो को पूरा करना और उसकी शैली मे सशोधन और त्रुटियो को दूर करने का प्रयत्न करना।

5 सरकारी, अर्द्ध सरकारी कार्यालयो, निगम, प्रतिष्ठानो मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयत्न करना।

6 हिन्दी के ग्रथकारो, लेखको, कवियो, पत्र–सपादको, प्रचारको और सहायको को समय–समय पर पारितोषिक, प्रशसापत्र, पदक उपाधि आदि से सम्मानित करना।

7 सारे देश मे हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न करने और उसकी श्री वृद्धि के लिए प्रयत्न करना।

8 हिन्दी भाषा द्वारा उच्चतम शिक्षा देने के लिए महविद्यालय, विश्वविद्यालय, शिक्षण और शोध सस्थान तथा विश्वविद्यापीठ स्थापित करना।

9 जहा आवश्यकता समझी जाए, वहा पाठशाला–समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने–कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार वर्तमान सस्थाओ की सहायता करना।

10 हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि के लिए मानविकी, समाज शास्त्र, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान और तकनीकी विषयो की पुस्तको को लिखवाना और प्रकाशित करना।

11 हिन्दी की हस्तलिखित और प्राचीन सामग्री तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माताओ के स्मृति चिन्हो की खोज करना और इनके तथा प्रकाशित पुस्तको के सग्रह और रक्षा के निमित्त सम्मेलन की ओर से एक वृहत सग्रहालय स्थापित करना।

12 हिन्दी भाषा और साहित्य सम्बन्धी अनुसधान के लिए प्रेरित करना।

13 गैर हिन्दी भाषी प्रदेशो मे वहा की प्रदेश सरकारो, बुद्धिजीवियो, लेखको साहित्यकारो आदि से सम्पर्क करके उन्हे देवनागरी लिपि मे हिन्दी के प्रयोग के लिए तथा सम्पर्क भाषा के रूप मे अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रेरित करना और उन प्रदेशो मे हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए हर प्रकार से सहायता करना।

14 अन्य भाषाओ के साहित्य को हिन्दी मे अनुवाद करना।

15 न्यायालयो मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयत्न करना।[17]

उक्त उद्देश्यो को दृष्टिगत रखते हुए साहित्य सम्मेलन ने सतत प्रयास आरम्भ किए। षष्ठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सभापति बाबू श्याम सुन्दर दास ने इस पर अत्यधिक बल दिया और राष्ट्र निर्माण के लिए साहित्य निर्माण आवश्यक बताया।

साहित्य क्या हमे राष्ट्र निर्माण मे सहायता नही दे सकता, क्या महारे देश की उन्नति करने मे हमारा पथ प्रदर्शक नही हो सकता ? अवश्य हो सकता है यदि हम लोग जीवन के व्यवहार मे उसे अपने साथ–साथ लेते चले, उसे पीछे न छूटने दे। यदि हमारे जीवन का प्रवाह एक ओर जा रहा है और हमारे साहित्य का प्रवाह दूसरी ओर को है, तब तो हमारा–उसका प्रकृत सयोग ही नही हो सकता।[18]

बाबू श्यामसुन्दर दास ने श्रेष्ठ साहित्य पर बल दिया 'मेरे विचार से इस समय हमे विशेष कर ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो मनोवेगो का परिष्कार करने वाला, सजीवनी शक्ति का सचार करने वाला, चरित्र को सुन्दर साचे मे ढालने वाला तथा बुद्धि को तीव्रता प्रदान करने वला हो। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि साहित्य परिमार्जित, सरस और ओजस्विनी भाषा मे तैयार किया जाए।[19]

सम्मेलन के उद्देश्यो को पूरा करने के लिए यह आवश्यक था कि सम्मेलन मे प्रथक से साहित्य विभाग हो अत साहित्य विभाग की स्थापना की गई। साहित्य विभाग साहित्यिक गतिविधियो और प्रकाशनो की व्यवस्था करता है। इस विभाग का

मूल उद्देश्य हिन्दी साहित्य सबधी ग्रथो के साथ–साथ ज्ञान की अनुपलब्ध और महत्वपूर्ण कृतियो के प्रकाशन सबधी कार्यो को विकसित करना है।[20] साहित्य विभाग ने भारतीय साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेक महत्वूपर्ण ग्रथो का प्रकाशन किया। साहित्य के क्षेत्र मे प्राचीन काव्य सग्रह, और आधुनिक कविमाला के तहत उल्लेखनीय ग्रथ प्रकाशित किए –

प्राचीन काव्य संग्रह

1	काव्य सग्रह–प्रथम भाग	सपा श्री करूणापति त्रिपाठी
2	तुलसी सुषमा	सपा, डॉ राम प्रकाश अग्रवाल
3	नवीन तुलसी सग्रह	सपा माता प्रसाद गुप्त
4	बिहारी वैभव	सपा विजयपाल सिह
5	बिहारी सग्रह	सपा डॉ वियोगी हरि
6	बृजमाधुरी सार	सपा डॉ वियोगी हरि
7	मीरा बाई की पदावली	सपा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
8	विद्यापतिका (पद सग्रह)	सपा डॉ राममूर्ति त्रिपाठी
9	सूफी काव्य सग्रह	सपा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
10	सूर पद पचशती	सपा आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
11	सूर पदावली	सपा श्री गिरिजादत्त शुक्ल
12	सूर सुषमा	सपा डॉ मुशीराम शर्मा
13	विद्यापति पद सग्रह	सपा सतीश चन्द्र राय
14	दक्खिनी हिन्दी काव्य	सपा डॉ रहमत उल्लाह

आधुनिक कविमाला

1	आधुनिक कवि भाग 1	श्रीमती महादेवी वर्मा
2	आधुनिक कवि भाग 2	सुमित्रा नदन पत
3	आधुनिक कवि भाग 3	डॉ राम कुमार वर्मा
4	आधुनिक कवि भाग 4	गोपाल शरण सिह
5	आधुनिक कवि भाग 5	अयोध्यासिह उपध्याय 'हरिऔध'
6	आधुनिक कवि भाग 6	माखन लाल चतुर्वेदी
7	आधुनिक कवि भाग 7	हरिवश राय बच्चन
8	आधुनिक कवि भाग 8	रामनरेश त्रिपाठी
9	आधुनिक कवि भाग 9	नरेन्द्र शर्मा
10	आधुनिक कवि भाग 10	श्री भगवती चरण वर्मा
11	आधुनिक कवि भाग 11	रामेश्वर शुक्ल 'अचल'
12	आधुनिक कवि भाग 12	श्री गुरुभक्त सिह भक्त
13	आधुनिक कवि भाग 13	श्री बाल कृष्ण राव
14	आधुनिक कवि भाग 14	जानकी वल्लभ शास्त्री
15	आधुनिक कवि भाग 15	लक्ष्मीकात वर्मा
16	आधुनिक कवि भाग 16	केदार नाथ अग्रवाल
17	आधुनिक कवि भाग 17	श्याम नारायण पाण्डेय
18	आधुनिक कवि भाग 18	उपेन्द्र नाथ 'अश्क'
19	आधुनिक कवि भाग 19	गुलाब खण्डेलवाल

20 आधुनिक कवि भाग 20 राम गोपाल शर्मा 'दिनेश'

21 आधुनिक कवि भाग 21 नरेश मेहता

22 आधुनिक कवि भाग 22 श्रीपाल सिह 'क्षेम'

साहित्य विभाग ने अनेक कहानी सग्रह, जीवनी साहित्य, नाटक एव एकाकी साहित्य, पत्र साहित्य, लेख एव निबध सग्रह प्रकाशित किए। सुमित्रा नदन पत की कालजयी कृति 'हार' (उपन्यास) को भी 'साहित्य विभाग ने प्रकाशित किया।[21]

हिन्दी साहित्य सम्मेलनो की जो परम्परा 1910 मे प्रारम्भ हुई वह अनवरत चलती रही, जिसमे काशी, प्रयाग, कलकत्ता, भागलपुर, लखनऊ, प्रयाग, जबलपुर, इदौर, बम्बई, पटना, कलकत्ता, लाहौर, कानपुर, दिल्ली, देहरादून, वृदावन, भरतपुर, मुजफ्फरपुर, गोरखपुर, झासी, ग्वालियर, दिल्ली, इदौर, नागपुर, मद्रास, शिमला, काशी, पूना, बोहर, हरिद्वार, जयपुर, उदयपुर, कराची, बम्बई, मेरठ, हैदराबाद, कोटा और 1950 मे पुन प्रयाग मे अधिवेशन हुआ। और इन अधिवेशनो का सभापतित्व 'मदन मोहन मालवीय, गोविन्द नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', महात्मा मुशी राम, श्रीधर पाठक राय बहादुर बाबू, श्याम सुन्दर दास, प राम अवतार शर्मा, मोहन दास कर्मचन्द गाधी, मदन मोहन मालवीय (पुन बम्बई अधिवेशन 1918) विष्णुदत्त शुक्ल, डॉ भगवान दास, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, पुरूषोत्तम दास टण्डन, अयोध्या सिह उपाध्याय 'हरिऔध' माधव सप्रे, अमृत लाल चक्रवर्ती, गौरीशकर हीराचद ओझा, पद्मम सिह शर्मा, गणेश शकर विद्यार्थी, जगन्नाथ दास रत्नाकर, किशोरी लाल गोस्वामी, श्याम बिहारी मिश्र, सयाजीराव गायकवाड, मोहन दास कर्मचद गाधी (पुन 1935 इदौर) डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, बाबू राव विष्णु पराडकर, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, सम्पूर्णानद, अमरनाथ झा, माखन लाल चतुर्वेदी, गोस्वामी गणेश दत्त, कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी, श्री वियोगी हरि, राहुल साकृत्यायन, गोविन्द दास, आचार्य चन्द्रवली पाण्डेय, जय चन्द्र विद्यालकार, डॉ श्री नाथ सिह जैसे विद्वानो ने किया।[22]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने उद्देश्यो मे ही इस बात का उल्लेख किया है कि हिन्दी भाषा और साहित्य की महत्वपूर्ण सेवा करने वालो को पुरस्कृत और सम्मानित करेगा। इसके लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सबसे पहले 1922 से "मगलाप्रसाद पारितोषिक" देना आरम्भ किया।[23]

मगलाप्रसाद पारितोषिक पाने वाले विद्वानो मे प्रमुख है – पद्यम सिह शर्मा, गौरी शकर हीरा चद ओझा, प्रो सुधाकर, त्रिलोकी नाथ वर्मा, श्री वियोगी हरि, प्रो सत्यकेतु, गगा प्रसाद उपाध्याय, डॉ, गोरख प्रसाद, डॉ मुकुन्द स्वरूप, जय चद्र विद्यालकार, चन्द्रावती लखन पाल, रामदास गौड, अयौध्यासिह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, जयशकर प्रसाद, राम चन्द्र शुक्ल, वासुदेव उपाध्याय, सम्पूर्णानद, बलदेव उपाध्याय, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, शकर लाल, श्रीमती महादेवी वर्मा, डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ रघुवीर सिह, कमलापति त्रिपाठी, वासुदेव शरण अग्रवाल प्रमुख है।[24]

सम्मेलन ने 1938 से हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करने वालो को सम्मेलन की सर्वोच्च मानद उपाधि 'साहित्यवाचस्पति' देना आरम्भ किया। यह अलकरण अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाता है। इसे प्राप्त करने वालो मे मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाधी, अयोध्या सिह उपाध्याय 'हरिऔध' गौरी शकर हीरा चद ओझा, ग्रियसन, श्याम सुन्दर दास, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, डॉ सम्पूर्णानद, राहुल साकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्वनाम धन्य आदि उल्लेखनीय है। [25]

भाषा और साहित्य के विकास मे इस सस्था ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका वर्तमान मे भी नियमित वार्षिक अधिवेशन होता है,इसके क्रिया कलापो से आभास होता है कि हिन्दी आन्दोलन के लिए जो कुछ महात्मा गाधी, महामना मालवीय, पुरूषोत्तम दास टण्डन जैसे कर्मठ तपस्वियो ने किया था, उसकी तेजस्विता कहीं से भी खण्डित नहीं हुई है और वह अपनी समस्त समिधाओ के साथ आहूत करने

पर किसी भी यज्ञ संकल्प की पूर्ण आहूति के लिए आज भी उतनी ही कटिबद्ध है, जितनी कि उनके जीवन काल में थी।

हिन्दुस्तानी एकेडमी (1927) – हिन्दुस्तानी एकेडमी की स्थापना 1927 में हुई। इसके अनेक वर्ष पूर्व से ही एक ऐसी संस्था की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा था जो आधुनिक भारतीय भाषाओं को सम्पन्न करने की दिशा में निश्चित पग उठाए। "देश में एक नई जागृति होती है। पुरानी कृतियों की याद, जापान के आश्चर्य जनक विजयों की कथा, यूरोप के आंतरिक कलह हिन्दुस्तान के क्षितिज पर आशाओं के असीम दृश्यों की झलक से हमारे ह्रदयों को उमंगों से परिपूर्ण कर देते हैं। जाति की प्रतिष्ठा के, उसके अधिकारों की ओर उसके व्यक्तित्व को स्थिर करने के विचार लोगों के मस्तिष्कों में घूमते हैं और स्वभावतः लोगों के दिल भाषा और साहित्य की उन्नति की ओर आकर्षित होते हैं। एक ऐसी संस्था की आवश्यकता प्रतीत होती है जो इस उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हो।"[26]

तत्कालीन समय में हिन्दी और उर्दू दोनों की स्थिति अच्छी नहीं थी। साहित्य के क्षेत्र में कुछ कार्य अवश्य हुआ था, लेखक साहित्य स्रजन के लिए तत्पर थे परन्तु ज्ञान की बहुत सी शाखाओं में पुस्तकों का अभाव था। उर्दू भाषा के विषय में कही गई बात – 'गेसुए उर्दू अभी मिन्नत पिजीरे शाना है।' हिन्दी भाषा के लिए भी यथार्थ थी। उर्दू और हिन्दी दोंनों ही भाषाओं में ऐसे नाटकों, उपन्यासों, और गल्पों की कमी थी जो साहित्य की दृष्टि से ऊंचा स्थान रखते हो।

विद्वानों के समक्ष दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न था कि क्या संगठित संस्थाओं द्वारा साहित्य की उन्नति हो सकती है ?

यह सत्य है कि साहित्यकार बनाने से नहीं बनते किन्तु साहित्य जिन भावों, रसों कल्पनाओं और विचारों को आश्रय देता है वह सभी मनुष्यों में कम अथवा अधिक पाए जाते हैं। ऐसा न होता तो साहित्य का प्रभाव इतना सर्वव्यापी न होता और कुछ थोड़े मनुष्यों तक परिमित रहता। इन भावों कल्पनाओं और प्रेरणाओं को रचनात्मक रूप देने की योग्यता अवश्य परिमित है। लेकिन इतनी परिमित भी नहीं है,

जितना समझा जाता है। प्रोत्साहन की कमी के कारण बहुत से मनुष्य जिनमे यह योग्यता मौजूद है, उसको प्रगट करने मे अशक्त है। उर्दू और हिन्दी इसके स्वय साक्षी है। यद्यपि उर्दू और हिन्दी मे कविता कम से कम चार पाच सौ बरस पहले से हो रही है लेकिन दोनो भाषाओ मे गिलक्राइस्ट के समय से पहले जो गद्य मौजूद था वह कदापि ऐसा नही था कि साहित्यिक कहला सके। परन्तु गिलक्राइस्ट का आश्रय पाकर पाच सात बरस मे वह गद्य उत्पन्न हुआ जिस पर हमे गर्व है। उसके प्रयत्नो से लल्लू लाल, सदल मिश्र, लुत्फ अली वेग, मीर शेरअली अफसोस, मीर अम्मन देहलवी, सैयद हैदरवख्श, हैदरी जैसे साहित्य कार कलकत्ते मे एकत्र हुए। [27]

यदि आजकल ऐसी सस्था हो जिसके सदस्यो को साहित्य की आवश्यकताओ का पूर्ण अनुभव हो और जो उसकी उन्नति की यथार्थ कल्पना कर सके जिनके आदर्श एक हो, जिनकी रूचि निर्दोष और दृष्टि विस्तृत हो, जिनके ह्रदय साहित्यिक तथा अन्य पक्षपातो से दूर हो, और कला और कलाकारो के लिए सहानुभूति से भरे हो, जो साहित्य सेवा के लिए शुद्ध भाव से तत्पर हो, साथ ही साथ जिनको साहित्य के प्रचार के लिए पर्याप्त धन प्राप्त हो। [28]

इन्ही सदप्रयासो का प्रतिफल हिन्दुस्तानी एकेडेमी की स्थापना के रूप मे हुआ। इस दिशा मे पहला निश्चित प्रस्ताव वाराणसी के स्वर्गीय यज्ञ नारायण उपाध्याय ने सन् 1925 के दिसम्बर मे प्रान्तीय धारा सभा मे रखा। उस प्रस्ताव मे माग की गई थी कि ससार के उत्कृष्ठ साहित्य का हिन्दी और उर्दू अनुवाद प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जाए। उन्होने कहा कि सस्था का उद्देश्य यह होना चाहिए कि प्रान्तीय भाषा मे वह आधुनिक विज्ञान तथा ज्ञान के विविध अगो पर उपयोगी पुस्तके के अनुवाद उपलब्ध करे। उन्होने शासन से यह भी माग की कि वह इस कार्य के लिए एक लाख रुपया वार्षिक दे। इस प्रस्ताव को धारा सभा ने एक मत से स्वीकार किया। शासन की ओर से शिक्षामत्री राय राजेश्वर वली ने बताया कि इस प्रकार का विचार उनके मन मे उठ चुका है और उन्होने कुछ सज्जनो से विचार विमर्श भी किया है।

उन्होने प्रस्तावक को आश्वासन दिलाया कि योजना का व्यवहारिक पक्ष शासन के विचाराधीन है और उसे शीघ्र ही कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया जाएगा।[29]

अप्रैल 1926 मे स्वर्गीय हाफिज हिदायत हुसैन ने प्रान्तीय सभा मे एक और प्रस्ताव रखा जिसमे हिन्दी और उर्दू साहित्य की वृद्धि के उद्देश्य से शासन से 'हिन्दुस्तनी एकेडेमी' नाम की एक सस्था के लिए कहा गया था। पूर्व प्रस्ताव की अपेक्षा इसका कार्यक्षेत्र विस्तृत था। इसके अर्न्तगत हिन्दी उर्दू के पुराने साहित्य के सम्पादित पाठो तथा सदर्भ ग्रथो और वैज्ञानिक पर्याय कोशो का आयोजन, उच्च कोटि की साहित्यिक तथा वैज्ञानिक रचनाओ को पुरस्कृत करना और लेखको को आर्थिक सहायता देना भी था।[30]

शिक्षा मत्री के प्रयासो से इस सस्था के लिए 25 हजार रु की राशि पहले ही रख दी गई थी। शासन ने 22 जनवरी, 1927 को हिन्दुस्तानी एकेडेमी की स्थापना के विषय मे अपना निश्चय प्रकाशित किया।[31]

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का उद्घाटन मार्च 29, 1927 को तत्कालीन प्रान्तीय गवर्नर 'सर विलियम मैरिस' द्वारा हुआ। इस सस्था के निर्माण मे शिक्षामत्री राय राजेश्वर बली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। [32]

हिन्दुस्तानी एकेडमी का उद्देश्य प्रारम्भ से लेकर सन् 1957 तक हिन्दी और उर्दू साहित्य की रक्षा वृद्धि तथा उन्नति करना रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए– (i) भिन्न–भिन्न विषयो की उच्च कोटि की पुस्तको पर पुरस्कार देने, (ii) पारिश्रमिक देकर या अन्यथा दूसरी भाषाओ के ग्रथो के अनुवाद प्रकाशित करने, (iii) विश्वविद्यालयो तथा अन्य साहित्यिक सस्थाओ को सहायता देकर मौलिक साहित्य या अनुवादो को प्रकाशित करने के लिए उत्साहित करने, (iv) प्रसिद्ध विद्वानो तथा लेखको को एकेडेमी का अधिसदस्य चुनने, (v) एकेडेमी के हितैषियो को सम्मानित सदस्य चुनने, (vi) पुस्तकालय की स्थापना और सचालन करने, (vii) प्रतिष्ठित विद्वानो के व्याख्यानो का प्रबध करने, (viii) ऊपर कहे गये उद्देश्यो की सिद्ध के लिए ओर जो उपाय आवश्यक हो उन्हे व्यवहार मे लाने का प्रयत्न किया जाए।[33]

एकेडेमी ने उक्त उद्देश्यो को ध्यान मे रखकर भारतीय साहित्य के विकास के कार्य करना आरम्भ किया। इसका प्रथम अध्यक्ष सर तेजबहादुर सप्रू और प्रथम सचिव डॉ ताराचद को बनाया गया।[34] दोनो ही विद्वानो ने तथा अन्य परवर्ती विद्वानो ने साहित्य के विकास के लिए व्याख्यान मालाओ, पुरस्कार, प्रकाशन, आयोजन, और सम्मेलनो का सहारा, लिया। व्याख्यान मालाओ मे देश के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानो को आमत्रित किया गया। मौलाना अब्दुल यूसुफ अली, गौरी शकर हीराचद ओझा, मौलाना सैयद सुलेमान नदवी, डॉ तारा चद, डॉ जाकिर हुसैन, पद्मसिह शर्मा, राहुल साकृत्यायन, बाबू राम सक्सेना, वासुदेव शरण अग्रवाल, फादर कामिल बुल्के, प्रो देवेन्द्र नाथ शर्मा, डा राजेन्द्र प्रसाद के व्याख्यान उल्लेखनीय है।[35]

पुरसकारो के माध्यम से एकेडेमी ने अनेक साहित्यकारो को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया। एकेडेमी का पुरस्कार प्राप्त करने वालो मे प्रमुख रहे हैं। मुशी प्रेमचद, जगन्नाथ दास रत्नाकर, मौलाना सैय्यद अली नदवी, बाबू गुलाब राय, राम नरेश त्रिपाठी, रामचद्र शुक्ल प्रमुख रहे। [36]

एकेडेमी ने भाषा एव साहित्य के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य अपने प्रकाशनो के माध्यम से किया। एकेडमी के प्राय सभी प्रकाशनों को भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे सम्मान मिला है एकेडेमी ने काव्य, नाटक, साहित्यिक समालोचना, जीवनी, पत्र साहित्य, भाषा शास्त्र, तथा इतिहास एव विज्ञान विषयो सम्बन्धी ग्रथो को भी प्रकाशित किया है। वेलि किसन रूक्मणरी, सतसई सटतक (स श्याम सुन्दरदास) रामचरित मानस (स माताप्रसाद गुप्त) मेधावी (रागेय राघव) अमृत की खोज (डॉ राम कुमार वर्मा) तुलसी ग्रथावली, जायसी ग्रथावली (स माता प्रसाद गुप्त) उर्दू काव्य की एक नई धारा (उपेन्द्र नाथ अश्क) कवि रहस्य (गगा नाथ झा) साहित्य की मान्यताए (भगवती चरण वर्मा) रामकथा और तुलसी दास (फादर कामिल वुल्के) जैसे साहित्यिक ग्रथो को प्रकाशित किया है। आगरा जिले की बोली, हिन्दी भाषा और लिपि (धीरेन्द्र वर्मा) दक्खिनी हिन्दी (बाबू राम सक्सैना) ब्रजभाषा (धीरेन्द्र वर्मा) हिन्दी उर्दू

और हिन्दुस्तानी (पद्मसिह शर्मा) जैसे भाषा शास्त्र सम्बधी ग्रथो को हिन्दुस्तानी एकेडमी ने प्रकाशित किया है।

अनेक मूल्यवान ग्रथो के प्रकाशन के साथ–साथ हिन्दुस्तानी नामक त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन जो 1931 से प्रारम्भ हुआ और 1948 तक नियमित चला। 1948 मे आर्थिक कठिनाइयो के कारण पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पडा। 1958 मे पत्रिका का प्रकाशन पुन आरम्भ हुआ जो वर्तमान मे जारी है। हिन्दुस्तानी के अब तक सूर, प्रेम चद, नाट्य समीक्षा, लोक साहित्य, भाषा तथा लोकतत्र विशेषाक प्रकाशित हुए है जिनका विशेष महत्व है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने स्वतत्रता के पहले और बाद मे हिन्दी–उर्दू के साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान मे राष्ट्र भाषा की सर्वागीण उन्नति के लिए योजना बद्ध होकर कार्य करना अत्यन्त आवश्यक है। देश की राष्ट्र की भाषा को विश्व की प्रमुख भाषाओ के समकक्ष विठाना निश्चय ही एक पवित्र सकल्प है, किन्तु देश की प्रतिभा राष्ट्र भाषा के माध्यम से उत्तरोत्तर विकास मान होती रहे यह स्वय ही एक महत कार्य है। हिन्दुस्तानी एकेडेमी इस दिशा मे प्रयत्नशील है।

सुकवि समाज (1930) – सन् 1920–30 का दशक इलाहाबाद के साहित्य मे महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के बाहर साहित्य के उत्थान के लिए प्रयत्न किए जा रहे थे। इस समय इलाहाबाद मे कवि सम्मेलनो एव मुशायरो की धूम रहती।[38] पद्मकात मालवीय भी इस समय तक एक साहित्यकार के रूप मे प्रतिष्ठित हो चुके थे। उनकी रचनाए सरस्वती, चाद आदि पत्रिकाओ मे नियमित छप रही थी। सन् 1929 के सरस्वती अक मे उनकी कविता सुख–दुख छपी जिससे विश्वविद्यालय के बाहर के साहित्यकारो मे उनका स्थान महत्वपूर्ण माना जाने लगा।[39]

पद्मकात मालवीय को ऐसी सस्था की आवश्यकता महसूस हुई जिसमे वि[illegible] एव विश्वविद्यालय से बाहर दोनो जगह के व्यक्ति सम्मिलित हो, और

विचार गोष्ठियो के माध्यम से दोनो मे परस्पर तालमेल हो तथा साहित्य के उत्थान के लिए प्रयत्न किए जाए। पद्मकात मालवीय के सद्प्रयासो से 'सुकवि समाज' की स्थापना की गई। इसमे इलाहाबाद विश्वविद्यालय एव इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बाहर दोनो जगह के व्यक्तियो को सम्मिलित किया गया। महादेवी वर्मा, पद्म कात मालवीय और डा राम कुमार वर्मा को इसका सचिव बनाया गया।[40]

सुकवि समाज की पाक्षिक बैठके होती थीं इसका कार्यालय डॉ राम कुमार वर्मा का घर बनाया गया।[41] सुकवि समाज का प्रमुख उद्देश्य था कवि एव साहित्यकारो को एक मच पर लाया जाए। युवा कवियो को प्रोत्साहित किया जाए, साहित्य, समाज एव सस्कृति पर नियमित चर्चा की जाए। सुकवि समाज की नियमित बैठके होती, साहित्य के विभिन्न स्वरूपो पर चर्चाए होती, इसके माध्यम से युवा कवि महादेवी वर्मा, और डॉ रामकुमार वर्मा जैसे साहित्यकारो का सानिध्य प्राप्त करते। इलाहाबाद के साहित्यिक उत्थान मे इस सस्था ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दी लेखक सघ (1935) – 1935 मे साहित्यिक क्षेत्र मे निराला, महादेवी, पत जैसे साहित्यकार साहित्य साधना मे रत थे किन्तु लेखको का कोई मच दिखाई नही देता। सत्य जीवन वर्मा ने इस दिशा मे प्रयास किया और 'हिन्दी लेखक सघ' नामक सस्था बनाई।[42]

यह सस्था उच्च साहित्यिक आदर्शो से ओत प्रोत थी। इसने साहित्य के उत्थान के लिए अपने पाच उद्देश्य रखे –

1. वर्तमान तथा सामयिक साहित्य की श्री वृद्धि तथा उसकी प्रगति का सचालन करना।

2. हिन्दी साहित्य सेवियो तथा लेखको के हितो की रक्षा करना, उनका उचित सम्मान करना तथा उन्हे हर सम्भव सहायता पहुचाना।

3. हिन्दी साहित्य सेवियो मे भ्रातृ भाव तथा परस्पर सहयोग का भाव उत्पन्न करना।

4 हिन्दी लेखको को अपनी कला के सीखने तथा उन्हे अपने व्यवस्था मे कुशलता और सफलता प्राप्त करने मे सब प्रकार की सहायता पहुचाना।

5 हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य, हिन्दी पाठक तथा शिक्षित समुदाय के हित तथा देश और जाति के हित की कामना करते हुए ऐसे प्रयत्न करना जिनसे उन्हे लेखन कला द्वारा लाभ पहुच सके।[43]

हिन्दी लेखक सघ ने उक्त आदर्शो से प्रेरित होकर साहित्य के उत्थान के लिए कार्य करना आरम्भ किया। सत्य जीवन वर्मा ने अनेक लेखको एव साहित्यकारो को अपने सगठन से जोडा। हिन्दी लेखको के उचित पारितोषिक [illegible] से उचित रायल्टी आदि के मसलो पर नियमित विचार विमर्श होता। अच्छे लेखको को प्रोत्साहित करने के लिए सस्था द्वारा समय–समय पर उनका सम्मान किया जाता।[44]

हिन्दी लेखक सघ ने प्रकाशन के क्षेत्र मे भी कार्य किया। सस्था द्वारा एक मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया गया जिसका नाम रखा गया 'लेखक'। लेखक मे हिन्दी लेखक सघ के सदस्यो की रचनाओ के साथ–साथ अन्य वरिष्ठ साहित्यकारो की रचनाओ को भी प्रकाशित किया जाता। [45]

कुछ समय तक इस सगठन ने साहित्यिक उत्थान के लिए प्रयास किया किन्तु समय क्रम के अनुसार 1940 तक आते–आते इसका कार्य कुछ शिथिल पड गया। आजादी का आदोलन, सघर्ष की अवस्था मे यह सस्था ज्यादा दिन तक न चल सकी और समय के गर्त मे विलीन हो गई।

भारतीय हिन्दी परिषद (1942) – भारतीय हिन्दी परिषद् की स्थापना इलाहाबाद विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ धीरेन्द्र वर्मा की सुनिश्चित तथा सुसगठित योजना के फलस्वरूप हुई एव संगठन 3–4 अप्रैल 1942 को मिश्र बधुओ की अध्यक्षता मे हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ अमर नाथ झा ने 4 अप्रैल 1942 को हिन्दी विभाग मे इसका सस्था के रूप मे उद्घाटन किया।[46]

इस समय हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए अनेक संस्थाएं स्थापित हो चुकी थीं जिनका स्वतंत्र असितत्व था। जिन्होंने हिन्दी के प्रचार–प्रसार को व्यापक रूप से आगे बढ़ाया किन्तु भारतीय हिन्दी परिषद् का योगदान भी कम नहीं है। सन् 1942 में जब परिषद् का संगठन किया गया तो कुल मिलाकर इसके सदस्यों की संख्या 40 थी जिनमें 13 मान्य सदस्य थे, 15 विश्वविद्यालयों के हिन्दी अध्यापक तथा 12 अन्य हिन्दी विद्वान। परिषद् का प्रथम अधिवेशन रविवार 5 अप्रैल 1942 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुआ।[47]

भारतीय हिन्दी परिषद् ने 'भाषा साहित्य तथा संस्कृति के अध्ययन तथा खोज को प्रोत्साहित करना तथा उसकी प्रगति का विशेष रूप से निरीक्षण करना' उद्देश्य बनाया।[48] उक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संस्था ने 'विचार विनिमय, प्रकाशन, विद्वानों के सहयोग का आयोजन को अपना माध्यम बनाया।

संस्था का संगठन त्रिस्तरीय था, साधारण सभा – जिसमें विश्वविद्यालयों के हिन्दी अध्यापक आजीवन सदस्य तथा साधारण सदस्य होते थे। अन्य विषयों के अध्यापक जिन्हें हिन्दी से प्रेम हो वह भी इसके सदस्य हो सकते थे। तथा संस्था को 500 रु. या अधिक सहायता देने वाले व्यक्ति इसके प्रतिष्ठित सदस्य होते थे। सदस्यों के अतरिक्त कार्य समिति होती थी जिसके साथ एक प्रतिनिधि मण्डल होता था, सभापति, उप सभापति, कोषाध्यक्ष, प्रधानमंत्री, तथा साहित्य मंत्री प्रमुख पदाधिकारी थे।[49]

परिषद् ने हिन्दी साहित्य के संकीर्ण वातावरण से ऊपर उठकर भाषा तथा साहित्य के सम्बद्ध मानवीय सम्पर्क सामाजिक चेतना तथा राष्ट्रीय मनोवेश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भाषा, साहित्य तथा संस्कृति की कार्य शक्ति को समृद्ध करने वालों साधकों को एक मंच प्रदान किया। संस्था के कार्य क्षेत्र की व्यापकता को देखकर संस्था को रजिस्टर्ड किया गया।[50]

भारतीय हिन्दी परिषद् के मान्य सदस्यों में इस समय तक अनेक स्वनामधन्य व्यक्ति जुड़ गये, महात्मागांधी, मदन मोहन मालवीय, डॉ. भगवान दास,

बाबू शिव प्रसाद गुप्त, श्याम विहारी मिश्र, श्याम सुन्दर दास, गौरी शकर हीरा चद ओझा, शुकदेव बिहारी मिश्र, अयोध्या सिह उपाध्याय 'हरिऔध', जगन्नाथ प्रसाद भानु, नलिनी मोहन सान्याल, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, पुरूषोत्तम दास टण्डन, मैथिलीशरण गुप्त, डॉ सम्पूर्णानद, आचार्य शिवपूजन सहाय, सेठ गोविन्द दास, बाबूराम सक्सेना इसके मान्य सदस्य रहे।

परिषद् के विभिन्न अधिवेशनो मे डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल, देवी प्रसाद शुक्ल, कमला कात वर्मा, सुमित्रानदन पत, प्रो0 टर्नर, बाबू गुलाब राय, राम नरेश त्रिपाठी, रामधारी सिह दिनकर, रविशकर शुक्ल, राहुल साकृत्यायन, जैसे अनेक विद्वानो ने समय समय पर भाग लिया। [51]

अप्रैल 1942 से मार्च 1946 तक डॉ धीरेन्द्र वर्मा सभापति, शुकदेव विहारी मिश्र उपसभापति, डॉ राम कुमार वर्मा प्रधान मत्री, डॉ माता प्रसाद गुप्त साहित्य मत्री, तथा बाबू राम सक्सेना इसके कोषाध्यक्ष रहे। 1946–1947 इसके सभापति प केशव प्रसाद मिश्र, उप सभापति धीरेन्द्र वर्मा, प्रधनमत्री बाबू राम सक्सेना, साहित्य मत्री डॉ राम कुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ सत्यप्रकाश रहे। आजादी के बाद 1947 से 1950 तक सभापति डा धीरेन्द्र वर्मा, उपसभापति दीन दयाल गुप्त, प्रधानमत्री माता प्रसाद गुप्त, साहित्य मत्री लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, कोषाध्यक्ष सुश्री चद्रवती त्रिपाठी रहीं।[52]

हिन्दी का भाषागत साहित्यिक उन्नयन सस्था का प्रमुख कार्य रहा है। तथा सस्था ने उच्च स्तरीय अध्ययन अध्यापन एव अन्वेषण को प्रोत्साहित किया है। भाषा के सदर्भ मे भारतीय हिन्दी परषिद् ने अपने प्रथम अधिवेशन मे (अप्रेल 5, 1943) भाषा के आतरिक गठन, प्रवेश निर्धारण, पारिभाषिक शब्द निर्माण कोष व्याकरणिक एकरूपता आदि को सदर्भ मे रखकर प्रमुखता से उठाया। पारिभाषिक शब्द निर्माण के लिए परिषद् ने एक समिति का गठन किया।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की सन् 1942–43 मे कार्यान्वित यह योजना सम्भवत हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्रथम वैज्ञानिक योजना है। पारिभाषिक

शब्दावली निर्माण का यह कार्य अपनी दिशा मे प्रथक ढग से क्रियान्वित हुआ और इस योजना के ठीक समानान्तर उसके दूसरे वर्ष अर्थात सन् 1944 मे कोश योजना को व्यवस्थित करने का प्रस्ताव अधिवेशन मे रखा गया। भारतीय हिन्दी परिषद् के मुख्य पत्र 'हिन्दी अनुशीलन मे' अग्रेजी हिन्दी वैज्ञानिक शब्द कोश का उदाहरण प्रस्तुत किया गया।[53] 1948 मे इसका प्रथम खण्ड 30,000 शब्दो से सम्बद्ध प्रकाशित हुआ।

कोश एव शब्दावली निर्माण सबधी योजना के साथ–साथ भारतीय हिन्दी परिषद् ने विश्वविद्यालयो मे हिन्दी माध्यम के पाठ्यक्रम योजनाओ पर कई प्रकार का सुझाव प्रस्तुत किया। सन् 1942–43 मे प्रयाग अधिवेशन मे इस समस्या को एक प्रस्ताव के रूप मे रखकर भारतीय हिन्दी परिषद् ने इस दिशा मे व्यवहारिक तथा ठोस निर्णय लेने का निश्चय किया। सन् 1943 मे भारतीय हिन्दी परिषद् ने इस कार्य के लिए एक समिति स्थापित की किन्तु समिति शीघ्र ही कोई निर्णय नहीं दे सकी। उच्च स्तरीय हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की समस्या को नियोजित एव सयमित करने की दृष्टि से डॉ माता प्रसाद गुप्त ने हिन्दी अनुशीलन मे विस्तृत लेख प्रस्तुत किया।[54]

सन् 1942–43 के अधिवेशन मे रखे गये सुझावो मे जिन्हे परिषद् ने कार्यान्वित करना चाहा था– एक प्रमुख सुझाव यह भी था कि हिन्दी भाषा मे आदर्शीकरण हो। इस आदर्शीकरण का अर्थ था शब्दभण्डार, शब्दकोश, अक्षर विन्यास, लिपि, व्याकरण, उच्चारण, वर्तनी आदि को एक व्यवस्थित रूप प्रदान करना ताकि हिन्दी भाषा परिष्कृत, मधुर, सभ्य तथा सर्वसाधारण के लिए एक समान हो।

राष्ट्र भाषा तथा राजभाषा के सम्बन्ध मे भी भारतीय हिन्दी परिषद् का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसने भारत की केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकार को इसकी सम्भावनाओ और जटिलताओ की ओर उकृष्ट किया साथ ही वह उनकी एतद विषयक उदासीनता तथा उपेक्षा दृष्टि का भी खुलकर विरोध करने मे कभी भी नहीं हिचका। सन् 1942–43 मे सर्वप्रथम 'भारत सरकार के पास परिषद् ने अपना प्रथम प्रस्ताव भेजा था कि सरकार के प्रत्येक हिन्दी सम्बन्धी प्रकाशन को अपने देश की

हिन्दी या अन्य सस्थाओ को भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए। इसी प्रस्ताव के समय 'सैन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड आफ एजूकेशन' के इस निर्णय का इसने खुलकर विरोध किया कि भारतीय वैज्ञानिक शब्दावली मे अग्रेजी पारिभाषिक शब्दावली का प्राधान्य रहे। सन् 1948–49 मे सयुक्त प्रदेश सरकार को इसने हिन्दी को राज भाषा तथा देवनागरी लिपि को राज लिपि मानने के लिए बधाई ही नही प्रेषित की अपितु विहार, मध्य प्रात विन्ध्य प्रदेश आदि राज्यो के पास अनुरोध पत्र भेजा कि हिन्दी को राज भाषा तथा देवनागरी को राज लिपि के रूप मे वे भी स्वीकार करे। सन् 1949–50 मे परिषद् ने केन्द्रीय सरकार से इस विषय मे अपना प्रस्ताव रखा कि शीघ्र ही, वह घोषणा करे कि स्वतत्र भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी और राष्ट्र लिपि देवनागरी हो साथ ही वह इसकी व्यवस्था भी कराए जिससे राष्ट्र भाषा हिन्दी एव राष्ट्रलिपि देव नागरी मे समस्त केन्द्रीय तथा प्रान्तीय कार्य किए जा सके। इसी के साथ इसी वर्ष उसका हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तो से यह भी अनुरोध रहा कि हिन्दी के प्रसिद्ध दिवगत कवियो तथा लेखको के स्मृति सरक्षण को ध्यान मे रखते हुए उनसे सम्बन्धित विशेष स्थानो पर शीघ्र ही समुचित स्मारक निर्मित कराए तथा उनसे सबधित उपलब्ध सामग्रियो का सग्रहालय भी उपस्थित करे।[55] सन् 1949–50 के अधिवेशन के समय ही राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन की अध्यक्षता मे एक विशाल गोष्ठी का आयोजन 'एशिया की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा हिन्दी होनी चाहिए' विषय पर हुआ और इस प्रश्न पर अनेक सारगर्भित भाषण तथा सुझाव प्रकाश मे आए।[56]

हिन्दी साहित्य, भाषा, उच्च्य स्तरीय अध्ययन–अध्यापन, राजभाषा आदि से सम्बद्ध समस्याओ के अतिरिक्त भी भारतीय हिन्दी परिषद् ने अनेक ऐसे व्यावहारिक सुझाव को हिन्दी प्रेमियो तथा विद्वानो तथा विद्वानो के बीच रखा जो भाषा के आतरिक गठन तथा समृद्धि के लिए नितात अनिवार्य है।[57] इस रूप मे जनपदीय बोलियो 'हिन्दी शोध' तथा हस्तालिखित ग्रथो की समस्याओ के प्रश्न महत्वपूर्ण है।

सन् 1948–49 मे अधिवेशन मे सर्वप्रथम डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने 'हिन्दी प्रदेश के जनपदो (बोली के प्रदेश) का भाषा तथा सहित्य सबधी केन्द्रीयकरण श्रेयस्कर है

अथवा विकेन्द्रकरण विषय का उद्घाटन किया। इस अधिवेशन मे विद्वानो ने अपने–अपने मत रखे। राहुल साकृत्यायन, धीरेन्द्र वर्मा, कमलाकात वर्मा, राम कुमार वर्मा, बाबू राम सक्सेना ने केन्द्रीयकरण का समर्थन किया। इसके विपरीत प्रभाकर माचवे, विद्यानिवास, उदय नारायण तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने विकेन्द्रीकरण का। सुमित्रा नदन पत ने केन्द्रीयकरण तथा विकेन्द्रीकरण के बीच का मार्ग निकाला। अतत इस महत्वपूर्ण विचार गोष्ठी मे अन्ततया यह निश्चित किया गया कि शिक्षा की व्यवहारिक आवश्यकता के लिए जनपदीय बोलियो का आधार लेना अनिवार्य है। यह उचित है कि उच्च्च स्तरीय शिक्षा के लिए जनपदीय बोलियो को आधार नही बनाया जा सकता, फिर भी साक्षरता के लिए इनका प्रयोग नितात अनिवार्य है।

भारतीय हिन्दी परिषद् की दृष्टि सबसे अधिक उच्च्च स्तरीय अध्ययन अध्यापन की ओर उसमे भी अनुसधान की कही अधिक केन्द्रित रही है। परिषद् ने अपने मुख्य पत्र 'हिन्दी अनुशीलन' के प्रथम अक के सम्पादकीय मे अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए बताया है कि इसका मुख्य लक्ष्य "हिन्दी के समस्त अगो–भाषा, साहित्य तथा सस्कृति के अध्ययन तथा खोज को प्रोत्साहित करना और उसकी प्रगति का विशेष रूप से निरीक्षण करना है।[58]

भारतीय हिन्दी परिषद् ने अपने जन्म काल से ही साहित्य के उन्नयन, शोध, एव अन्वेषण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिषद् ने सन् 1946-47 के एक विशेष प्रस्ताव द्वारा साहित्य के प्रमाणिक इतिहास के लेखन के प्रति सचेष्टा प्रकट की थी और इस तथ्य का अनुमोदन अनेक हिन्दी विद्वानो द्वारा किया गया कि साहित्य का प्रमाणिक इतिहास निर्माण कराने की योजना वह स्वय स्वीकार करे।

परिषद् ने आजादी के पहले और बाद साहित्य क्रे विकास मे महत्वपर्णू भूमिका निभाई। जो योजनाए आजादी के पहले परिषद् ने बनाई वह बाद मे कार्यान्वित हुई। हिन्दी अनुशीनल भी अपने 56 वर्षो के इतिहास मे अनेक साहित्यिक उपलब्धियो से हिन्दी जगत को परिचित कराने मे समर्थ रहा। हिन्दी अनुशीलन ने

'भाषा विशेषाक' धीरेन्द्र वर्मा विशेषाक, शोध विशेषाक से साहित्य के इतिहास मे महत्वपूर्ण जगह बनाई है और आज भी यह अपने वैभव के साथ प्रकाशित हो रहा है।

नि सन्देह परिषद् ने हिन्दी साहित्य की अमूल्य सेवा की है और इसी प्रकार अपनी योजनाओ मे सक्रिय रहा हिन्दी साहित्य की ओर भी अमूल्य सेवा उसके द्वारा सम्पादित हो सकेगी। हिन्दी भाषा साहित्य तथा भारतीय सस्कृति के जिन महानतम सूत्रो को इसने योजनाबद्ध किया, इतिहास मे उसकी विशिष्ट स्थिति बन गई और आशा है साहित्य के इतिहास मे इसके कार्यो को विशेष स्थान प्राप्त होगा।

परिमल (1945) – इलाहाबाद मे 1936 से एक गुट उभरा जिसने अपने आपको प्रगतिशील लेखक सघ के रूप मे सगठित किया। सघ की मान्यताओ मे रचनाकार का पक्ष पहले से दिया रहता था रचनाकार को उस पर चलना होता था।[59] प्रगतिवाद का मतलब हो गया था मार्क्सवादी सिद्धातो का अन्धानुकरण। कवि अथवा लेखक ऐतिहासिक विकास क्रम और भौतिक द्वन्द्ववाद से परिचालित होता था। किन्तु नवलेखन की ओर प्रवृत्त होने वाले रचनाकारो ने इस प्रकार की वैचारिक प्रतिबद्धता को नहीं स्वीकार किया। 12 दिसम्बर 1945 को परिमल की नींव डाली गई। विशन नारायण कपूर, गिरिधर गोपाल, सर्वेश्वर सक्सेना, विजय देव नारायण साही, केशव चन्द्र वर्मा, लक्ष्मी कात वर्मा आदि इसके सस्थापक सदस्य थे।[60]

परिमल के रचनाकार प्रगतिशील सघ की विचार धारा के विपरीत मानते थे कि रचनाकार अपना पक्ष स्वय बनाए, वह इतना समर्थ है कि उसे बने बनाए पहले से दिए हुए पक्ष पर चलने की जरूरत नही है। वह चाहे तुलसीदास हो, चाहे निराला हो, चाहे पत हो, चाहे महादेवी हो, रचना मे अपना पक्ष रखते है। [61]

इस सस्था के सचालन मे सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, और लक्ष्मीकात वर्मा की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी इसकी गोष्ठियो मे ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये जिससे सम्पूर्ण हिन्दी लेखन प्रभावित हुआ। कई गोष्ठियो मे ऐतिहासिक महत्व की रचनाए पढी गई। इस सस्था के माध्यम से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धर्मवीर भारती, रघुवश, रामस्वरूप चतुर्वेदी, जगदीश गुप्त, गिरिधर गोपाल, लक्ष्मीकात वर्मा, विजय

देव नारायण साही, केशव चन्द्र वर्मा, मलयज, विपिन अग्रवाल, उमाकात मालवीय, श्री राम वर्मा आदि दो पीढियो के रचनाकार उभर कर सामने आए।[62] परिमल के रचनाकार या तो कवि थे अथवा समीक्षक। केवल धर्मवीर भारती, और लक्ष्मीकात वर्मा कथाकार भी थे। वैसे इनका कविरूप ही प्रबल रहा।[63]

इस सस्था ने प्रयाग मे ऐसे वातावरण का स्रजन किया कि इसके सदस्यो द्वारा सम्पादित अथवा इसके प्रभाव क्षेत्र मे 1950 से 1955 के बीच, नये पत्ते, नयी कविता, निकष और सन् 1963–64 मे क ख ग जैसी नव लेखन को समर्पित पत्रिकाओ का प्रकाशन किया। प्रतीक और नई कहानी भी यहीं से प्रकाशित हुई। इसके द्वारा 'आस्था' नाम की एक वुलेटिन भी प्रकाशित होती थी। परिमल के प्रभाव से प्रयाग नव लेखन का केन्द्र बन गया। [64]

किन्तु समय क्रम के साथ यह सस्था ज्यादा दिन तक न चल सकी और 1970 तक आते–आते स्थगित हो गई। इसके अतिम सयोजक लक्ष्मीकात वर्मा थे। सस्था ने लगभग 25 वर्ष साहित्य के विकास मे जो भूमिका निभाई वह महत्व पूर्ण है।

साहित्यकार ससद (1946) – सन् 1946 मे प्रयाग की पावन भूमि पर एक और साहित्यिक सस्था का उदय हुआ। महर्षि महादेवी वर्मा ने राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकात त्रिपाठी निराला के सहयोग से साहित्यकार ससद की नींव रखी। श्री माखन लाल चतुर्वेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, इलाचन्द्र जोशी, सियाशरण गुप्त, राय कृष्ण दास, गुलाब राय एव भदत आनन्द कौसल्यायन आदि अन्य साहित्यकार इसके सस्थापक सदस्यो मे से एक थे।[65]

साहित्यकार ससद का प्रमुख उद्देश्य था कि यहा साहित्यकार आए और यहा रूककर साहित्य स्रजना करे तथा देश मे हो रहीं साहित्यिक गतिविधियो पर नजर रखे। मार्च 1947 मे साहित्यकार ससद का भवन इलाहाबाद से 4 किमी दूर रसूलाबाद मे खरीदा गया। इस भवन मे दूर दूर से साहित्यकार आते और यहा रूककर साहित्य स्रजना करते। महाप्राण निराला स्वय साहित्यकार ससद भवन मे लम्बे समय तक रहे।[66]

साहित्यकार ससद से उस समय महाप्राण निराला 'ले गगा प्रसाद पाण्डेय' जैसी कृतियो का प्रकाशन हुआ। इसके द्वारा 'साहित्यकार' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता था जिसका सपादन महादेवी वर्मा तथा इलाचद जोशी सयुक्त रूप से करते थे।[67]

ससद ने अपने जन्मकाल से 1955 तक उत्तरोत्तर प्रगति की। 1950 मे दिनकर का साहित्यकार ससद ने सम्मान किया जिसमे भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने हिस्सा लिया। साहित्यकार ससद के विकास के भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री प जवाहर लाल नेहरू स्वय चिंतित थे वह चाहते थे कि प्रकाशक जो लेखको का शोषण करते है वह बद हो और साहित्यकार ससद जैसी सस्थाओ को प्रोत्साहित किया जाए। उन्होने स्वय साहित्यकार ससद के लिए 1000/– रु का चदा दिया था तथा तत्कालीन शिक्षामत्री अबुल कलाम आजाद को सस्था के विकास के लिए ध्यान देने के लिए पत्र लिखा था।[68]

1955 के पश्चात साहित्य ससद के कार्य मे शिथिलता आ गई क्योकि धीरे–धीरे इसके प्रतिनिधि दिवगत होते गये। 1987 से सस्था पुर्नजीवित हुई है और इसका कार्य धीरे–धीरे आगे बढ रहा है।

यह युग प्रयाग मे साहित्यिक उन्नति का स्वर्ण युग था उक्त सस्थाओ के साथ अन्य छोटी छोटी सस्थाओ का भी उदय हुआ। आनद मण्डल, रसिक मण्डल, साहित्य गोष्ठी, प्रगतिशील लेखक सघ आदि इसी प्रकार की साहित्यिक सस्थाए थी जो की सम्मेलनो एव मुशायरो का आयोजन करती थीं। प्रयाग की उक्त साहित्यिक सस्थाओ ने साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ एव फुट नोट

1 कार्य विवरण, प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, काशी (ना प्रचा सभा), 1910 पृष्ठ 1

2 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहित्य का वह्नत इतिहास (स 2030) खण्ड 9 पृष्ठ 23

3 प्रसाद विश्वनाथ, प्रयाग का हिन्दी साहित्य, उत्तर प्रदेश, 1984 पृष्ठ 85

4 पी के मालवीय , सग्रह फाइल न XX/30, राष्ट्रीय अभिलेखागार

5 वही

6 वही

7 कार्य विवरणिका, प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन 'काशी' भाग 1, अक्टूबर 1910, पृष्ठ 3

8 वही, पृष्ठ 3

9 वही, पृष्ठ 4

10 वही, पृष्ठ 9

11 साप्ताहिक भारत, दिस 25, 1961, पी के मालवीय , सग्रह फाइल न XX/36, राष्ट्रीय अभिलेखागार

12 मालवीय और हिन्दी, पी के मालवीय , सग्रह फाइल न XX/67, राष्ट्रीय अभिलेखागार

13 सम्मेलन एक परिचय (स 2056–सन् 2000) प्रका हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृष्ठ 3

14 मेहता नरेश , हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, खण्ड 1, प्रका हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 1996 पृष्ठ 59–60

15 वही, पृष्ठ 293

16 वही, पृष्ठ 66

17 मिश्र विभूति , (सपा) सम्मेलन पुस्तिका, 1997, पृष्ठ 10–11

18 मेहता नरेश , हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, खण्ड 1, 1996 पृष्ठ 67

19 वही, पृष्ठ 67

20 मिश्र विभूति , (सपा) सम्मेलन पुस्तिका, 1997, पृष्ठ 10–17

21 मिश्र विभूति , सम्मेलन के प्रकाशन, (2000) पृष्ठ 4–10

22 मेहता नरेश , हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, खण्ड 1, 1996 पृष्ठ 293–294 और भी देखिए – सम्मेलन एक परिचय 2000, पृष्ठ 8

23 सम्मेलन एक परिचय (2056–2000) प्रकाशक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2000, पृष्ठ 8

24 मेहता नरेश , हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, खण्ड 1, 1996 पृष्ठ 298–99

25 वही, पृष्ठ 300

26 हिन्दुस्तानी (सपादकीय) भाग 1, अक 1, 1931, पृष्ठ 124

27 वही, पृष्ठ 126

28 वही, पृष्ठ 126

29 हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद परिचय वृत, प्रका हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 1992, पृष्ठ 3–4

30 वही, पृष्ठ 4

31 गजेटियर ऑफ यूनाइटेड प्रोविन्सेस डेटेड, जन 22, 1927

32 श्रीवास्तव, सालिग राम , (सपा) प्रयाग प्रदीप, प्रका हिन्दुस्तानी एकेडमी, 1937, पृष्ठ 168

33 हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद परिचय वृत, प्रका हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 1992, पृष्ठ 5

34 वही, पृष्ठ 7

35 वही, पृष्ठ 8–9

36 वही, पृष्ठ 9

37 साक्षात्कार हरिमोहन मालवीय (अध्यक्ष हिन्दुस्तानी एकेडेमी) इलाहाबाद, दिनाक 20 4 2000

38 श्रीवास्तव सालिग राम , (सपा) प्रयाग प्रदीप, प्रका हिन्दुस्तानी एकेडमी, 1937, पृष्ठ 168

39 सरस्वती, जनवरी, 1929, पृष्ठ 382

40 उत्तर प्रदेश, प्रयाग अक, प्रका सूचना एव जनसपर्क विभाग, उ प्र सरकार, 1984, पृष्ठ 85

41 वही, पृष्ठ 85

42 श्रीवास्तव सालिग राम , (सपा) प्रयाग प्रदीप, प्रका हिन्दुस्तानी एकेडमी, 1937, पृष्ठ 168

43 वही, पृष्ठ 168

44 साक्षात्कार योगेन्द्र प्रताप सिह (प्रोफेसर एव पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग इ वि वि) दिनाक 20 4 2000

45 साक्षात्कार हरिमोहन मालवीय (अध्यक्ष हिन्दुस्तानी एकेडेमी) इलाहाबाद, दिनाक 20 4 2000

46 भारतीय हिन्दी परिषद् 'रजत जयन्ती समारोह अक, दिसम्बर 1967, पृष्ठ 3

47 वही, पृष्ठ 3–4

48 वही, पृष्ठ 4

49 वही, पृष्ठ 6

50 भारतीय हिन्दी परिषद्, रजि न 136/1944–45

51 भारतीय हिन्दी परिषद् 'रजत जयन्ती समारोह अक, दिसम्बर 1967, पृष्ठ 36

52 वही, पृष्ठ 37

53 हिन्दी अनुशीलन पौष–फाल्गुन, सवत 2000, अक 4, पृष्ठ 10–14

54 हिन्दी अनुशीलन चैत्र–ज्येष्ठ, सवत 2000, अक 4, पृष्ठ 26–35

55 भारतीय हिन्दी परिषद् 'रजत जयन्ती समारोह अक, दिसम्बर 1967, पृष्ठ 13

56 वही, पृष्ठ 14

57 साक्षात्कार प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिह, दिनाक 20 4 2000

58 हिन्दी अनुशीलन अक 1 वर्ष 1, सवत 2000, पृष्ठ 3–5

59 साक्षात्कार केशव चन्द्र वर्मा, दिनाक 22 4 2000

60 उत्तर प्रदेश, प्रयाग विशेषाक, प्रका सूचना एव जन सम्पर्क विभाग, उ प्र , 1984, पृष्ठ 87

61 राम स्वरूप चतुर्वेदी का इलाहाबाद सग्रहालय मे दिया गया व्याख्यान, 1993

62 उत्तर प्रदेश, प्रयाग विशेषाक, प्रका सूचना एव जन सम्पर्क विभाग, उ प्र लखनऊ, 1984, पृष्ठ 87

63 वही, पृष्ठ 87

64 वही, पृष्ठ 87

65 साक्षात्कार प्रद्युम्न नाथ तिवारी 'करूणेश' (प्रधान मत्री साहित्यकार ससद) दिनाक 1 5 2000

66 सक्सेना सर्वेश्वर दयाल , साहित्यकार ससद की वह साझ, सगम अक 22, पृष्ठ 33

67 साक्षात्कार प्रद्युम्न नाथ तिवारी 'करूणेश' (प्रधान मत्री साहित्यकार ससद) दिनाक 1 5 2000

68 My Dear Maulana, I thınk that as a government, we should help young and promısıng wrıters more especıally ın Hındı as well as ın other natıonal languages Sometıme ago partly at my suggestıon an assocıatıon of wrıters especıally ın Hındı was formed to help themselves Thıs was called a Sahıtyakar Sansad and I thınk that Srı Maıthılı Saran Gupta was nomınated presıdent of ıt Mahadevı Varma ıs the secretary She ıs herself a well known Hındı poet I gave Rs 1000/- as donatıon to thıs assocıatıon and the presıdent gave Rs 2000/-, the U P Govt rupees 10,000/- and the Bıhar govt rupees 5000/- The object of thıs assocıatıon was to help these people ın publıshıng theır books and

For the present however, I am wrıtıng to you about thıs Sahıtayakar Sansad and I thınk that ıt ıs deservıng of our support It ıs well known and well recognızed assocıatıon of Hındı wrıters

– A letter from Pt Jawahar Lal Nahru to Maulana Azad, New Delhı, Dated May, 28, 1952, Teenmurtı Museum, New Delhı

निष्कर्ष

''दशतीर्थ सहस्राणि पष्टिकोट्य स्तथ पर

तेषा सान्निध्यम त्रैव प्रयाग परमन्तत।''

प्रयाग को तीर्थ राज कहा गया है। तीर्थराज होने के कारण इसका प्राचीन काल से ही महत्व है। तीर्थराज के साथ–साथ यह महर्षि भारद्वाज की तपोभूमि रही है।

'भरद्वाज ऋषि वसहिं प्रयागा। जिन्हे राम पद अति अनुरागा।'

भारद्वाज आश्रम शिक्षा एव साहित्य का केन्द्र था जहाँ अनेक विद्यार्थी एक साथ विद्याध्ययन करते थे। ऋषि भारद्वाज द्वारा शिक्षा, साहित्य एव सस्कृति की बहाई गई त्रिवेणी की धारा अनवरत प्रवाहित है।

आधुनिक साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे प्रारम्भ हुई। सन् 1857 की क्राति मे भारत की पराजय ने जनमानस को झकझोर कर रख दिया जिससे सम्पूर्ण भारत के साहित्यकार आत्मग्लानि से पीडित हो साहित्य सृजन की ओर अग्रसर हुए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' अम्बिकादत्त ब्यास, राधाकृष्णदास, जगन्मोहन सिह, श्रीधर पाठक, बालमुकुन्द गुप्त, आदि साहित्यकार सामने आए। इन साहित्यकारो का साहित्य मनुष्य के सुख–दु ख से पहली बार जुडा।

20वीं शताब्दी के आते–आते देश के कोने–कोने से साहित्यिक पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हो गया तथा अनेक साहित्यिक सस्थाओ का निर्माण हुआ जिसके परिणामस्वरूप दूसरी पीढी के साहित्यकार सामने आए। प्रथम पीढी के साहित्यकारो ने गद्य को सम्प्रेषण का माध्यम बनाया तो इन साहित्यकारो ने काव्य के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। नाथूराम शर्मा शकर, श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध, राय देवी प्रसाद 'पूर्ण, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, मैथिलीशरण गुप्त,

रामनरेश 'त्रिपाठी' अमीर अली मीर, कामता प्रसाद गुरू, गिरिधर शर्मा, मुकुटधर पाण्डेय आदि कवि, आम जनता से जुडा हुआ साहित्य लेकर आए।

इस साहित्यिक आन्दोलन का नेतृत्व किया उत्तर प्रदेश ने और केन्द्र बना इलाहाबाद। देश के प्रत्येक भाग से साहित्यकार यहा साहित्य साधना के लिए आना प्रारम्भ हुए। इन साहित्यकारो मे सर्वप्रथम नाम प सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला का लिया जा सकता है जो महिषादल की नौकरी छोडकर इलाहाबाद आ गये।

निराला की साहित्य साधना निराली है उन्होने काव्य, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, अर्थात् साहित्य की प्रत्येक विधा मे लेखनी चलाई। निराला की प्रथम कविता 1920 मे जन्मभूमि शीर्षक से प्रभा मासिक कानपुर से प्रकाशित हुई। तत्पश्चात साहित्य साधना का अनवरत क्रम चला जो लगभग 40 वर्ष तक चला। अनामिका (1923) परिमल (1930) गीतिका (1936) अनामिका द्वितीय (1937) तुलसीदास (1938) कुकुरमुत्ता (1942) अणिमा (1943) बेला (1943) अपरा (1946) नये पत्ते (1946) अर्चना (1950) जैसी श्रेष्ठ काव्य कृतियॉ मॉ भारती के चरणो मे अर्पित कीं।

अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, कुल्लीभाट, विल्लेसुर बकरिहा जैसे कालजयी उपन्यास लिखे। लिली एव चतुरी चमार जैसी कहानियो का सृजन किया। प्रबन्ध प्रतिमा, चावुक, चयन, सग्रह, निबध सग्रह प्रकाशित हुए। प्रबध पद्म रवीन्द्र कविता कानन् और पुरा कथा महाभारत का सृजन किया।

निराला का स्वय का जीवन कष्टो एव अभावो मे बीता जिसकी परिणति उनके साहित्य मे दिखाई देती है, निराला का जीवन आम आदमी का जीवन था और उनका साहित्य तत्कालीन समाज की मार्मिक अभिव्यक्ति है।

निराला ने साहित्य के चरम शिखर को छुआ। उनका साहित्य भूतो न भविष्यति की श्रेणी का है। उनकी कृतियो के अतिरिक्त तत्कालीन पत्र–पत्रिकाए उनकी रचनाओ को छापकर गौरव का अनुभव करती थी यही कारण है कि उनकी रचनाए सरस्वती, मतवाला, श्री शारदा, मर्यादा, चॉद, आदि पत्रिकाओ के प्रथम पृष्ठ पर रहती थी।

निराला की तरह ही सुमित्रा नदन पत कौसानी से यहा अध्ययन के लिए आए और यहा आकर साहित्य साधना मे तल्लीन हो गये। पत ने पल्लव (1926), वीणा (1927), ग्रथि (1929), गुजन (1931), युगवाणी (1939), ग्राम्या (1940), स्वर्णकिरण (1947), स्वर्णधूलि (1947), मधुज्वाल (1947) उत्तरा (1949), युगमपथ (1949), काव्य सग्रह लिखे। परी (1925), ज्योत्स्ना (1934), जिन्दगी का चौराहा (1936), अश्पृश्यता (1937), सृष्टा (1938), चौराहा (1948), शकुन्तला (1988), युगपुरूष (1948), छाया (1948) करमपुरी की रानी (1949) नाटक लिखे।

पत जी ने पानवाला, उस बार, दम्पत्ति, बन्नो, अवगुण्ठन जैसी श्रेष्ठ कहानियो की रचना की तथा 'हार' शीर्षक उपन्यास लिखा। पत जी हार को ही अपनी साहित्य साधना का श्री गणेश मानते है। पत का जीवन भौर साहित्य एक इतिहास है। उनकी रचनाए प्रकृति प्रेम एव देशप्रेम मे डूबी हुई है। 1921 मे असहयोग आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया। साहित्य के क्षेत्र मे भी उन्हे अपार सघर्ष करना पडा। पल्लव के प्रकाशन से साहित्य जगत मे उन्हे प्रतिष्ठा मिली तो कटु आलोचनाओ का सामना भी उन्हे करना पडा। प्रारम्भ मे महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पत काव्य पर कटु व्यग्य प्रहार किए किन्तु कुछ समय पश्चात उन्हे आशीर्वाद भी दिया "मै सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वे कमलवन मे विचरण करना छोडकर पत जी की जिह्वा पर विराजे।"

आधुनिक युग की मीरा महीयसी महादेवी की कर्मभूमि के साथ–साथ जन्म स्थली भी प्रयाग ही है। महादेवी जी ने उच्च विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त की। विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के समय से ही महात्मा गाधी के सपर्क मे आईं उनसे प्रभावित होकर हिन्दी के माध्यम से नारी शिक्षा प्रसार हेतु 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' महाविद्यालय की स्थापना की तथा चॉद मासिक पत्रिका के सम्पादन का भार सम्भाला। चॉद के अतिरिक्त 'महिला' और साहित्यकार का सफल सपादन किया। साहित्यिक एव रचनात्मक अन्तर्भावो से ओत प्रोत होकर 1944 मे साहित्यकार ससद की स्थापना की और साहित्यकार ससद के तत्वाधान मे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन का आयोजन किया।

सख्या की दृष्टि से महादेवी जी की काव्य कृतिया ज्यादा नहीं है किन्तु साहित्यिक मूल्य की दृष्टि से उनका विशिष्ट महत्व है। महादेवी का काव्य रचनाकाल 1924 से 1942 तक फैला हुआ है। महादेवी जी प्रथम प्रकाशित कृति नीहार है जिसका प्रकाशन 1930 मे हुआ। महादेवी जी के इस सग्रह मे अध्यात्म की आकुल अभिव्यक्ति है और एक विदग्ध ह्वदय की करूणा है। नीहार के पश्चात् महादेवी वर्मा के काव्य सग्रह 'रश्मि' (1932), नीरजा (1935), साध्यगीत (1936), यामा (1940) दीपशिखा (1942) प्रकाशित हुए।

महादेवी जी जिस प्रकार श्रेष्ठ कवियत्री थी उसी प्रकार श्रेष्ठ गद्य लेखक। महादेवी का गद्य किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है। सस्कृति, देश, भाषा, साहित्य, समाज–नारी, जीवन, राष्ट्रीयता, इतिहास, सब कुछ तो नापा है महादेवी जी की लेखनी ने। ऐसे कोई भी विषय नही जिस पर महादेवी की दृष्टि न पडी हो, उस पर उनकी कलम न चली हो।

अतीत के चलचित्र, श्रृखला की कडिया, क्षणदा, शीर्षक गद्य कृतियो का सृजन किया। महादेवी जी ने अनेक साहित्यिक निबन्धो की रचना की। साहित्यिक लेखो मे बुधत्व, भारतीय सस्कृति, कला, साहित्य, साहित्यकार, सम्पादक, आधुनिक लेखक, अभिनय कला, राष्ट्र भाषा, विज्ञान विषयक मीमासाए पूर्ण रूपेण मुखरित हुई हैं।

महादेवी जी का गद्य एव पद्य साहित्य समाज के वर्तमान रूप से जुडा हुआ है। उनकी साहित्य साधना अपने आप मे एक महान इतिहास एव यथार्थ है।

इस समय इलाहाबाद के साहित्यिक वातावरण का एक केन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय था जहॉ सेवारत अनेक विद्वान साहित्य साधना मे रत थे। विश्वविद्यालय से जुडे डा वर्मा और बच्चन ने महत्वपूर्ण साहित्य का सृजन किया डा रामकुमार वर्मा का काव्य ससारें अत्यन्त विस्तृत है। सर्वप्रथम 1922 मे 'वीर हम्मीर' लिखा तथा 1927 मे चित्तौड की चिता नामक खण्ड काव्य लिखा। उनके साहित्य के विकास का चरण 1929 से आरम्भ हुआ। अजलि (1929), अभिशाप (1930), रूपराशि (1931), निशीथ

(1932), चित्ररेखा (1935), चन्द्रकिरण (1937), सकेत (1939), आकाश गगा (1949), सग्रह 1950 से पूर्व प्रकाशित हुए।

रामकुमार वर्मा ने जिस काव्य का सृजन किया उसे आधुनिक युग के श्रेष्ठ काव्य मे माना जाता है फिर भी साहित्यकार समाज उन्हे आधुनिक एकाकी का जनक और श्रेष्ठ नाटककार मानता है। कालक्रम की दृष्टि से उनका प्रथम एकाकी 'बादल की मृत्यु' था जो सन् 1930 मे लिखा गया। 'दस मिनट' (1931), नहीं का रहस्य (1933), 'एक्ट्रेस' (1934), अन्य प्रारम्भिक एकाकी है। 1935 मे 'पृथ्वीराज की आखे' एकाकी सकलन प्रकाशित हुआ जिसमे 'पृथ्वीराज की आखे', 'चपक', 'नहीं का रहस्य', 'बादल की मृत्यु', 'दस मिनट' एकाकी सकलित किए गये।

1941 मे 'रेशमी टाई' एकाकी सकलन प्रकाशित हुआ जिसमे 'परीक्षा', 'रूप की बीमारी', '18 जुलाई की शाम', 'एक तोले अफीम की कीमत' और 'रेशमी टाई' एकाकी सकलित है। 1942 मे उनका अन्य सकलन 'चारूमित्रा' सकलन प्रकाशित हुआ जिसमे 'चारूमित्रा', 'उत्सर्ग', 'रजनी की रात', और 'अधकार' शीर्षक एकाकी सकलित है।

1945 मे वर्मा जी का कालजयी नाटक 'शिवाजी' प्रकाशित हुआ। शिवाजी जैसे महान नायक पर नाटक लिखने के पीछे रामकुमार वर्मा का उद्देश्य था कि विद्यार्थियो मे उनके समान आदर्श के भाव उत्पन्न हो। डॉ रामकुमार वर्मा ने स्वय लिखा है "शिवाजी नाटक की रचना विद्यार्थियो के भाव क्षेत्र को अधिक विस्तृत और परिष्कृत करने के दृष्टिकोण से की गई है।"

भारतीय आजादी की वेला मे उनका 'सप्त किरण' एकाकी सकलन प्रकाशित हुआ जिसमे सात अलग–अलग दृष्टिकोण से लिखे गये एकाकी, राजरानी सीता, औरगजेब की आखिरी रात, पुरूस्कार, कलाकार का सत्य, फेल्ट हैल्ट, छोटी सी बात और आखो का आकाश सकलित है।

1949 मे कौमुदी महोत्सव ऐतिहासिक नाटक प्रकाशित हुआ जो चन्द्रगुप्त मौर्य के उज्ज्वल पक्ष को उजागर करता है। 1950 मे रम्यरास एकाकी सकलन

प्रकाशित हुआ जिसमे साहित्यिक एव सास्कृतिक एकाकी सकलित है। इसी अवधि मे दो एकाकी और प्रकाशित हुए– रूप रग और ध्रुवतारिका।

रामकुमार वर्मा के काव्य–एकाकी नाटक के अतिरिक्त 20वीं शताब्दी के तीसरे एव चौथे दसक मे शोध ग्रन्थ, आलोचनात्मक ग्रन्थ सस्मरण प्रकाशित हुए। कबीर का रहस्यवाद, सन्त कबीर, साहित्य समालोचना, हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन, विचार दर्शन, आलोचना समुच्य ग्रन्थ प्रकाशित हुए।

रामकुमार वर्मा के सम्पादन मे भी अनेक ग्रन्थो का प्रकाशन हुआ। लेखन एव सम्पादन के साथ–साथ साहित्यिक गोष्ठियो, सम्मेलनो मे निरन्तर सम्मिलित होते रहते थे। सरस्वती, चॉद, मर्यादा, आदि पत्रिकाओ मे उनकी लेखनी निरन्तर चलती रही।

राम कुमार वर्मा के साथ विश्वविद्यालय मे हरिवश राय बच्चन दूसरे महत्वपूर्ण साहित्यकार थे। कवि बच्चन का प्रारम्भिक जीवन कष्टो, अभावो मे बीता किन्तु वह निरन्तर साहित्य साधना मे तल्लीन रहे। उनकी प्रथम प्रकाशित कृति 'तेराहार' है जो 1932 मे प्रकाशित हुई। 1935 मे उनकी काल जयी कृति 'मधुशाला' का प्रकाशन हुआ जिससे बच्चन की श्रेष्ठ कवियो मे गणना होने लगी। बच्चन का यह सग्रह अत्यत लोकप्रिय हुआ। उन्होने इसकी भूमिका मे स्वय लिखा है "शुरू से लेकर आज तक 'मधुशाला' को बुरा कहने वालो और उसका उपहास करने वालो, उसका अनुकरण करने वालो और उसकी उपेक्षा करने वालो की कमी नहीं रही, पर उस पर झूमने वाले बहुत रहे है।"

1936 मे 'मधुबाला' सग्रह प्रकाशित हुआ। मधुशाला मे जो कमी रह गई थी वह इसमे पूरी हो गई। इसमे उस समय की कविताए है जब वह कठिनतम् सघर्ष के दौर से गुजर रहे थे। यह नारी के भोग्या रूप के साथ – साथ उस उज्ज्वल रूप को प्रतिष्ठित करती है जो ससार के कटु यथार्थ से सत्रप्त हैं।

1937 मे मधुकलश सग्रह प्रकाशित हुआ जिसमे उन्होने जीवन के कटु यथार्थ को प्रस्तुत किया। 1938 मे 'निशा निमत्रण' प्रकाशित हुआ जो उनके महाशोक

का विलगन है। पत्नी श्यामा की मृत्यु का शोक और उससे उत्पन्न निराशा की अभिव्यक्ति निशा निमत्रण मे दिखाई देती है।

1939 मे एकात सगीत प्रकाशित हुआ निशा निमत्रण एव एकात सगीत दोनो एक ही समय लिखे गये इसलिए एकात सगीत निशा निमत्रण की अगली कडी ही प्रतीत होती है। 1943 मे काव्य यात्रा का तीसरा मोड आया जब 'आकुल अतर' काव्य सग्रह प्रकाशित हुआ। इस सग्रह मे वह प्रकाश की एक किरण खोजते हैं "मेरी कृतियो के रचना क्रम मे 'आकुल अतर' एकात सगीत और सतरगिनी के बीच आता है। निशा निमत्रण मे जिस अवशाद की छाया उतरी थी, उसके अन्तिम और सघनतम रूप को देखने के लिए मैं एकात सगीत सुनता हुआ आकुल अतर की गुहा मे बैठ गया। जहा अधकार सघनतम है वहीं प्रकाश की पहली किरण है।

1945 मे उनका सप्तरगी काव्य 'सप्त किरण' प्रकाशित हुआ। इसमे कवि अवसाद से उबर चुका है। 1964 मे हलाहल प्रकाशित हुआ। इसी समय मुक्त छद मे लिखी लम्बी कविता 'बगाल का काल' प्रकाशित हुई जिसमे बच्चन ने बगाल मे पडे अकाल का कारूणिक दृश्य प्रस्तुत किया है। 1948 मे महात्मा गाधी की हत्या से कविमन अत्यधिक दु खी हो गया। आघात मन से खादी के फूल सग्रह लिखा। इसके सह लेखक सुमित्रा नदन पत हैं। सग्रह की कविताओ को रा ीयतावादी एव गाधीवादी दृष्टिकोण से देखा जाए जो यह कविताए उस युग का समग्र चित्र प्रस्तुत करती हैं। इसी समय गाधी जी को ही समर्पित एक अन्य कृति 'सूतकी माला' भी प्रकाशित हुई। 1950 मे उन्होने 'प्रणय रागिनी' से पूर्ण कृति 'मिलन यामिनी' प्रस्तुत की।

बच्चन का कृतित्व विराट था काव्य के साथ साथ आलोचना, निबध, कहानिया, आत्मकथा (तीन खण्ड) लिखीं तथा अनेक महत्वपूर्ण कृतियो का अनुवाद किया।

इस अवधि मे प्रयाग मे जो साहित्य रचा गया उसे जन–जन तक पहुँचाया यहाँ से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिकाओ ने। पत्र–पत्रिकाओ के प्रकाशन का श्री गणेश किया प बालकृष्ण भट्ट ने। 1877 मे उन्होने हिन्दी प्रदीप निकाला।

1900 ई मे इडियन प्रेस से 'सरस्वती' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ मे इस पत्रिका के सम्पादक नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य थे। प्रथम सम्पादक मण्डल मे बाबू राधाकृष्ण दास, बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री, बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर प किशोरी लाल गोस्वामी, और बाबू श्याम सुन्दर दास थे। 1903 मे महावीर प्रसाद इसके सम्पादक हुए। महावीर प्रसाद द्विवेदी के सपादकत्व मे पत्रिका ने साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्रिका उद्देश्य बडा व्यापक था "इस पत्रिका मे कौन से विषय रहेगे यह केवल इसी बात से अनुमान करना चाहिए कि इसका नाम सरस्वती है। इसमे गद्य–पद्य, काव्य, नाटक, उपन्यास, चपू, इतिहास, शिल्प, कला, कौशल, आदि साहित्य के यावत विषयो का समावेश रहेगा और आगत ग्रन्थो की यथोचित समालोचना की जाएगी।

सरस्वती ने हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए एक आन्दोलन खडा कर दिया। निराला, पत, महादेवी, रामकुमार वर्मा, बच्चन आदि लब्धप्रतिष्ठित लेखको एव कवियो की रचनाए सरस्वती मे छपने लगीं। निराला, पत, महादेवी की रचनाओ के साथ अन्य रचनाकारो की रचनाओ को भी सरस्वती ने स्थान दिया। कवियो की कविताओ के साथ–साथ इलाचद जोशी जैसे कहानीकारो की कहानिया नियमित प्रकाशित होती।

साहित्य के विकास के साथ–साथ भाषा के परिस्कार करने मे भी सरस्वती ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक खडी बोली की कविता को सरस्वती ने ही प्रतिष्ठित किया। हिन्दी को उसके उचित स्थान पर प्रतिष्ठित कराने और उसे भारत की सार्वदेशिक भाषा बनाने के लिए सरस्वती ने सदैव प्रयत्न किया। यही कारण है कि तत्कालीन समय मे साहित्यिक जगत की सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका बन गई थी।

1903 मे प्रयाग से 'स्त्रीदर्पणी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसकी सम्पादक श्रीमती रामेश्वरी नेहरू थी। इसमे विविध विषयो के साथ साथ साहित्यिक रचनाए भी होती। 'सामयिक साहित्य चर्चा' शीर्षक एक स्थायी स्तम्भ भी इस पत्रिका मे हुआ करता था।

1910 मे 'मर्यादा' का प्रकाशन अभ्युदय प्रेस से होना प्रारम्भ हुआ। मर्यादा प मदन मोहन मालवीय के सदप्रयासो का प्रतिफल थी। प्रारम्भ मे वह इसके स्वय सपादक रहे, उनके बाद पुरूषोत्तमदास टण्डन और कृष्णकात मालवीय ने इसके सपादन का भार सम्भाला।

पत्रिका मे कहानी, कविता के साथ अन्य भाषाओ से अनुदित साहित्य प्रकाशित होता। इसके 'साहित्य समालोचना' स्तम्भ मे साहित्यिक पत्रिकाओ के अको का मूल्याकन किया जाता। इस स्तम्भ मे न केवल हिन्दी बल्कि, अग्रेजी, मराठी, आदि अन्य भाषाओ की पत्रिकाओ की भी समीक्षा की जाती।

मैथिली शरण गुप्त, अयोध्यासिह उपाध्याय की रचनाए नियमित प्रकाशित होती। यह उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका थी जो ज्यादा दिनो तक प्रकाशित नहीं हुई 1920 मे ज्ञानमण्डल वाराणसी को सौप दी गई जहा जाकर यह पत्रिका बद हो गई।

1913 मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'सम्मेलन' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। यह विविध विषयो वाली पत्रिका है किन्तु इसका उद्देश्य साहित्यिक विकास ही था। इसमे सरस्वती की तरह कहानी या कविताए तो नहीं होती थी किन्तु साहित्यिक विषयो पर महत्वपूर्ण लेख हुआ करते थे।

1922 मे सरस्वती के समान उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका 'चॉद' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके प्रथम सपादक एव प्रकाशक रामरिख सहगल थे। यह महिलाओ की प्रमुख पत्रिका थी किन्तु शीघ्र ही यह साहित्यिक जगत की महत्वपूर्ण पत्रिका बन गई। श्रीमती सरला वाई नायक, परमानद, कु विद्यावती सेठ, विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक, जीए सुन्दरम, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुंप्त, रामचरित उपाध्याय, रामकुमार वर्मा आदि लेखक इसके नियमित लेखक थे।

इसके प्रथम अक मे ही महादेवी वर्मा की 'चन्द्रोदय' रामचरित उपाध्याय की ससार का सिरमौर' सुभद्रा कुमारी चौहान की 'समर्पण' कविता प्रकाशित हुई। 1925 मे अन्य पत्रिकाओ को पीछे छोडते हुए प्रेमचन्द्र का उपन्यास 'निर्मला' को धारावाहिक रूप मे प्रकाशित किया। इसके पश्चात तो निराला एव महादेवी की रचनाए नियमित 'चॉद' के अको मे प्रकाशित हुई।

1928 मे 'चॉद' का फासी अक निकला जिसे ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया। इससे पत्रिका को आघात तो अवश्य लगा किन्तु यह बद नहीं हुई और अक उत्साह से निकलते रहे। 'चॉद' ने सदैव समाज की कुरीतियो को दूर करने का प्रयास किया।

1931 मे हिन्दुस्तानी एकेडमी ने 'हिन्दुस्तानी त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। इसके सम्पादक मण्डल मे प्रयाग की विद्वत् मण्डली सम्मिलित थी। रामचन्द्र टण्डन, डा ताराचन्द, बेनी प्रसाद, डा राम प्रकाश त्रिपाठी, डा धीरेन्द्र वर्मा इसके सम्पादक मण्डल के सदस्य थे। हिन्दुस्तानी एकेडमी के उद्देश्यो को पूरा करने का यह माध्यम बन गई। साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की और उच्च्य कोटि के शोध पत्रो को पत्रिका ने प्रकाशित किया।

साहित्य के विकास मे जितनी महत्वपूर्ण भूमिका निराला, पत, महादेवी जैसे साहित्यकारो ने निभाई उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका सरस्वती, चॉद, हिन्दुस्तानी जैसी पत्रिकाओ ने निभाई। साहित्य की प्रत्येक विधा को इन पत्रिकाओ ने प्रकाशित किया और उसे जन जन तक पहॅुचाया।

इस युग मे जो साहित्यकार हुए वह समाज के दु ख सु ख से पूर्णत परिचित थे, उन्होने यह महसूस किया कि जिस कार्य को एक व्यक्ति कर सकता है उस कार्य को कुछ व्यक्तिं मिलकर करे तो कार्य उत्तम और शीघ्र किया जा सकता है। इलाहाबाद मे इस समय देश के प्रमुख साहित्यकार उपस्थित हो चुके थे और इलाहाबाद साहित्यिक गतिविधियो का केन्द्र बन गया था। मदन मोहन मालवीय, श्याम सुन्दर दास, बाबू पुरूषोत्तम दास टण्डन, महावीर प्रसाद द्विवेदी इलाहाबाद को कर्मभूमि बना

चुके थे। हिन्दी प्रदीप, सरस्वती आदि पत्रिकाओ ने एक वातावरण का सृजन किया जिससे यहा अनेक साहित्यिक सस्थाओ की स्थापना हुई।

1910 मे प मदन मोहन मालवीय, के प्रयासो से 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। अपने जन्म के आरम्भ से हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास के लिए सम्मेलन ने प्रयत्न आरम्भ किए। अपने वार्षिक सम्मेलनो के माध्यम से समस्त देश के कवि एव साहित्यकारो को एक मच पर एकत्र किया। इसके तृतीय सम्मेलन के अध्यक्ष बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' को बनाया गया जिन्होने हिन्दी भाषा एव साहित्य के विकास पर अत्यधिक बल दिया। छठा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग मे हुआ जिसके सभापति श्याम सुन्दरदास ने राष्ट्र निर्माण के लिए साहित्य निर्माण आवश्यक बताया।

सम्मेलन के उद्देश्यो को पूरा करने के लिए सस्था ने पृथक से साहित्य विभाग स्थापित किया। साहित्य विभाग ने भारतीय साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेक ग्रथो का प्रकाशन किया। आधुनिक कविमाला के तहत अनेक उल्लेखनीय ग्रथ प्रकाशित किए। महादेवी वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, आदि विद्वानो के महत्वपूर्ण ग्रथ प्रकाशित किए हैं। सुमित्रानदन पत की कालजयी कृति हार (उपन्यास) को भी साहित्य विभाग ने प्रकाशित किया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य की महत्वपूर्ण सेवा करने वालो को पुरस्कृत एव सम्मानित किया। इसके लिए सम्मेलन ने मगला प्रसाद पारितोषिक तथा मानद उपाधि 'साहित्यवाचस्पति' देना आरम्भ किया। इसे प्राप्त करने वालो मे मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाधी, अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध, ग्रिर्यसन, श्याम सुन्दरदास महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, राहुल साकृत्यायन आदि प्रमुख है।

1927 मे प्रयाग मे दूसरी महत्वपूर्ण सस्था हिन्दुस्तानी एकेडमी की स्थापना हुई। इसके निर्माण मे यज्ञ नारायण उपाध्याय, तत्कालीन प्रान्तीय शिक्षा मत्री राय राजेश्वर वली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका उद्देश्य हिन्दी एव उर्दू दोनो साहित्य की उन्नति करना रहा है।

इसका प्रथम अध्यक्ष सर तेज बहादुर सप्रू, और प्रथम सचिव डा ताराचद को बनाया गया। दोनो ही विद्वानो तथा अन्य परवर्ती विद्वानो ने साहित्य के विकास के लिए व्याख्यान मालाओ, प्रकाशन, आयोजन और सम्मेलनो का सहारा लिया। व्याख्यान मालाओ मे देश के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानो को आमत्रित किया गया। मौलाना अब्दुल युसुफ अली, गौरी शकर हीराचद ओझा, डॉ जाकिर हुसैन, पद्मसिह शर्मा, राहुल साकृत्यायन, बाबूराम सक्सेना, वासुदेव शरण अग्रवाल, फादर कामिल बुल्के, प्रोफेसर देवेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ राजेन्द्र प्रसाद के व्याख्यान उल्लेखनीय है।

प्रकाशनो के माध्यम से एकेडमी ने साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काव्य, नाटक, साहित्यिक समालोचना, जीवनी, पत्र साहित्य, भाषा शास्त्र, एव इतिहास सम्बन्धी विषयो को प्रकाशित किया। 1931 से हिन्दुस्तानी नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन भी आरम्भ किया।,

1930 मे पद्मकात मालवीय के प्रयासो से 'सुकवि समज' की स्थापना हुई। इसमे इलाहाबाद विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय से बाहर दोनो जगहो के व्यक्तियो को सम्मिलित किया गया। महादेवी वर्मा, पद्मकात मालवीय, और रामकुमार वर्मा को इसका सचिव बनाया गया। इसका कार्यालय भी डा रामकुमार वर्मा का ही घर था। सुकवि समाज की पाक्षिक बैठके होती जिनमे साहित्य समाज एव सस्कृत पर नियमित चर्चाए होती। इन गोष्ठियो के माध्यम से युवा कवियो को प्रोत्साहन मिला और वह वरिष्ठ कवियो के सम्पर्क मे आए।

1935 मे साहित्यिक आदर्शो से ओतप्रोत होकर सत्यजीवन वर्मा ने 'हिन्दी लेखक सघ' की स्थापना की। सामयिक साहित्य की श्री वृद्धि करना, लेखको एव कवियो के हितो की रक्षा करना, हिन्दी लेखक सघ ने अपना उद्देश्य बनाया। सत्य जीवन वर्मा ने अनेक लेखको एव साहित्यकारो को अपने पत्र के माध्यम से जोडा। लेखक सघ ने 'लेखक' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जिसमे सगठन के सदस्यो के साथ–साथ अन्य वरिष्ठ लेखको की रचनाए हुआ करती थीं।

1942 मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने 'भारतीय हिन्दी परिषद्' की स्थापना की। 5 अप्रैल 1942 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे इसका प्रथम अधिवेशन हुआ। सस्था ने भाषा, साहित्य, तथा सस्कृति के अध्ययन तथा खोज को प्रोत्साहित किया। परिषद् ने हिन्दी साहित्य के सकीर्ण वातावरण से ऊपर उठकर भाषा तथा साहित्य से सम्बद्ध मानवीय सम्पर्क सामाजिक चेतना तथा राष्ट्रीय मनोवेश के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भाषा, साहित्य, तथा सस्कृति की कार्यशक्ति को समृद्ध करने वालो साधको को एक मच प्रदान किया।

साहित्यिक उन्नयन के लिए पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया। विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम मे हिन्दी साहित्य को सम्मानित स्थान प्राप्त हो इसके लिए सस्था सदैव प्रयत्नशील रही है। भारतीय हिन्दी परिषद् ने अनुशीलन नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जिसने हिन्दी भाषा, साहित्य एव सस्कृति के उन्नयन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1945 मे तथाकथित प्रगतिशील लेखक सघ के विरोध मे यहा 'परिमल' सस्था की स्थापना हुई। विशन नारायण कपूर, गिरिधर गोपाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, केशवचन्द्र वर्मा, लक्ष्मीकात वर्मा इसके सस्थापक सदस्य थे।

इसकी गोष्ठियो मे ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये जिससे सम्पूर्ण हिन्दी लेखन प्रभावित हुआ। कई गोष्ठियो मे ऐतिहासिक महत्व की रचनाए पढी गई। इस सस्था के माध्यम से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धर्मवीर भारती, रघुवश, रामस्वरूप चतुर्वेदी, जगदीश गुप्त, गिरिधिर गोपाल, लक्ष्मीकात वर्मा, विजय देवनारायण शाही, केशवचन्द्र वर्मा, मलयज, विपिन अग्रवाल, उमाकात मालवीय, श्रीराम वर्मा आदि दो पीढियो के रचनाकर सामने आए।

1946 मे महादेवी वर्मा ने 'साहित्यकार ससद' का निर्माण किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', माखन लाल चतुर्वेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, इलाचन्द्र जोशी, सियाशरण गुप्त, रायकृष्णदास, गुलाबराय, एव भदन्त आनन्द

कौशल्यायन आदि इसके सस्थापक सदस्य थे। साहित्यकार ससद का प्रमुख उद्देश्य था कि यहॉ साहित्यकार आए और यहॉ रूककर साहित्य सृजन करे तथा देश मे हो रही साहित्यिक गतिविधियो पर नजर रखे। महाप्राण निराला स्वय साहित्यकार ससद मे लम्बे समय तक रहे।

साहित्यकार ससद 'साहित्यकार' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी करती थी जिसका सपादन इलाचन्द्र जोशी तथा महादेवी वर्मा सयुक्त रूप से करते थे। साहित्यकार ससद ने साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा अनेक महत्वपूर्ण कृतियो का प्रकाशन किया।

सदर्भ और प्रयोजनशीलता के कारण साहित्य रचना मे विकास होता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जिस सदर्भ एव प्रयोजनशीलता का प्रारम्भ हुआ उसके फलस्वरूप 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध मे महत्वपूर्ण साहित्य रचा गया। इलाहाबाद मे ऐसे साहित्यिक वातावरण का निर्माण हुआ जिसमे निराला, पत, महादेवी के साथ ही अन्य अनेक साहित्यकार हुए। रामनरेश त्रिपाठी, भगवती चरण वर्मा, धर्मवीर भारती, उपेन्द्रनाथ अश्क, इलाचन्द्र जोशी, जगदीश गुप्त, नरेश मेहता, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, लक्ष्मीकात वर्मा, विजय देव नारायण साही, केशवचन्द्र वर्मा आदि अन्य सहित्यकार हुए। इन्होने प्रयाग की तपोभूमि मे साहित्य साधना की।

साहित्यकारो ने साहित्य साधना की, साहित्यिक सस्थाओ ने उन्हे एक मच प्रदान किया और पत्र-पत्रिकाओ ने उनके साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया। अत निर्विवाद रूप से 1911 मे दिल्ली देश की राजनीतिक राजधानी वन गई और इलाहाबाद इस अवधि मे साहित्यिक राजधानी के रूप मे प्रतिष्ठित हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

साक्षात्कार

1 प्रोफेसर अजब सिह

2 श्री ओकारनाथ त्रिपाठी

3 श्री प्रभात शास्त्री

4 श्री प्रद्युम्न तिवारी 'करूणेश'

5 डा रामकमल राय

6 श्री राधिका प्रसाद श्रीवास्तव

7 डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी

8 डॉ रघुवश

9 श्री रमेश जैमिनि

10 प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिह

11 डॉ जगदीश गुप्त

12 श्री महेन्द्र राजा जैन

13 डॉ सुरेश चन्द्र द्विवेदी

14 श्री मत्स्येन्द्र नाथ शुक्ल

15 श्री हरिमोहन मालवीय

16 श्री श्याम कृष्ण पाण्डेय

17 श्री नीलाभ अश्क

18 श्री केशव चन्द्र वर्मा

19 श्री लक्ष्मीकात वर्मा

20 श्रीमती कचन लता साही

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अरोडा ललिता , बच्चन एक अध्ययन, 1992

2 अवस्थी ललित मोहन , आज के कवि, 1954

3 अश्क उपेन्द्रनाथ , सितारो के खेल, 1974 (पाचवा सस्करण)

4 अश्क उपेन्द्रनाथ , गिरती दीवारे, 1946

5 अश्क उपेन्द्रनाथ , औरत की फितरत, 1933

6 अश्क उपेन्द्रनाथ , बरगद की बेटी 1936

7 अश्क उपेन्द्रनाथ , प्रात प्रदीप 1938

8 अश्क उपेन्द्रनाथ , अकुर 1945

9 आनन्द रवेल चन्द्र , हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार खण्ड I, 1978

10 कीर्तिलता , भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन और हिन्दी साहित्य, 1967

11 कुमार अजित , बच्चन रचनावली भाग 1, 2 एव 3, 1983

12 गुप्त जगदीश , परिमल स्मारिका, 1971

13 गुप्त जगदीश , नयी कविता, 1954

14 गुप्त जगदीश , कवितान्तर त्रयी–1 एव त्रयी 2 1973

15 गहलोत भुवनेश्वर सिह , इलाहाबाद वे दिन वे लोग, 2000

16 गुप्त कुलदीप चन्द्र , उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ अश्क, 1986

17 गुप्ता कमला , अश्क व्यक्तित्व और कृतित्व, 1984

18 चतुर्वेदी रामस्वरूप , हिन्दी गद्य विन्यास और विकास, 1998

19 जैन राजेन्द्र , प इलाचन्द्र जोशी के औपन्यासिक नायक का अन्तर्द्वन्द्व, 1988

20 जोशी शाति , सुमित्रा नदन पत , जीवन और साहित्य, खण्ड I, 1976

21 जोशी शाति , पत ग्रथावली, भाग 1, 2, 3, एव 5 1993

22 जोशी इलाचन्द्र , निर्वासित, 1946

23 जोशी इलाचन्द्र , आहुति, 1948

24 जोशी इलाचन्द्र , घृणामयी, 1929

25 जोशी इलाचन्द्र , जिप्सी, 1952

26 झारी कृष्णा देव , उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, 1959

27 तिवारी बलभद्र , इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास, 1958

28 दीक्षित सूर्यकात , निराला की आत्मकथा, 1970

29 नगेन्द्र , हिन्दी साहित्य का इतिहास, 1973

30 नगेन्द्र , भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका, 1955

31 नगेन्द्र , भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा, 1956

32 नगेन्द्र , भारतीय वाडगमय स 2015 (वि)

33 नगेन्द्र , भारतीय साहित्य, 1987

34 नगेन्द्र , भारतीय साहित्य कोश, 1981

35 नगेन्द्र , भारतीय साहित्य सस्कृति एव कला, 1972

36 नगेन्द्र , मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य खण्ड) 1965

37 नवल, नद किशोर, निराला रचनावली, भाग 1,2,3,4,5 एव 6, 1983

38 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , परिमल, स 1986 वि, 1929

39 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका (द्वितीय), 1937

40 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अनामिका (प्रथम) 1923

41 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , गीतिका, 1936

42 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , तुलसीदास, 1938

43 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , कुकुरमुत्ता, 1942

44 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अणिमा, 1943

45 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , बेला, 1943

46 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , नये पत्ते, 1946

47 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अर्चना, 1950

48 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अप्सरा, 1931

49 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , अलका, 1933

50 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , प्रभावती, 1936

51 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , निरूपमा, 1936

52 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , कुल्ली भाट, 1939

53 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , बिल्लेसुर बकरिहा, 1942

54 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , चोटी की पकड, 1946

55 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , काले कारनामे, 1950

56 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , लिली, 1933

57 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , सखी, 1935

58 निराला सूर्यकात त्रिपाठी , सुकुल की बीबी, 1941

59 पत सुमित्रा नदन , पल्लव, 1926

60 पत सुमित्रा नदन , वीणा, 1927

61 पत सुमित्रा नदन , ग्रन्थि, 1921

62 पत सुमित्रा नदन , गुजन, 1931

63 पत सुमित्रा नदन , युगवाणी, 1939

64 पत सुमित्रा नदन , ग्राम्या, 1940

65 पत सुमित्रा नदन , स्वर्ण किरण, 1947

66 पत सुमित्रा नदन , स्वर्ण धूलि, 1947

67 पत सुमित्रा नदन , मधुज्वाल, 1947

68 पत सुमित्रा नदन , युगपथ, 1949

69 पत सुमित्रा नदन , हार, 1960

70 पत सुमित्रा नदन , पाच कहानिया, 1936

71 पत सुमित्रा नदन , ज्योत्स्ना, 1934

72 पत सुमित्रा नदन , छाया, 1948

73 पत॰ सुमित्रा नदन , चौराहा, 1948

74 पत सुमित्रा नदन , करम पुरी की रानी, 1949

75 पत सुमित्रा नदन , शिल्प और दर्शन, 1961

76 पत सुमित्रा नदन , साठ वर्ष एक रेखाकन

77 पत सुमित्रा नदन , महादेवी अभिनन्दन ग्रन्थ, स 2021 (वि)

78 पाण्डेय सुधाकर , हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, खण्ड–6, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, एव 16 स 2030 (वि)

79 पाण्डेय विशम्भरनाथ , इलाहाबाद रेट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रोस्पेक्ट, 1955

80 पाण्डेय रामजीवन , सुमित्रा नदन पत , व्यक्तित्व एव कृतित्व 1982

81 पाण्डेय गगा प्रसाद , महीयसी महादेवी, 1969

82 पाण्डेय गगा प्रसाद , महाप्राण निराला, स 2006 (वि)

83 प्रसाद विश्वनाथ , प्रयाग का हिन्दी साहित्य, 1984

84 बच्चन हरिवश राय , क्या भूलूँ क्या याद करूँ, 1970

85 बच्चन हरिवश राय , नीड का निर्माण फिर, 1980 (चौथा सस्करण)

86 बच्चन हरिवश राय , बसेरे से दूर, 1977

87 बच्चन हरिवश राय , तेराहार, 1932

88 बच्चन हरिवश राय , मधुशाला, 1935

89 बच्चन हरिवश राय , मधुबाला, 1936

90 बच्चन हरिवश राय , मधुकलश, 1937

91 बच्चन हरिवश राय , निशा नियत्रण, 1939

92 बच्चन हरिवश राय , एकात सगीत, 1939

93 बच्चन हरिवश राय , आकुर अतल 1943

94 बच्चन हरिवश राय , सत रगिनी, 1945

95 बच्चन हरिवश राय , हलाहल, 1946

96 बच्चन हरिवश राय , बगाल का काल, 1946

97 बच्चन हरिवश राय , खादी के फूल, 1948

98 बच्चन हरिवश राय , सूत की माला, 1948

99 बच्चन हरिवश राय , मिलन यामिनी, 1950

100 बच्चन हरिवश राय , कवियो मे सोम्य सत सुमित्रा नदन पत, 1960

101 बादिव डेकर चन्द्रकात , धर्मवीर भारती ग्रथावली, खण्ड–1 , 2, 3, 4 एव 6, 1998

102 भटनागर राम रतन , राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नलिज्म, 1947

103 मजु वहाल , हिन्दी गद्य साहित्य मे राजनैतिक तत्व (1850–1950) शोध प्रबन्घ (इ वि वि), 1971

104 मदान इन्द्रनाथ , उपन्यासकार अश्क, 1960

105 मिश्र हरिश्चन्द्र , साहित्य इतिहास दर्शन की दृष्टि से ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया का अध्ययन शोध प्रबन्ध (इ वि वि), 1971

106 मिश्र हरिश्चन्द्र , सम्मेलन पुस्तिका (सपा), 1997

107 मिश्र मिथिलेश कुमारी , नाटककार राम कुमार वर्मा, 1985

108 मिश्र कृष्ण विहारी , हिन्दी पत्रकारिता, 1994

109 मेहता नरेश , हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, खण्ड 1, 1996

110 मेहता नरेश , डूबते मस्तूल, 1954

111 मेहता नरेश , वन पाखी सुनो, 1957

112 मेहता नरेश , खण्डित यात्राए, 1962

113 मेहता नरेश , बोलने दो चीड को, 1962

114 राजपाल हुकुम चन्द्र , धर्मवीर भारती साहित्य के विविध रग, 1980

115 राज दशरथ , कविवर डा राम कुमार वर्मा और उनका काव्य, 1966

116 वर्मा महादेवी , नीहार, 1930

117 वर्मा महादेवी , नीरजा, 1935

118 वर्मा महादेवी , साध्यगीत, 1936

119 वर्मा महादेवी , यामा, 1940

120 वर्मा•महादेवी , दीपशिखा, 1942

121 वर्मा महादेवी , अतीत के चलचित्र, स 2068 (वि)

122 वर्मा महादेवी , क्षणदा, स 2013 (वि)

123 वर्मा महादेवी , रश्मि, 1951

124 वर्मा महादेवी , पथ के साथी, स 2013 (वि)

125 वर्मा महादेवी , श्रृखला की कडिया, 1942

126 वर्मा महादेवी , स्मृति की रेखाए, स 2000 (वि)

127 वर्मा राम कुमार , अजलि, 1929

128 वर्मा राम कुमार , अभिशाप, 1930

129 वर्मा राम कुमार , रूपराशि, 1931

130 वर्मा राम कुमार , निशीथ, 1932

131 वर्मा राम कुमार , चित्ररेखा, 1935

132 वर्मा राम कुमार , चन्द्रकिरण, 1937

133 वर्मा राम कुमार , सकेत, 1939

134 वर्मा राम कुमार , आकाश गगा, 1949

135 वर्मा राम कुमार , रेशमी टाई, 1941

136 वर्मा राम कुमार , पृथ्वीराज की आखे, 1935

137 वर्मा राम कुमार , चारुमित्रा, 1942

138 वर्मा राम कुमार , शिवाजी, 1945

139 वर्मा राम कुमार , कौमुदी महोत्सव, 1949

140 वर्मा राम कुमार , रम्यरास, 1950

141 वर्मा राम कुमार , हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, 1958 (चतुर्थ स)

142 वाजपेयी अम्बिका प्रसाद , समाचार पत्रो का इतिहास, स 2010 (वि)

143 वास्कर पुष्पा , धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और साहित्य कार, 1987

144 विष्ट शेरसिह , सुमित्रा नदन पत के साहित्य का ध्वनिवादी अध्ययन, 1990

145 विद्यालकार चन्द्र गुप्त , आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, हरिवश राय बच्चन, 1960

146 वैदिक वैद प्रताप , हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, भाग 1, 1997

147 सिन्हा सावित्री , हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास भाग 6 (सपा) स 2029 (वि)

148 सुल्ताना किश्वर , पत काव्य मे कला शिल्प और सौन्दर्य, 1985

149 सीतारमैया पी वी , द हिस्ट्री आफ द इण्डियन नेशनल काग्रेश, वोल् 1 (1885–1935), 1946

150 शरद औकार , महादेवी साहित्य, खण्ड 1, 1969

151 शर्मा राम विलास , निराला की साहित्य साधना, खण्ड 1, 1969

152 शर्मा वेदव्रत , निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, 1977

153 शर्मा चन्द्रिका प्रसाद , राम कुमार वर्मा एकाकी रचनावली, भाग 1, 1962

154 शर्मा जगदीश , निराला काव्य सर्जना और व्यक्तित्व

153 शर्मा प्रभाकर , नरेश मेहता का काव्य विमर्श और मूल्याकन, 1979

156 शुक्ल रामचन्द्र , हिन्दी साहित्य का इतिहास, 2049 (वि) (24वा सस्करण)

157 श्रीवास्तव राधेकृष्ण , आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, रामकुमार वर्मा, 1975

158 श्रीवास्तव सलिग राम , प्रयाग प्रदीप, 1937

159 त्रिपाठी राम नरेश , स्वप्न, 1929

160 त्रिपाठी राम नरेश , तीस दिन मालवीय जी के साथ, 1942

161 त्रिपाठी राम नरेश , आधुनिक हिन्दी कवि, शक स 1884

162 त्रिपाठी राम नरेश , मिलन, 1917

163 त्रिपाठी राम नरेश , पथिक, 1928

अभिलेखीय सामग्री

1 प मदन मोहन मालवीय का महावीर प्रसाद द्विवेदी को पत्र, दिनाक 26 02 1916 पी के मालवीय सग्रह राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

2 गोविन्द वल्लभ पत का देवी दत्त शुक्ल को पत्र, दिनाक 16 10 1937, उ प्र राज्य अभिलेखागार, लखनऊ

3 जवाहर लाल नेहरू का ए के आजाद को पत्र, दिनाक 28 05 1952, नेहरू मेमोरियल पुस्तकालय, तीनमूर्ति नई दिल्ली

4 पी के मालवीय का हरगोविद सिह को पत्र, इलाहाबाद, दिनाक 10 09 1953, राष्ट्रीय अभिलेखागार

5 फाइल सख्या XX/30 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

6 फाइल सख्या XX/36 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

7 फाइल सख्या XX/60 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

8 फाइल सख्या XX/89 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

9 फाइल सख्या XX/102 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

10 फाइल सख्या XX/367 , पी के मालवीय सग्रह, राष्ट्रीय अभिलेखागार

11 गजेटियर आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेस, सन् 22, 1927

12 गजट आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेस जोइन्ट आफ यू पी न 3774, 8–100, डेटेड 15 10 1928

13 एब्सट्रेक्ट आफ द प्रोसीडिग्स आफ द लेजिस्लेटिव कोसिल फार द यूनाइटेड प्रोविन्सस आफ आगरा एण्ड अवध, मार्च 30, 1907

14 एब्सट्रेक्ट आफ द प्रोसीडिग्स आफ द लेजिस्लेटिव कौसिल फार द यूनाइटेड प्रोबिन्सेस, आफ आगरा एण्ड अवध, अप्रैल–7, 1908

15 प्रोसीडिग्स आफ इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौसिल वो ल LV फर 22, 1917

16 प्रोसीडिग्स आफ इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौसिल वोल LIX, मार्च 16, 1911

17 प्रोसीडिग्स आफ इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौसिल Vol L मार्च 1912

18 प्रोसीडिग्स आफ इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौसिल बोल LV फर 28, 1917

19 इम्पीरियल गजेटियर आफ यूपी इलाहाबाद Vol XXIII, 1911

पत्र-पत्रिकाएं एवं शोध पत्रिकाएं

1 द हिन्दुस्तान रिव्यू, 1905–1907

2 द इडियन रिव्यू, 1916–1919

3 एडवान्स, 1930–1931

4 अमृत बाजार पत्रिका, 1918, 1938, 1958

5 द हिन्दुस्तान टाइम्स, 1930–1937

6 द लीडर, 1914–1916, 1922, 1948–1950, 1960

7 न्यू इण्डिया, 1916–1929

8 नार्दन इण्डिया पत्रिका, 1961

9 आज, 1920–1946

10 अभ्युदय, 1907–1927

11 भारत जीवन, 1884–1907

12 दैनिक भारत मित्र, 1912–1921

13 हिन्दी नवजीवन, 1929–1931

14 साप्ताहिक भारत, 1961

15 सरस्वती, 1900–1950

16 अवला हितकारक, 1912

17 हिन्दी प्रदीप, 1880–1910

18 उत्तर प्रदेश, 1984

19 स्त्रीदर्पण, 1903–1915

20 मर्यादा, 1910–1920

21 सम्मेलन पत्रिका, 1913–1960

22 चाँद, 1922–1928, 1930–1933

23 आदर्श, 1922

24 प्रभा, 1920

25 माधुरी, 1923, 1938

26 सुधा, 1930, 1934

27 मतवाला, 1923

28 रूपाभ, 1939

29 इदु, 1910–1915

30 कमला, 1907–1916

31 गृहलक्ष्मी, 1911–1914

32 नवनीत, 1913–1915

33 नागरी प्रचारिणी पत्रिका, 1910–1919

34 प्रभा, 1913–1915

35 प्रताप 1914–1915

36 मनोरमा, 1912–1918

37 हिन्दी अनुशीलन, 1967–1998

38 हिन्दुस्तानी, 1931–1948